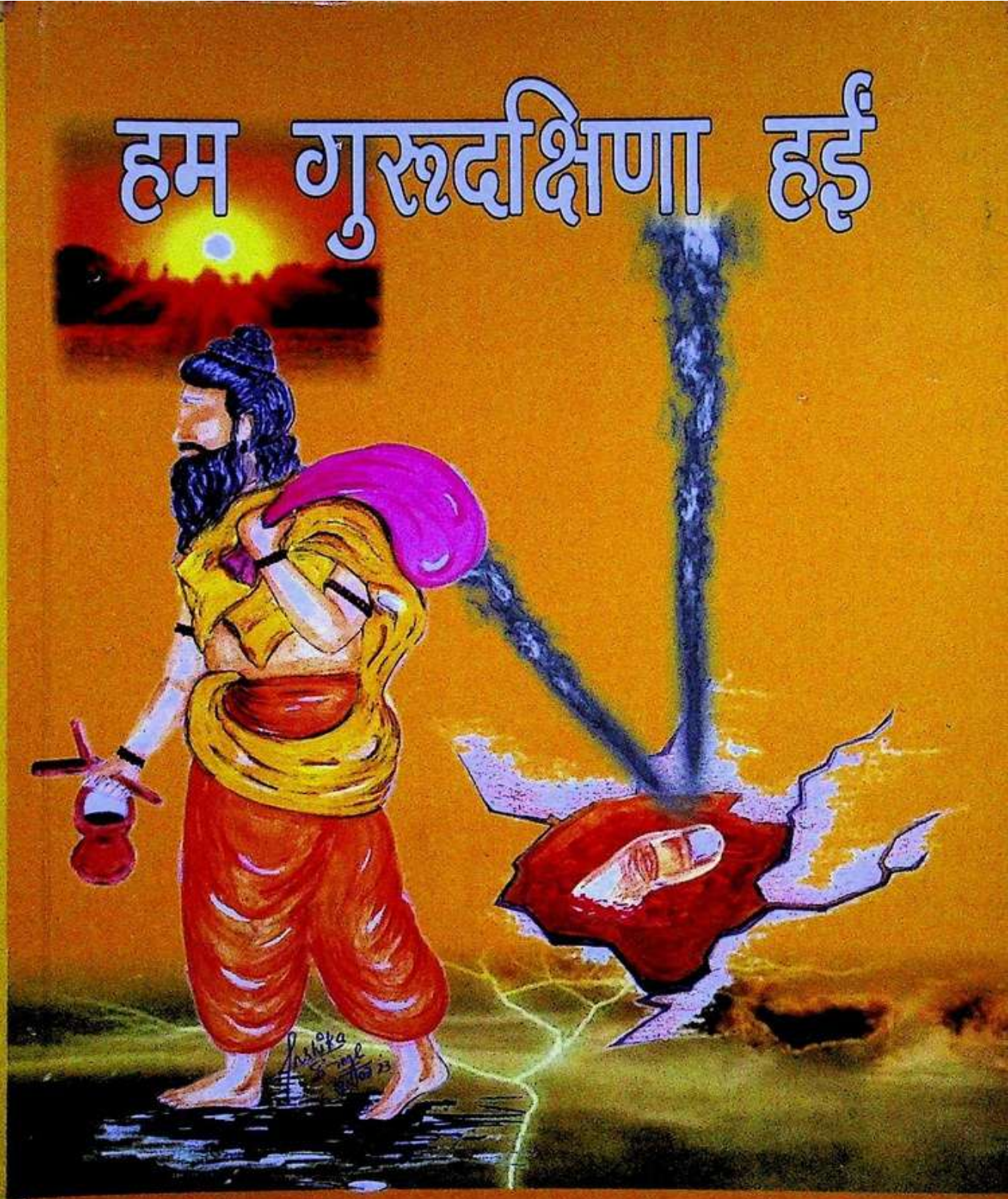
हम गुरुदक्षिणा हईं

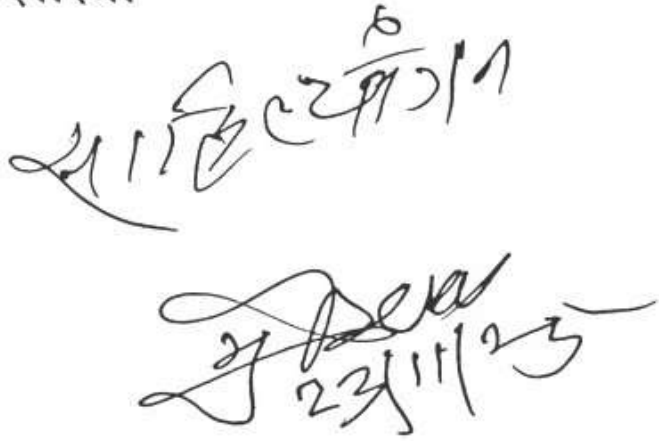


मूंगालाल शास्त्री

www.bhojpurisahityangan.com

हम गुरुदक्षिणा हईं

मूंगालाल शास्त्री



www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

हम गुरुदक्षिणा हईं

लेखक
मूंगालाल शास्त्री

प्रकाशक
भोजपुरी भारती
ढोढ़स्थान, जनता बाजार (सारण)

www.bhojpurisahityangan.com

हम गुरुदक्षिणा हईं

- सर्वाधिकार : लेखक
- लेखक : मूंगालाल शास्त्री
- संस्करण : प्रथम 2023 ई०
- प्रकाशक : भोजपुरी भारती
  ढोढ़स्थान, जनता बाजार, (सारण)
- इकाई : पिरौटा, बनियापुर (सारण)
- मूल्य : दो सौ पच्चीस रुपये मात्र
- अक्षर-संयोजन : राजीव, पटना-800 003
- मुद्रण : भूषण इन्टरप्राइजेज, पटना

Ham Guru Dhaxina Haeen

Author by : **MUNGA LAL SHASTRI**

Price Rs. 225/=

www.bhojpurisahityangan.com

प्रकाशकीय

महाभारतकालीन समाज एगो मर्यादाहीन आ आदर्शन आ मूल्यन से विमुख समाज रहल बा जवना के परिणति होत बा महाभारत के महाविनाशकारी युद्ध के रूप में । ई काल नैतिक मूल्यन आ आदर्शन के ताखा पर राख के स्वार्थ, अहंकार, प्रतिशोध आ भौतिकवादी भोग-लिप्सा में आकंठ डूबल महामानवन से भरल पड़ल बा । एह काल से शायदे कवनो अइसन महामानव होई जेकर चरित्र सोरहनियाँ बेदाग होखे । एही विषमकाल में भारतवर्ष के आकाश में उदय होता एकलव्य जइसन धूमकेतु के जे अपना प्रचंड प्रतिभा आ पौरुष के आलोक से लोक के अचंभित आ आतंकित करत तुरन्ते अलोपित हो जात बाड़न । एकलव्य के प्रतिभा अपना समय के महान धनुर्धर राजगुरु आचार्य द्रोण के कुछ एह तरह से आतंकित करत बा कि ऊ रीत-अनरीत भुला के दक्षिणा के रूप में एकलव्य के दाहिना हाथ के अगूंठा माँग लेवे खातिर विवश हो जात बाड़न ।

छद्मवेशी गुरु आचार्य द्रोण द्वारा दक्षिणा के रूप में एकलव्य के

www.bhojpurisahityangan.com

अगूंठा कटवा लेवे के पक्ष में कुछ श्रद्धालु आ घोर आस्थावान विद्वान सभे द्वारा बहुते किस्म के तर्क दिहल गइल बाकिर जनमानस कवनो तर्क के पचा ना पवलस आ सवाल पर सवाल खड़ा होत रहल बा । सबसे महत्वपूर्ण सवाल बा दक्षिणा के रूप में लिहल एकलव्य के अँगूठा के उपादेयता । आखिर आचार्य अँगूठा लेके का कइलन ? एही गुरुगंभीर प्रश्न के उत्तर के टोह लेवे के बहाने कविवर मूंगालाल शास्त्री के उपन्यास ''हम गुरुदक्षिणा हईं'' कुछ जानल-पहिचानल आ कुछ अनचिन्हार मार्गन पर पाठकन के लेके चल रहल बा ।

प्रस्तुत उपन्यास आधुनिक दृष्टि से तत्कालीन समाज के बखिया त उधेड़ते बा आचार्य द्रोण सहित अन्य पात्रन के मन के परत-दर-परत उभारत सवालन आ संदेहन के तार्किक समाधान ढूँढ़े के प्रयास करत तत्कालीन समाज के एगो सोगहग रूप के दर्शन करावत बा ।

व्यक्ति चाहे केतनो महान काहे ना हो जाव ऊ अपना मानव-सुलभ क्षुद्रता से कबो उबर ना पावे । महान धनुर्धर आचार्य द्रोण के चरित्र में अहंकार, स्वार्थलोलुपता, प्रतिशोधी भावना आ भोग-लिप्सा जगजाहिर बा संगही उनका में व्यवहार-कुशलता के नितांत अभाव बा जवना के चलते उनका अपना बालसखा द्रुपद के राजसभा में अपमानित होखे के पड़ता । द्रुपद के राजसभा में घटल घटना के वर्णन में शास्त्रीजी के सहानुभूति द्रुपद के पक्ष में बा । एकलव्य के अँगूठा माँगे के निर्णय आचार्य द्रोण द्वारा अविवेकपूर्ण बा आ जल्दीबाजी आ आवेश में लिहल गइल निर्णय बा जहाँ आदमी के अपना व्यवहारकुशलता पर इचिको भरोसा ना होखे ।

एकलव्य के अँगूठा लेके आचार्य अपना घर, समाज आ राजसभा तक छिछियात बाड़न आ अपना कुकृत्य खातिर समर्थन जुटावे के कोशिश करत बाड़न बाकिर ऊ हर जगह लुलुआवल जात बाड़न । विकल आचार्य एकलव्य का ओह अँगूठा से अब डेराए लागल बाड़न । आपन डर भगावे खातिर जवन उतजोग आचार्य कइले बाड़न ऊ हस्तिनापुर खातिर विषवृक्ष बन गइल बा, निःसंदेह आचार्य के ई निर्णय तार्किक स्वाभाविक आ वीरोचित बा, शायद ओह अँगूठा के सद्गतियो ईहे बा । ई लेखक के कल्पनाशक्ति के उत्कृष्ट उदाहरण बा ।

www.bhojpurisahityangan.com

''हम गुरुदक्षिणा हईं'' के शैली आत्मकथात्मक बा जवना के सूत्रधार बा एकलव्य के कटल अँगूठा जे दिव्य-स्वरूप ग्रहण करके देशकाल के सीमा लाँघ के पात्रन के अंतर्मन तक पइसे में सक्षम बा ।

आधुनिक संदर्भ में पौराणिक आख्यानन के औपन्यासिक स्वरूप दिहल एगो गुरुतर कार्य बा । बेशक, शास्त्रीजी के ई उपन्यास ऊहाँ के सतत अध्ययन आ चिंतन-मनन के परिणाम बा । उपन्यास के सहज-स्फूर्त्त, प्रवाहपूर्ण भाषा पठनीयता के स्वाद दुगुना कर देत बा । भोजपुरी भारती अपना संस्थान से एह पहिलका औपन्यासिक कृति के प्रकाशन करत हर्ष के अनुभव कर रहल बा । विश्वास बा कि शास्त्रीजी के ई कृति प्रबुद्ध पाठकवर्ग के बीच सराहल जाई ।

-डॉ. कुमार कौशल

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

हम गुरुदक्षिणा हईं

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

एक

गमछा का खूँट में जतन से बन्हाइल हम आचार्य का पीठ पर झूलत जात रहनी । गमछा का साथे-साथे आचार्य के पीठ हमरा खून से तरबड़ हो गइल रहे । नाता टूटेला त तन-मन लहूलुहान होइये जाला । गरम खून अब चिपचिपा बनके पीठ पर सटे-सटे हो गइल रहे । कुबकुबइला जइसन बुझाते आचार्य कन्धा बदल देत रहस । हम कबो दाहिना कन्धा का नीचे झूलत रहीं त कबो बायाँ कन्धा का नीचे । गमछा के कन्धा से कन्धा बदलत देख के उनकर दुलरुआ शिष्य मने-मने मुस्का लेस । दक्षिणा लेके चलला का बाद केहू से केहू अबले एको टुम बोलले ना रहे, बाकिर दूनू आदमी के चाल-ढाल के रंग-ढंग अलग-अलग रहे । केहू फरहर त केहू धीमर । केहू के घर जल्दी आवते ना रहे त केहू घरे पहुँचही के ना चाहत रहे । साँझलवका दियालेसान का मचान पर आसन जमा लेले रहे । जंगल के राह ओराए के नामे ना लेत रहे । जंगली जीव अपना-अपना बुतरू के दुलरावत बड़ी तेजी से अपना-अपना आथार कावर चलल जात रहलें स । *जलमतुआ के माई अउँआर छटकला का चलते हेर के फेर छोड़ दुलकत जात रहली स । अइसन बुलाहट में अकुलाहट बा, घबड़ाहट नइखे । ना शिकार होखे के भय आ ना फेरु*

www.bhojpurisahityangan.com

शिकार करे के चाह । पेट आ पीढ़ी में बस अतने के अन्तर होला, तबो प्रेम के पतवार थाह आउर अथाह से पार उतारिये देला । प्रेम से वशीभूत सभ बनेया जीव-जन्तु अपना गन्तव्य के रूख कइले बा । अब मशाल के आभा जइसन दूरे से बुझात बा ।

भुलाइल मन आउर घवाहिल तन इचिको उसुक-फुसुक ना चाहेला काहेकि दुनू का फेरु सामान्य होखे में जइसे असहजता का आग से गुजरे के पड़ेला । पीठ पर झुलुआ झूलत अब हमरो मन आ गइल बा । देह बेर-बेर छिला जात बा । तन्तु रुब रह रहके मरमरा जात बा ओपर से एह दुनू आदमी के चुप्पी । अइसन चुप्पी त अपराध-बोध में होला जहाँ भर *मुट्ठी भइला* से कंठ रून्हा जाला ।

केहू कह सकत बा कि शरीर से अंग अलग होते ऊ मर जाला । ओकर चेतना शून्य में बिला जाला । ओकर वर्तमान उहँई ले रहेला ऊ भूत में विलीन हो जाला आ ओकर भविष्य उमेद का आँखि ओरा जाला, हर्ष-विषाद, सुख-दुख, मान-अपमान, आपन-बिरान ईहाँ तकले कि कवनो तरे के अनुभूतियो ओकरा के ना व्यापे । साँस के रूकल, ओकर जड़ता आ कवनो तरे के प्रतिक्रिया ना देहल, ओकरा मरन के पहचान मान लियाला, ई त जीवधारी का पैमाना के पैमाइस ह जवना के अगुआन आदमी बा । ईहे नू तत्सत के अधूरा व्याख्या भइल । ई त तत्वन का सत्यता के दोसरका पड़ाव ह । एह पड़ाव से आगे के रास्ता त रोजगार के जोगार अलोपित क देले बा, बाकिर इहँई से स्वार्थी तत्त्व अपना खातिर फेरु रास्ता फोड़ लेवेला ।

मरन त दीया के बुताइल ह । दीया तेल बाती अछइतो बुता जाला ओकरा अंजोर के अन्हार बस सोख लेवेला । ओकर आकार, ओकर आधार ओमे के तेल भा बतिहर त जइसे के तइसे रहेला । दीया के नाम ओकर आकार आ ओकरा आधार के सोखल अन्हार का वश में नइखे । उहँई से फेरु एगो नया यात्रा शुरू होला जवना के नया जीवन कहल जा सकत बा माने फेरु यात्रा पथ पर आगे बढ़ल । गाछ से एगो डाढ़ी काट के ओसे घरेलू उपयोग के वस्तु भा आउर कुछ बना लेहल ओकर अन्त ना एगो नया जीवन के यात्रा कहाई । एमे ना गाछ मरल ना एमे डाढ़ी,

www.bhojpurisahityangan.com

बस जीवन यात्रा आगे बढ़ल आ हरमेस खातिर आगे बढ़ते रही । ए दिसाई हमहूँ अब अंगूठा कम, दक्षिणा जादे बन गइल बानी तबे नूँ आचार्य गेठरी बान्ह के हमरा के पीठ पर झुलुआ झुलावत ढोवत बाड़न ।

हम साधारण अंगूठा ना हँई आ ना अब साधारण दक्षिणा बानी । हम इतिहास के अँखियान करावे वाला अध्याय हँई, भूगोल में भूचाल मचा देवेवाला डभकत *तरल जिनिस त राजनीति में तरी पार* पहुंचावे वाला रेरी हँई । हम ज्ञान का गगरी के विज्ञान हँई, विज्ञान का बरगुना के निदान त गणित का गहराई में दाये-बाएँ चले वाला दशमलव हँई । हम साहित्य में समतामूलक समाज खातिर ऐनक हँई, त मानव मूल्य स्थापित करे खातिर एगो लमहर सबक ।

हम जन्मना जेकरा साथे रहनी उहो असाधारने रहलें, ए घड़ी जे सङ्गिरहा से धारण कइले बाड़न इहो असधारने हउएँ । दुनू असाधारण का संघत के फलो असधारने होखे के चाहीं । समय-समय पर बिना भेदभाव कइले हम दुनिया के बतावत रहेब । एक जाना का हाथ से कट के आइल बानी आ एक जाना का हाथे आज से लागल बानी ।

लोग इहो कह सकेला कि हमार कांया आउर कव दिन खातिर बा, आचार्य के जिनिगी त बहुत लमहर बा । हम बता दीं जे आचार्य का रोम-रोम में ढुक के हम देह का भीतर ले समा गइल बानी । हमरा खूनवे का लाग से नूँ इनकर पिठवा खजुआइल ह । आचार्य ओकरो के खजुअइनी बुझके कान्ह बदलत रहलन ह आ हम उनका अन्तस में ले ओघड़ी ढुकत जात रहनी ह । कुछ देर में त हम इनका दिल-दिमाग में लेक ढुक जाएब तब इनका दिमाग में बनत-बिगड़त तरंग से इनकर मनोदशा आ गतिविधि बूझ जाएब ।

कवनो घटना दूरगामी असर डालेला । ब्रह्मांड के उपनेत त एके गो बड़हन बिस्फोट से कादो भइल बा बाकिर ओकर असर आज लेक सभ आकाशीय पिंडन पर बरकरार बा । काल के गणना एकरा के अपना में समवा नइ ा सकत, उनका बन्हन से ई मुक्त बा, बलुक बिस्फोटवे ब्रह्मांड संचालन के अथश्री कारण बा । आचार्य के गुरुअई, उनका मूर्ति के महान्ता, दुलरुआ चेला के महत्वकांक्षा, भावना के भ्रमजाल, छनहरे

www.bhojpurisahityangan.com

के गँव, अदेव बनिहारी, निर्लजतापूर्ण माँग, आ निर्दयता पर सदयता के लेप जइसन कथा-प्रसंग हरदम नया अध्याय बनके सामाजिक संरचना आउर ओकरा व्यवस्था में विस्फोट करत रही । इतिहास का अन्त तक जनमानस में ई बरकरार रही । दिमाग से ई बात निकालला के काम बा कि बाजू से हमरा के काट के निकाल दियाइल त हम मर गइनी आ हमार अस्तित्व ओरा गइल । अरे, अब हम गुरुदक्षिणा हँईं । हमरा के सहेजल अब आचार्य के नू काम आ जिम्मेवारी बा ।

अब हिलडुल तनि कम होता, अरे ! तनि आराम मिलत, हिलडुल जादे भइला का चलते घाव बेर-बेर छिला जात रलऽ, हिलडुल का चलते बन्द खून फेरु-फेरु रिसे लागत रलऽ, देह के मरमराइल अब तनि बन्द भइल । बुझात बा जे जंगल के रास्ता ओरा गइल कादो ? एकर मतलब बा जे आचार्य के गोड़ अब राजमार्ग पर सरपट उठ रहल बा, तब त महलो नियरे होई । ओह ! हमरो मिजाज अब थक गइल बा, गेठरी में बन्हाइल-बन्हाइल मिजाज उजबुजा गइल बा, कब एह बन्हन से खुलेब । राजमार्ग पर बड़त मशाल के साइत हउ अँजोर आवत बा कादो ? अब त लोग के कुछ धमको बुझात बा । बतकही के आवाज त साफ-साफ नइखे सुनात बाकिर भीड़ के गूंज बतावत बा जे नगर अब ईहाँ से एकदम भिरिये बा । दंडवत आचार्य ! दंडवत आचार्य कह-कह के केहू-केहू आगे बढ़त चलल जा रहल बा । देह एकलंगी झूक गइल ह, अरे ! ई कवनो मोड़ बुझात बा । अब मशाल के अँजोर सोझे लउके लागल । बुझात बा ई दुनूं आदमी अपना नगर में पहुँच गइल, खैर नगर के भव्यता त बेजोड़ बा । बैभव से ढकचल ई नगर, सिंगार-पटार से अँइठत महल में अपना असबाब के बानगी प्रवेशे दुआर पर रख देले बा जे देखेवाला के आँखे चोन्हरिया जाता । *हूँ ह ! दीया के बतिहर तेल से बड़ेला, तेल का गहराई में डूबके बत्तीहरो आपन लौ गवाँ देला,* जीवन में वैभवो अँजोर खातिर होखे के चाहीं, डूब के मरे खातिर ना । एह नगर में आवते हमरो देह के सब तन्तु काहे दो तऽ कठकरेजी नियर भइल जात रहे ।

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com

दू

एगो किशोर अपना घर से निकल के केहू के पेंड़ा जोहत बा । ओकरा चेहरा पर जइसे केहू फिकिर के फिचकारी मारके अलोपित हो गइल होखे । अबकी बेरा ओकरा हाथ में एगो दीया बा । दीया का अँजोर में ऊ कुछ दूर ले कवनो धुआ के तलास करत बा । ई बाट जोहउल ऊ साँझही से कर रहल बा बाकिर आवेवाला के कतहीं अता-पता नइखे । अबकी ऊ घोड़जक खानी रास्ता पर अड़के पेड़ा जोही । ई सोच के ओ अन्हरिया में ऊ आगे बढ़ गइल, आवेवाला जबले अब आई ना तबले अब ऊ उहँई डटल रही ।

"रात के पहिला पहर बीते जा रहल बा, पिताश्री के कही अता-पता नइखे बुझात । अपना दुलरुआ शिष्य के साथे केहू से बिना कुछ बतवले आश्रम से घनघोर जंगल कावर चल देलन ह । का भइल का गइल ? कुछ बुझाते नइखे ।" संसा का साँसत से किशोर के मन उजबुज भइल जात रहे । टकटकी लगवले विचार- खाँढ़ में डूबत ऊ किशोर अपना लइकइयाँ दिन का दोन से दिल-दिमाग के पटवे लागल ।

www.bhojpurisahityangan.com

"समय काल आ परिस्थिति का संगे-संगे पद-प्रतिष्ठा आउर प्रकृति पहिचानिए के संघत, समाज आ सभा में मुँह खोले के चाहीं । माई का उदबेगला से पिताश्री हमरा दूध पीये बदे एगो राजा किहाँ एगो गाय माँगे गइल रहस । सुने में आइल रहे जे ऊ राजा कादो पिताश्री के बालसखा आ सहपाठी रहलें ।"

राजदरबार फरियादी से ठकचल रहे । राजा ऊँचा आसन पर बइठल सूरज खानी प्रकाशमान रहलें । सभासद सभे अपना-अपना आसन पर बइठल ग्रह आ नक्षत्र जइसन अलोपित शोभायमान रहलें । राजा ओह बेरा अपना प्रजा के दुख-दर्द आ ओकरा समस्या के समाधान करत रहस । एक-एक समस्या पर मंत्री, क्षेत्राधिकारी आ क्षेत्ररक्षक से गम्भीर चिंतन करत प्रजा के आसन्न संकट के समाधान करत रहे सभे । बीच-बीच में 'महाराज के जय हो' महाराज के जय हो !! का जयघोष से सभा गरजत रहे । ओही बीच पिताश्री धरधरइले सभा के चीरत राजा का लगे पहुँचके अपना दोस्ती का गुमाने, हमरा दूध पीए खातिर उनका से एगो गाय अधिकारवश माँगे लगलें । सभा सन्न रह गइल । प्रजा का मुँहबई आ गइल । क्षेत्ररक्षक, क्षेत्राधिकारी का संगे-संगे मंत्री आ सब सभासद आसन से उठ के खड़ा हो गइलें । राजा के चेहरा क्रोध से लाल हो गइल । दंडपाल अपना प्रहरी का साथे अपराध-सिद्ध पिताश्री के घेर लेलें । जल्लाद आपन फांस आ फरसा सहेजे लगलें । सभा में उठल एह भूचाल के पिताश्री पर कवनो असर ना रहे । ऊ विकल भाव से मित्रता का चिन्हब खातिर आश्रम का एक-एक घटना के इयाद पड़ावे के प्रयास राजा से करत रहस । "अरे भाई, नइख पहचानत, हम तोहर बालसखा हईं । आश्रम में एके साथे नूँ पढ़त रहनी स । अरे ! तहरा लिखे ना आवे त गुरुजी से लुका के तहरा पाटी पर हम लिख दीं । आश्रम के सउँपल सारा काम तहार हम कर दीं । जाड़ा का दिन में त तू कुछुओ ना करऽ तबो तू आश्रम में हमरा बाद अउअले रहऽ । एकरा मूल में हम रहीं । हमरे लिखलका गुरुजी से देखाके तू वाहवाही लूटलऽ । तू त पढ़े में एकदम कमजोर रहल, बाद में त तू कामचोरो हो गइलऽ मरदे, आरे ! अब इयाद आइल कि ना ? अरे ! इयाद पारऽ, चिन्हलऽ अब ?"

www.bhojpurisahityangan.com

हम आइल बानी जे हमरा एगो बेटा बा । पड़ोस के लड़िका सब दूध पीयत रहसऽ । ऊहो हमरा से कहलक जे पिताश्री हमहूँ दूध पीएब । हमरो के दूध द लोग, दूध खातिर ऊ रोए-पीटे लागल । हमरा लगे त धन बा ना जे दूध कीन दीं भा एगो गाए कीन दीं ।'' हमार पत्नी कहली ह जे अपना दोस्त से एगो गाय काहे नइखी माँग ले आवत । ऊहाँ का जब राजा बनल बानी त एगो गाय देहल कवन लमहर बात बा । शक्ति-साधक का सदन में युक्ति चेरी होली । ''अरे भाई ! तू तऽ आश्रम में इहाँ लेक कहले रह जे हम राजा जो होखेब त तहरा के आधा राज पाट दे देब । हमरा राजपाट का होई ? लड़िकवा का दूध पीए बदे एगो गाए ना दे दऽ ।''

एने राजा खीसी माहुर भइल जात रहस, ओने पिताश्री इयाद दियावे के एको धरीछन बाकी लगावे के ना चाहत रहस । फेरु बतावे लगलें ''आश्रम में बुझाय जे गुरुजी आग का भेस में बाड़न । अरे ! तू लुतुर-लुतुर गोर उठा के चलऽ । फेरु आश्रम में गवनई का दिन एगो खराब कवनो पद गावऽ जवना के केहू सुने के ना चाहे, बाकिर तू मानऽ ना, ऊहे गइबे करऽ । आ हम पतई के खरदोना कतना जल्दी बना दीं । सब लड़िका हमरे से खरदोना बनवाव स । तहरा त खरदोना बनावे साफे ना आवे । एक बेरा लुकउल खेलत घड़ी अनाज नापेवाला दोन में हम लुका गइल रहीं, तू सब जाना खोजे में छीटपीट हो गइल रहऽ तबो हम ना मिलनी । हार सँकारते ओमे से हम कू कइले रहीं त तहरा लोगिन का खुशी के ठेकाना ना रहे । तू तऽ थपरी पीट-पीट के हँसत रहऽ । इयाद पड़ल ! अरे ! तहार कहल कवनो लड़िका ना करे तऽ तू ओकरा से खीस निकाले खातिर ओकर बस्ता आश्रम में धइल पटवनी खातिर दोन में लुका द । अरे ! जलेक ऊ रो ना देस तलेक उनकर बस्ता ना दीही स । तब गुरुजी हमरे के खोज के ले आवे के कहस, बस हम दोन टकटोरीं आ ओमे से बस्ता निकाल के ले आईं । अब सब इयाद पड़ल ! अलबत तू भुलक्कड़ बाड़ऽ ! अरे हम तहार पढ़ाई के संघतिया नू हँईं ।''

पिताश्री एक-एक घटना के इयाद पड़ावे खातिर कूट शब्द कूटवाक्य आउर कूट-बिम्ब के अब सहारा लेवे के शुरू क देले रहस-

www.bhojpurisahityangan.com

"अरे ! अपना आश्रम से पछिम वाला आश्रम में एगो चनाचोर शिष्य के हल्ला भइल रहे । अपना संघतियो का हिस्सा के चना ऊ चोरा के खा गइल रहे। पूरबवाला आश्रम में एगो पनरोका भाई रहलें । आश्रम का खेती-बारी खातिर डरेरी से बहत पानी रोके बदे मरदे रातभर डरेरिये पर सुतल रह गइल । गुरु के आदेश लोग माथे चढ़ावेला ऊ त देहे पर लाद लेलस; ई नू गुरुभक्ति ह । हँ दखिनवाला आश्रम में एगो भूखमारा शिष्य के चर्चा सुनाइल रहे जे भूखे आन्हर होके इनार में गिर गइल रहस । उनकर ईलाज वैद्य लोग इनारे में कके दुनू आँख नीमन कइलक । तहरा इयादे नइखे पड़त ! हँ उत्तरवाला आश्रम जवन हमनी का आश्रम से कई जोजन दूर एगो चामचोर चेला छी-छी ! कहे लाएक त नइखे, आरे ऊ त आसरमवे के नास देलक, अब इयाद पड़ल ! हमनी त ई सब चर्चा रोज करीं स । आ चटकारा लेले के । भोदा लड़िकन का दिसाई गुरुजी के खीस-दिमाग में भूसा, माथा में गोबर, सब धन बाइसे पसेरी, बुद्धि के बटलोही, सरस्वती के शत्रु आ मूढ़मुरैठा जइसन सम्बोधन निकले त हमनी भीतरे-भीतरे गील होखी सन आ छुट्टी बाद उनका के दुनू आदमी खूबे रिगाईं स ।"

आस्था, अनुशासन, मलिकाँव आ हैबत जब उठेला त भावना, व्यवस्था, आदेश आ सुरक्षा घवाहिल हो जाला । शान्त सभा में अब खुसुर-पुसुर होखे लागल रहे । लोग कबो राजा के निरेखे त कबो पिताश्री के । खलबली मचल देख के राजा खा जाएवाला नजर से पिताश्री के देखलें ।

पिताश्री फेरु ना मनलें । मित्रता आपन पहचान पावे खातिर खेल का मैदान से लेके बधार में बिननी तकले दउर लगावे लागल । "इयाद पारऽ, सबका से बढ़िया बंसा तू मारऽ । माथा का बले सबका से बेसी दूर ले हम चलीं । खेल में हमरा से आगे केहू ना निकले बाकिर तहरा जीते खातिर हम आपन जीतल बाजी हार जाईं । तू कबो शिलोच्छवृति (किसान का खेत काट लेला का बाद गिरल बाल भा दाना के बिननी) में कवनो लड़िकन के साथ ना देत रहलऽ । तहार सांतिर खेत से अन्न बिनाई हम कके तहरा नाम पर जमा क दीं, जवन हम आ तूहीं जानऽ ।"

www.bhojpurisahityangan.com

एतना सुनते राजा खीसी काँपे लगलें । एक बेरा ऊ आसमान कावर देखलें आ चुटकी बजा देले । चुटुकी बाजते पिताश्री बंदी का कठघड़ा में खड़ा करा देहल गइलें । उनका विरोध पर केहू ध्यान ना देलक । राजा के आपन बालसखा बतावला पर सभा पिताश्री के पागल दरिद्र आ बौद्धिक दिवालिया कहत उठ गइल रहे । पिताश्री से ई कुल्ही बात सुनके माई ओ राजावा के निपुतरा कहले रही । गोदी में हमरा के बइठावत राजा के वाँझा आ रानी के बंझिनिया कह के अपना मन के भरास निकलले रहली । *बाल-बच्चा के छरिआइल, ओकर हठ केहू बापे मातारी बूझ सकत बा- जब जिनिस सामरथ का पहुँच से बाहर होला,* ओ घड़ी बच्चा का सुसुकी आ लोढ़निया से माई के करेजा फाट जाला । तलहीं ओ किशोर का दिमाग में एगो झटका खानी लागल आ ऊ सब विचार छिन्न-भिन्न हो गइल । अन्हार में ओकरा एगो आदमी के धुआ लउकल । कुछ देर अखियान कइला का बाद चलनाई चिन्हल बुझाइल जवन ओकरा पिताश्री के रहे ।

हूँ..... ऊ..... उ.....

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com

तीन

हमरा गोसइत (धारक) का कुटिया में दुलरुआ शिष्य अबकी चौथा बेरी आइल रहस । *मनबढ़ु आ एकबग्गा घर के लड़िका केहू के जीत ना पचा पावे आ ना आपन हार स्वीकार करे ।* एकरा खातिर ऊ समाज में उत्फाल मचल रहो, पसन्द करेला । ऊ छल, बल आ कल से दिल आ दिमाग में लागल आग बुतावे के उतजोग करत रहेला । साम, दाम-दंड आ बिभेद जइसन राजनीति के कँचगराह सिखवइया ईहईं से अँठिआए आ पकठाए के काम शुरू क देला । प्रतिद्वन्द्वी के अपना से दबावे के शुरू करी । बुत्तगर के आभास होखते भाई बन्धु के बोलाई । ऊहउँ असफल होखते बड़बोला आ उदंड लोग के भिराई, अन्तिम क्षण में परिवार के प्रधान पौंरूख बोला के ले आई आ असंगत दोष लगाके कवनो गंवे क्षति पहुँचा के बाजी मारे के चाही । शस्त्र, शास्त्र, मल्ल भा तर्क के तराजू हरदम अपना अलंग नवता चाहत रही, चाहे एकरा खातिर कतनो नीचे उतर के सउदा काहे ना तउलवावे के पड़ो । ऊ जानत बा जे बिना करिखा लगले चूल्हा से सफेद रोटी ना निकले ।

www.bhojpurisahityangan.com

कबो-कबो प्रयोजन छल-बल-कल तीनों से ना सधे, ओही तरे राजनीति के दाव-पेंच साम, दाम, दंड आउर बिभेद जइसन अचूक दाँवो फलदायी ना हो पावे तब आदमी का दुनिया में एकेगो दाँव-पेंच बच जाला जवना के बड़वारगी कहल जाला । ई अमोघ अस्त्र ह, बाकिर चलावे का पहिले एकरा के जगा लेहल बड़ा *जरुरी* ह । एकरा के जगावे बदे अपना के सब गँवे मुआवे के पड़ेला । चमचई त एकर एगो शाखा ह, जवन आगे-आगे छउकेला, कुदेला, लोढ़नियाला, डहकेला, हाथ जोड़ेला, गोड़ धरेला, दाढ़ी धरेला, पटा जाला, भुईंपरी चलेला मतलब जे जइसे काम सधी ऊ सब करे लागेला । राजनीति का साम से बड़वारगी बहुते भिन्न ह । आदमी भूतकाल के मोटरी मुड़ी भा पीठ पर ढोअले चलेला, ओकरा फुरसत ना मिलेला जे ढोअत मोटरी के खोल के देखो जे ओमे काथी-काथी बा । दोसर केहू जब ओ मोटरी के उनकर धइल-धइल सामान उनका के देखा देला भा इयाद पड़ा देला तब उनकर हिया जुड़ा जाला आ आपन सर्वस्व लुटा देवे खातिर तइयारे ना होखस, त्यागहूँ में देरी ना करस । ओमे जाति, वंश, घराना, गोत्र, बसीना, कुँड़ी, बाप-मतारी, रिश्ता-नाता घर-दुआर, गाँव शहर, पहनावा-ओढ़ावा, उठन-बैठन, खान-पान, खेत-बाड़ी, यात्रा-सवारी, चाल-चलन, सुभाव-लगाव, रंगरूप, ईमान-आबरू, पीढ़ी-दर-पीढ़ी के कथा कहाउत आ ओकरा हारो में जीत जइसन बड़वारगी के शामिल करे के पड़ेला । एही बड़वारगी के विद्वान लोग प्रार्थना, वंदना, विनय स्तुति आउर दू का का कहेला..... ? पता ना जे देवता सब एह बड़वारगी के शिकार कब से, कइसे आ काहे खातिर हो गइलें । उनका के मोटरी जनावे के पड़ता त अंतर्यामी के का होई आ देखावे के पड़ता त दिव्य-दृष्टि के का होई ? कवनो वंदना के अर्थ कइला पर नाम, धाम, काम, परिचय, पता, पहुँच के पहचान करावत मिलीं जइसे सुनेवाला का अपना बारे में पहिले से कुछ पते नइखे ।

राजनीति का पैमाना पर बड़वारगी बहुत जल्दी चिन्हा जाला बाकिर धार्मिक क्षेत्र के बड़वारगी कादो मुक्ति के मार्ग हो जाला । बा नूँ ई मजेदार बात । ईष्ट का पीठ भा मुड़ी पर के मोटरी में धइल जिनिस

www.bhojpurisahityangan.com

का बारे में भक्त का बतावे के पड़ेला त ऊ खुश हो जाले, एकरा पहिले साइत उनका अपना बारे में, अपना नाम के पर्यायवाची भा कुल, गोत्र, निवास, पवँरूख के ज्ञान साइत कुछुओ के पता ना रहेला, तबे नूँ एक का बाद एक भक्त इयाद करावत रहेला ।

उनका त ओही दिन हमरा के समझ जाए के चाहत रहे जहिया हमार गोसइत हमरा दिसाईं कुत्ता पर अस्त्रलाघव चलवले रहस बाकिर हमरा गोसइत के स्वयंसिद्ध रूप ऊ घटिया बुझले रहस । एक त ऊ राज परिवार के लड़िका, दोसरे आचार्य के दुलरुआ शिष्य आ तीसरे अपना के सबका से ऊपर बूझे वाला अहंकार, उनका के चैन से नानू रहे देत रहे । दोसरका दिन अचके में हमरा गोसइत का हाथ पर वाण चला देले रहस । वाण त अचूक रहे, हाथ त ना कटल बाकिर घवाहिल जरूर हो गइल । अब का रहे, हमरा गोसइत के देह हिलल आ दुलरुआ शिष्य तरवा का बले उखड़ के अपना माथा भर का ऊँचाई पर टंगा गइलें । ओतने देर में उनका चारो अलंग चोख-चोख बानन के आकाशगामी बिछवना हो गइल अब त ऊ ना बाने चलावे लाएक रह गइले आ ना उहाँ से भागहीं लाएक अस्त्रलाघव का सिद्धि के ई हमार पहिला कमाल रहे । गोसइत घाव पर एगो जड़ी लगा के अइलन तले त ई पानी-पानी हो गइल रहस । मुँह सूख गइल रहे । बोली ना निकलत रहे । कुछ देर का बाद सयकी से क्षमा मंगले । हमार गोसइत दुगो अंगुरी देखा के दुपहर तक ओहिंग टँगाइल रहे के ईशारा कइलन । उनका जीत के निशानी बुझाइल ऊ मन-ही-मन जरिछार हो गइले बाकिर अब करस त का करस, पेचकस में पड़ल बारे । अब दुलरुआ शिष्य का मन में अपना हार के चिन्ता कम, केहू का देख लेला के संसा जादे सतावत बा । राजदरबार के बात रहे, *पछुआरा परछाई हिली अगुआरा देह ना मिली । अलोता में मुँह चटकन सही सनमुख फटकनो ना सही ।* लोकगोचरो उनका जिनिगी के ई पहिलका पटखनी रहे । ऊ मन-ही-मन निगार निकाले के सोचे लगलन । हरबो कइनी त एगो बनवासी से । ई त हमार अकबक बन्द क देले बा, अच्छा धनुसे-बान में नूँ आगे बाड़न काल्ह पहलवानवा भइया से इनकर हड्डी-गुड्डी तुड़वा देब । एतना सोचते उनकर मूड़ी लटक गइल ।

www.bhojpurisahityangan.com

हमरा गोसइत का दया आइल, विसर्जन करते बानन के मचान नीचे झुकल आ ई जमीन पर उतरते फुर्र हो गइलें । हमार गोसइत ओने तनियो ध्यान ना देले ।

दोसरका दिन पहलवान धमकल रहस, देह हाथ से बरियार बाकिर बुद्धि के बसिआइल । दुलरुआ शिष्य हमरा गोसइत के देखते कहले -"इहे ह भैया" बिना ताल ठोकले पहलवान निधड़क हमरा गोसइत कावर बढ़ल रहस जइसे लाकन साग ममोरे खातिर कवनो साग खोटवा । चर जाए खातिर कवनो चौपाया । देह के सारा बल बाँह का राहे हमरा में आइल रहे । पहलवान का बाजू पर ठहर के हम अइसन दाब बनवनी जे उनकर मुँह लाल हो गइल । आँख दुनू बहरी निकले पर तइयार हो गइल, उनकर बढ़त गोर ऊहँई रोक गइल । हमरा गोसइत के रौद्र रूप देख के ऊ मुरझाइल फूल लेखा लटक गइले । हम आपन पकड़ तनि ढीला क देनी । चुपचाप दुनूं भाई कुटिया का लगे से कुछ गोचरो करत चल देले रहे लोग । अचरज में अँउटाइल ऊ लोग पीछे मुड़मुड़ निहार लेवे । "पहिले दादा का डरे ई सब आपन बेटी-बहिन तक राजमहल में कादो पहुँचावे, अब त ई सब मनबढु भइल जात बा, ई का हो गइल, हमनी के त बेइज्जत क देलस, अच्छा उपाय क दिआईं ।"

....

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com

चार

आचार्य आज साथे रहस । पुरवइया हवा से उनकर सफेद चादर पछिम कावर झकोर मारत रहे । लिलार के सफेद चंदन पूर्णिमा का चाँद जइसन आभा बिखेरत रहे । चेहरा पर शांत रस जइसे बरसन से डेरा जमवले होखे । देह में फूर्ती ओतना, जइसे दूर मंजिल के घमाइल राही छाया देख के ललचत होखे बाकिर विश्राम ना, आराम ना । *आँख के धाह आँखे बुझेला तबे नू सामने वाला आँख बचावे लागेला ।* अंगोरा पर पानी के फूह ओकरा कमान के कम जरूर कर देला बाकिर ओकर पहिला बेग धाहो से खतरनाक होला । *धाह जरावेला त भाप सिंझा देला ।* समुद्र का भीतर बड़वानल रहेला, शान्त समुद्र के मिजाज सुनामी से पहचानल जा सकत बा । परम्परा भा मान्यता जब खण्डित होला त ओकर शोर दिल होते दिमाग में जाला, *मुँह खुल गइल त प्रतिवाद, ना खुलल त भीतरघात ।*

आज केतना लंघन पार कके आचार्य दक्षिण दिशा कावर चलल होइहें । उपार्जन का दिसाईं ऊसर, खनन का दिसाई बंजर, आराधना का दिसाई अमंगल, बस्ती का दिसाईं अछूत, आवास का दिसाई पलानी,

www.bhojpurisahityangan.com

खानपान का दिसाई जूठन, मुअल मांस आ चुआँठ, वस्त्र का दिसाई छाड़न, बतकही का दिसाई पिशाची, रंगरूप का दिसाईं करिया-करलुठ, पेशा का दिसाई मृत शरीर के सद्गति दाता, इज्जत का दिसाई दुत्कार, धन मधे कठवत, पोशाक मधे जामा, सम्बोधन का दिसाई जाति सूचक शब्द, पहचान का दिसाई कंटिया, झाड़ू पीला पट्टी वाला लोग, बस एकरे एने बसगीत बा । ई सब पार करे में आचार्य अपना के कई बेर भर मुट्ठी कइले होइहें । लक्ष्मण-रेखा पार करेके कवन गरज इनकर मजबूरी बनल । ई त बड़ा लमहर दाँव लागत बा । पता ना जे ई केकरा माथे भुभुती ।

आचार्य के गोड़ जइसहीं कुटिया कावर मुड़ल हमार गोसइत धधा गइल रहस, जवन गोड़ छूए खातिर ऊ ओह घड़ी तरस गइल रहस एह वीरान जंगल में ऊहे गोड़ उनका कुटिया लगे चलके आ गइल रहे । दउर के पांव पर लोट गइल रहस, तबो आचार्य में उछाह ना लउकल । कंद-मूल उनका आगा रखके आ हाथ जोड़के ओइसे गोड़ से लपेटाइल रहस जइसे कवनो गलती माफ करावे के निहोरा करत होखस ।

आचार्य हूँ.... करत हमरा गोसइत कावर तकलें । हमरा गोसइत के रोआँ-रोआँ सिहर गइल । उनका इयाद पड़ल आचार्य का आश्रम में आपन भइल दुरगती, अन्तेवासी जब चिल्लाइल रहले-

बनेया ! बनेया !! बनेया !!

निषाद ! निषाद !! निषाद !!!

भील, भील, भील । एकरा मुड़िए में ढील ।। कुछ लड़िका त आश्रम का लगे जाहँईं ना देत रहसऽ । "छुआ जाई ! नासा जाई" कह कह के हमरा कावर थूक बीगे लगलन स । कुछ त ढेला चलावे लगलन स । अजीब हमार हाल भइल रहे । हम आगे बढ़के आचार्य से मिले के उतजोग करत रही ओतने ऊ सब मिल के भगावत रहलें सब । आचार्य ई सब देखियो के मौन रहले, पता ना ओ दिन ई का चाहत रहले । हमरा समुझत देरी ना लागल जे आइल दुआरी हमार दुरगति देखियो के जे आँख मूंद लेत बा भला ऊ हमरा के वाण-विद्या सिखाई बाकिर मन के कइसे समुझाई । ऊ पढ़े खातिर पियास नियर बेचैन रहे । आचार्य हमरा के

www.bhojpurisahityangan.com

देखके घिनाइल रहस, हमरा ईहाँ आवे के कारण जानके चिहाइल रहस । हमार रंग-रूप आ भाषा सोझे बतावत रहे जे हम मूलवासी हईं । परिचय आ प्रयोजन जनला का बाद ईहे आचार्य कहले रहस-

"सब लोग जब धनुसे चलाई त सेवा के काम के करी । सबकर अलग-अलग कर्म बनावल बा । ओकरा बस, ऊहे काम भर करे के चाहीं ।"

आचार्य से हम हुकुम लेके आपन बात कहले रहीं-

"हे आचार्य ! भगवान ए२ चढ़ावे बदे भा कवनो अपना ईष्ट के पूजा करे खातिर कवनो पुजारी भा भक्त "फूल चढ़वनी ह" कहेला । ऊ कबो गेन्दा, जूही, चमेली, केतकी चम्पा, हरसिंगार भा कवनो फूल का प्रजाति के नाम ना धरे, ए दिसाई प्रकृति ओकरा के कबो मना ना करे जे तू फूल हव, फूले रह । तहरा फल भा बीज धारण करे के अधिकार नइखे ।" हे आचार्य ! "प्रकृति के कवनो वस्तु धर्म, जाति, रंग, रूप, गुण स्वभावादि बदलिए के जीवमात्र खातिर उपयोगी सिद्ध हो सकत बा जेंग-

धान, चावल होला, चावल भात होला
पानी, बरफ होला, बरफ वाष्प होला
पत्थर, लोहा होला लोहा तलवार, तीर भा आउर हथियार ।"

आचार्य आगे कहले रहस-

"भात बनला से धान, वाष्प बनला से जल आ हथियार बनला से लौह पत्थर के कमी दीर्घकालिक असंतुलन खड़ा कके व्यवस्था बिगाड़ सकत बा ।" हम फेरु कइले रही-

मूल से जुदा भइला का बादे फूल, माला रंग भा औषधि बनेला । ओकर उपयोगिता त कहीं ना कहीं सिद्ध होइये जाला, फेरु असंतुलन कहाँ ? आ व्यवस्था में गड़बड़ी कहाँ ?

कुछ देर चुप रहला का बाद आचार्य कहले रहस-

"दोसरा के पेशा भा कर्म करेवाला चोर कहाला । ई एगो डरार बनल बा । तें डरार मत तूड़, ओने हूफला से तोर अमंगल होई ।"

नाम के भेद मूल के इयाद ना करावे । नाम त पहचान ह बाकिर

www.bhojpurisahityangan.com

काम निदान ह । काम भा पेशा के खूबी वस्तु का गुणवता से होला, जेही गुणवतायुक्त काम करी, मानवता के ऊ ओतने सेवादार होई । पेशा का दिसाई बनल जाति त थोपला खानी बा । एकेगो काम करत-करत ओकर कार्यक्षमता, गुणवता आउर मनोबल दिन-पर-दिन घटत चल जाला, जवना से आदमी देहचोर, कामचोर आ हरामखोर बनिके समूची मानवता के घाटा पहुँचावेला । पेशा का दिसाई ओकर उदासीन भाव ऊ अपना भावी पीढ़ी के सउँप के एगो आउर अलंगमार वर्ग बना देला जवन जीयते अपना के एगो अधमरू कामकर्ता मान लेला । "एतना कहके हम चुपाइल रहनी ।"

आचार्य जोर देके कहले रहस-

"जातीय पेशा का दिसाई श्रद्धाभाव जरूरी ह । ऊहाँ इज्जत आ बरकत दुनू होला ।"

हम बोलल रहीं, 'हे आचार्य ! सराहना से श्रद्धा पनपेला सम्बोध न जब तिरस्कार के तीर चलाई त पेशा के पेशानी छतविछत बिना भइले ना रही ।' ऊहाँ चन्दन टीका ना मरहम पट्टी लागी तब पेशा का दिसाईं लगाव ना अलगाव होई । समाज आ शास्त्र ए दिसाई उदारता नइखे देखवले तबे नूँ हे आचार्य ! रामायण के धोबी आ प्रथम श्लोक के निषाद प्रसिद्ध बा । इनका बाबू माई के धइल नाम के अलोपित क देलक ?

सुन ! "*बदरंग का कोख से सुन्दरता के जनम होला ।* प्रकृति आपन सिंगार तरे-तरे के चीज से करत रहेले । ओही तरे समाज के सुन्दर, ऊहाँ के पेशा करम बनावेला, एह से अपना पेशा करम के जोगावल सामाजिक सुन्दरता के कायम राखल कहाई ।"

कुछ स्वार्थी तत्व प्रकृति का सुघरई के अपना सुघरई में टाँक लेवे के चाहत बा ।

हे आचार्य ! ओही तरे समाज के कुछ परजीवी, पेशा करम के अपना स्वार्थ का बलिवेदी पर बार-बार पटक रहल बा । सृष्टि के रचना चाहे जतना तत्वन से भइल बा । ईहाँ के स्वार्थी लोग ओ तत्व देवतन के पीछे ढकेल के अपना के देवता बना लेवे खातिर ग्रंथ पर ग्रंथ लिखके ई सदी के सदी अझुरा देलक, जवन पेशा का सुन्दरता के अबहियो खा

www.bhojpurisahityangan.com

रहल बा ।

आचार्य तब आँख उठाके कहले रहस-

"तें बहुत ढींठ बाड़े । ते केकरा से बात करत बारे तोरा तनिको ख्याल नइखे । छात्रन का लाख विरोध का बादो तें आश्रम में गोड़ डालिए देले ह, त सुन ! क्षत्रियोचित धनुष-वाण सीखे का बदला ते मलाही तीर चलावे के विद्या अपना कुल-खानदान का लोग से काहे नइखुस सीखत । गुण-धर्म, स्वभाव आ संस्कार पेशा का दिसाईं जल्दी आवेला जवन ओकर खानदानी कला ह ।"

हे आचार्य गलती माफ कइल जाई.....।

"हम अपना के रोक ना पवनी ह । कला के जब जब बपौती बनावल गइल ऊ घटुआ होत गइल । वाण-विद्या के छोड़ युद्ध-कला का कवनो विधा में एह राजकुमार लोग से हमार प्रतियोगिता करालीं भा हमरा से कवनो प्रतियोगी परीक्षा लेलीं ।

हे आचार्य ! जब हम पास करी तबे हमरा के शिक्षा दीं । हमार बार-बार अपने से ईहे निहोरा बा । छुआ जाए आ नासा जाए का भय से हमरा के आश्रम में ना ढुके देब, संघत ना साधे देब, कुछ सीखे ना देब त फेरु कवना अधिकार से हमरा स्वभाव आ संस्कार के दूसेब । पेट भरके तब पीठ पर लादल जाला । ईहाँ बिना पेट भरले बोझा लेके दउरे खातिर पय का पिटारा से पिटाई होत आइल बा । हमरा के पढ़े ना दिआइल, बाकिर असभ्य कहल गइल, हमरा के सीखे ना दिआइल बाकिर संस्कार-हीन कहल गइल । हमरा के जाने ना दिआइल बाकिर अज्ञानी कहल गइल । हमरा से बेगारी करावल गइल बाकिर हरामखोर कहल गइल । हमार सर्वस्व हरन कके दरिद्र कहल गइल । हमरा से उत्पादन कराके अछूत आ अशुभ कहल गइल । मतलब हमरा अवसर कब मिलल जे हम सभ्य, संस्कारी, ज्ञानी, वफादार, सम्पन्न, पवित्र, प्रतिभावान आ महान बनीं ।

हे आचार्य ! अगर हम बदरंग बानी त हमार रंग जरूर कहीं बा । हम निर्धन बानी त हमार धन जरूर कहीं बा । हम असभ्य बानी त हमार सभ्यता जरूर कहीं बा । हम हिंसक बानी त हमार अहिंसा जरूर

www.bhojpurisahityangan.com

कहीं बा । हम भूखा बानी त हमार आहार जरूर कहीं बा । हम चुप बानी त हमार आवाज जरूर कहीं बा । हम वंचित बानी त हमार संचित जरूर कहीं बा, जहिया हम आपन भुलाइल खोजे खातिर निकलेब ओ दिन बड़ा हंगामा खड़ा होई ।''

हमार बात आचार्य का तनिको ना सोहाइल रहे । ऊ तुरत पाला बदलत कहले- ''हम संकल्पित आ बिकाइल गुरु बानी । जे हमरा के खरीदले बा ऊ क्षत्रिय ह । ऊ अपना लड़िकन का साथे तहरा के ना पढ़े दी । एह से जे तू शूद्र हवऽ । हम मजबूर बानी । तू पढ़ाई के आस छोड़ अपना घरे लवट जा । तहार एही में कल्याण बा ।''

''हमार श्रद्धा, विश्वास आ आस्था तीनो एक साथे टूटल रहे बाकिर गुरु का दिसाईं हमार प्रेम आउर बरियार भइल रहे ।''

निराश मन से जइसहीं हम आश्रम से लवटलीं फेरु ऊहे हल्ला, केहू थूक बिगत रहे, केहू पानी से आँख धोवत रहे, केहू कुल्ला करत रहे, केहू देह पर जल छिटके पवितर होत रहे ।

कुछ दूर तकले हमरा के भगावल गइल रहे जइसे हम कवनो घातक जीव होखी, लेलकारा पर लेलकारा, ढेला पत्थर, झटहा चला-चला हमरा के भगावल गइल रहे, फेरु हम कबो एने भुलियो के मत ताकीं उहे सब कहावत- बनेया ! !! !!!

सामाजिक न्याय के पक्षधर प्रतिपालक सम्राट से हमरा जवन इज्जत मिलल रहे, ईहाँ आके सब धूल में मिल गइल रहे । ओ हल्ला में आचार्य के आवाज सुनाइल रहे- ''सभे धनुसे बान चलाई त मछरी के मारी, जंगल से लकड़ी के तूड़ी, दूध के दूही, तेल के पेड़ी, हर के हॉकी, घर के बनाईं, टहल-टिकोरा के करी, हू....ह....ह.... ?''

अरे ! हमरा के जंगल में ले कुत्ता से नू लेलकरवले रहे सब

वाह रे आश्रम ! वाह रे आचार्य !! आ वाह रे शिक्षा !!!

बाकिर आचार्य जइसहीं हमरा गोसइत का मुड़ी पर हाथ धइले स्पर्श होते पहिले के सब दुतकार आँखि से प्रवाह बन के झड़झड़ बहे लागल रहे ।

हूँ..... ऊ..... उ.....

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com

पाँच

बिहान भइला बंदीघर से आचार्य के निकाल के राज-दरबार का न्यायालय में पेश कइल गइल रहे । *कदर के अधिकार बुझेवाला का कन्धा पर आडम्बर के लाश ढोआला ।* दिमागी दोष का चलते कबो-कबो ऊ सूतलो मनई के मुअले जइसन मान लेवेला, अचानक ओकर करवट फेरल देख के, एकर अन्दर ले हिल जाला तब पहिले के बेमारी एकरा के ओकर विरोधी, निन्दक आ घातकी बना देला ।

बिआ का खोल से निकलल बिरवा आ बिरवा से बनल गाछ ओ खोल में फेरु ना समाला । बीतल समय के घटना इयाद करे लाएक होला ऊहो अकेला में दुकेला में घटना के चर्चा त नून-मरिचा लेके चलेला । साँप का केंचुर से का मतलब, बाकिर केंचुर दोसरइत में भय आ रोमांच कुछ देर खातिर पैदा करा देला । सच सामने आवते भ्रम हँसी भा गुनावन में बदल जाला ।

जवना इयाद से मन जुड़ाला, निचिंता में ओकर फेरवट सुखद होला । जवना इयाद से मन छनक जाय ओकरा के मन हरदम ओदार के

www.bhojpurisahityangan.com

फेंके के चाहेला ओकर उकिटा-पुरान अकेलहूँ में दुखदायी होला । जइसे अन्न से स्वाद अलगा नइखे कइल जा सकत, जल से रस अलगा नइखे कइल जा सकत, हवा से गति अलगा नइखे कइल जा सकत, आकाश से सीमा अलगा नइखे कइल जा सकत, ओसहीं मन से इयाद के अलगा नइखे कइल जा सकत । इयाद त, तीनो काल के भ्रमण क्षणभर में क लेवेला । जागल सूतल भा करनिनिया में ओ ढेरी के बानगी कबो-कबो देखे के मिल जाला ।

इयाद का अँगनई में बिटोराइल घटन:न के झलक, निचिंता में बारी-बारी से लउके लागेला । ओह घड़ी कुछ दुअरो का दुआरी के दरमसत निकलेला त कुछ पछुआरी का केंवारी से लुकात सकुचात आ लजात । ओ घड़ी संयोग-वियोग, प्रेम-घृणा, हर्ष-विषाद सुख-दुख आ मान-अपमान जइसन मनोदशा के सोती अपने-आप मुख्य धारा से जुड़ेला भा छारन बनके रह जाला । आदमी का ऊ इयाद बड़ा नीमन लागेला जवना में ओकर मनमुराद पूरा होत होखे । ओकरा जीत भा बड़ाई के लेसो मात्र मिठास होत होखे । आदमी का ऊ इयाद तनिको ना सोहाय जवना में ओकर ललक लसराइल होखे। ओकरा हार भा हिनाई के जरको सा गमक आवत होखे । जवना घटना के मन आ मिजाज कोसो दूर भगवले रहता ओकर चर्चा यदि केहू बीच बाजार में ओकरा सामने क देवे त उहँईं जीवन भर के अदावत जनम ले लेवेला । दोबारा उनकर मुँह मत खुलो एकरा खातिर ऊ आग उठेला जवना में अगिलो पीढ़ी राख हो जाला । अइसन मनोवृति मानव इतिहास में कई बेर खतरा के घंटी बजवले बा ।

भावनात्मक रिश्ता अटूट होला बाकिर जब टूटेला त ओकर आवाज धरती से आसमान ले गूँज जाला, लौटती आवाज चिल्ला-चिल्ला कहेला, प्रतिशोध ! बदला !! निगार !!!

समय स्थान आ रोग विशेष में मीठा कहीं माहुर हो जाला । *सटीक मौखि:क आ आंगिक अभिव्यक्ति के बात अखज करा देला । साँच के सीमा होला । झूठ अन्तहीन होते हुए लखा जाला ।* याचना के स्वर अभाव आ दीनता से सराबोर होला । अधिकार युक्त अधिग्रहण के स्वर

www.bhojpurisahityangan.com

ओकरा के आदेश बना देला । अइसन स्थिति में पाता के सम्बोधन दाता पर कवन असर डाली ई समय का गर्भ में होला ।

आचार्य अइसन व्यवहार के अपेक्षा अपना दोस्त से ना कइले रहस । एतना बेइज्जती त आज तक उनकर कतहीं भइले ना रहे । लड़िका दूध खातिर तरसल, छपिटाइल, रोअल आ अन्त में सूत गइल, ओतना देर त चैन से रहनी, हँ गाल पर लोर के सूखल निशानी एगो कटार बनके जरूर इनका करेजा के घवाहिल कइलक बाकिर लड़िका जगबो करे त खेले में अझुरा जाय । ई पीड़ा या त ई अकेले भोगस भा दुकेला होके, कबो-कबो बाँट के हलुक क लेस, आज हई ई..... इ..... इ.....।

इनका के समझाओ जे *खोंता जोगावला से बगइचा बचावला में धरती आसमान जइसन अन्तर बा* अपना स्वार्थ के दिसाईं एगो तंत्र के लड़िकइयाँ मंत्र से उखाड़ल राज्य, राजा, व्यवस्था आउर ऊहाँ का प्रजा के अपमान कहाई ।

राजा का आसन पर बइठते कार्यवाही शुरू हो गइल रहे ।

न्यायधीश, आचार्य से पूछलें- "अतिथि ! राजदरबार का प्रवेशद्वार पर तहरा के केहू रोकल ?"

"हम ओकर बात काहे मानी । बहुत बरसन का बाद अपना मित्र से मिले खातिर चलल रहनी, हम अपना के रोक ना पवनी । दोस्ती में जे दीवार बने ओकरा के ढाह देवे के चाहीं, ना त लाँघ के लक्ष्य कावर बढ़े के चाहीं । भावना से बनल सम्बन्ध अटूट, भरोसामंद आ मददगार होला जवन दोस्तीए का दुनिया में मिलेला । हम एही विश्वास आ भरोसा से निफिकिर रहनी फेरु" ..... कह के आचार्य चुपा गइले । न्यायधीश फेरु पूछलें ।

"राजसिंहासन पर बइठल राजा के दोस्त आ दुश्मन के होला ?"

"चलल चालान आ चलेवाला चालान",

आचार्य कहलें ।

"राजसिंहासन का चारो पउआ के घुन का ह"

न्यायधीश तेज आवाज में पूछलें ।

www.bhojpurisahityangan.com

"पड़ोसी राजा के कुदृष्टि, प्रजा में असंतोष, दरबार में षड्यंत्र आ राजा के हैबत उठल" आचार्य के बात सुन के न्यायधीश राजा कावर तकलें ।

राजा अभियोग-पत्र बाँचे के आदेश दे देले रहस ।

सभा शांत हो गइल रहे जइसे सबकर साँस रोक गइल होखे ।

अतिथि राज्य में, चाहे दरबार में रार खानी ना त चोर खानी ढुकल हउएँ ।

इनका अनुमति लेवे के भा प्रतीक्षा करे के विचार तनिको नइखे ।

भरल सभा में राजा के बालसखा बताके, लड़िकइयाँ सुभाव का दिसाईं समय, स्थान आ पद के पहचान ना कइल, उद्दंडता भा लापरवाही के निशानी भइल ।

सभा में बिरजमान राजसिंहासन पर बइठल राजा ना केहू के दोस्त होला ना दुश्मन । ओह घड़ी राजा के दोस्त बतावल राजा के कद छोटा करे के दुस्साहस मानल जाई ।

भरल सभा में दोस्त कहके कुछ माँगल राजा का निरपेक्षता पर अंगुरी उठावला लेखा बा । अतिथि के ई भावनात्मक शोषण के गँव करार दियाता ।

आधा राज्य देवे के वादा कहके अतिथि एह राज्य के अपमान कइले बाड़न । जे अपना बच्चा खातिर एगो गाय के उतजोग नइखे कर सकत ऊ भला राज्य के उतजोग कइसे कर सकी ? ई बड़बोलापन, का सिवा कुछ नइखे ।

अतिथि, राजकाज में बाधा पहुँचा के जनता के अहित कइले बाड़न । राजा, प्रजा आ कानून का दिसाईं ई दंडनीय बा ।

राज, राजा आ कानून से अपना के लमहर सिद्ध करे खातिर दरबार में अतिथि के कइल व्यवहार अहंकार, उदंड आ अपना के सिरमउर बनावे के छद्म प्रयास बा, जवन कानून कावर से अक्षम्य अपराध बा ।

बे रोकटोक कहीं आइल-गइल जइसन नियम जाति विशेष ना

www.bhojpurisahityangan.com

समूह-विशेष का इच्छा का अनुरूप होखे के चाहीं, जवन एह राज में सर्वमान्य बा ।

मित्रता के रंग दोसर कवनो रंग से रंगफटू हो जाला । अतिथि का सुभाव से सोझे झलकत बा । दूनू के एके साथे साधल समूचा मानवता खातिर कहियो घातक बन जाई ।

राजा गरज के कहलें बस ! बस !! बस !!!

"तू ना दोस्ती लाएक बाड़ऽ आ ना दुश्मनी लाएक । *दोस्ती भावनात्मक मेल ह त दुश्मनी भावनात्मक दुराव ।* चालाक शत्रु नीमन बाकिर मूरख हीत ना नीमन । ना हम तहरा के पहिले से जानत बानी ना तहरा के हम आज जाने के चाहत बानी । आश्रम के संघतिया हमार अइसन होइये नइखे सकत । तू दरिद्र बाड़ऽ तहार बाल सखा केहू दरिद्रे हो सकत बा । जा ओकरे के बालसखा कहके अपना के चमकावऽ । अइसे पागल, बालक आ अशक्त आदमी क्षमा के पात्र होला ।" राजा गँवे से कहले "इनका के राज्य से बाहर क दियाव ।"

एतना सुनते आचार्य के खीस सातवाँ आसमान पर चढ़ गइल । प्रहरी का हाथ से जइसे ऊ छउक के छुट जइहें । ऊ राजा कावर खा जायेवाला नजर से निहारत आ चिल्लात जात रहस ।

"हमार ई अपमान तहरा बहुत भारी पड़ी । आज से तहार हम दुश्मन भइनी । *भाई के दुश्मनी कुल खाला बाकिर दोस्त का दुश्मनी में समूल जाला ।* तू आन्हर बाड़ ! दगाबाज हव ! घमंडी विश्वासघाती कहीं के !"

प्रहरी सब आचार्य के जबरन सभा से बाहर कइले रहे ।

अब इनका के के समझाओ जे व्यवहारे का कोख से दोस्ती भा दुश्मनी जनमेला ।

हूँ..... ऊ..... उ.....

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com

छव

आचार्य का साथे चलत किशोर, कबो अगुआ जाये त कबो पछुआ जाय । हालत का गहराई में टोकाटोकी बुझउअल बन जाला । बतकही का बेचैनी के लगाम अनुशासन ह । सुनेवाला के हूँकारी टिटकारी ह त चुप्पी चतुराई । परदा में रहस्य लुकाइल रहेला ओकरा के जान जाए खातिर मन एको धरीछन धरे से अपना के बाकी ना लगावे । सारा इन्द्रीयन के टिसुना ओ घड़ी टपरा हने लागेला । बाह रे परदा ! कतना भेद के लाज जेकरा में लुकाइल बा ।

किशोर का त अंजुरी में कुछ चाहीं जवन ओकरा लड़िकाईं से आदत लागल बा । वाह रे लड़िकइयाँ ! खेलत-खेलत में साँझ, साँझहीं से अंघुअइनी, ना बिछावना के चाह ना भुइयाँ लोटइला के आह, अंघी से मातल देह, दहिने बाँवे आगा-पीछा ढुल-ढुल जाता । आँख मुँदइले में कवर गटागट, माई के हाथ, पानी..... ना..... मारेब । कतना दुलार, कतना प्यार, कतना ममता ऊ का जानो । ई त फेरु सूत गइल, जो..... माने उहई लोटा गइल, उहँईं ओठंग गइल । बिहान भइला नूँ चिहाईं, ईहाँ कइसे

www.bhojpurisahityangan.com

अइनी, हम रात ना खइनी । हमार हउ द, कवन चीज ? नाम नइखे जानत बाकिर बेर-बेर माँगता; छरिआ गइल बा ।

सपना..... अधूरा खेल पूरा होता, लुका-छिपी, एक्खी-दुक्खी, चोर-चोर, पहरुआ पहरुआ, मरल-मरल, बैद-बैद, झगड़ा-झगड़ा, अमरूद के गाछ, पपीता के धब्ब, बाबूजी के डाँट, माटी के रोटी, माटी के भात, माटी के दाल, माटी के तरकारी, आरे ! तीत लागल रे !

ही ही ही..... हा हा हा.... माथ पर माई के हाथ, मद्धिम आवाज, सुतला में काहे दू तऽ बरबरात रहेला । टोटरम-काजर के टीका, हिनकर हेने बा, तरवा में, आरे हेदे ढोढ़ियो में, लहसुन का जावा के माला, डाइन झोंटा ना काटी, भकसाइन के नजर ना लागी, डीठ कट जाई, जगावला पर जागे, खेले खातिर भागे, चिहाइल बा, भकुआइल बा । संघतियन के लिलार देख के, आँख देख के, गरदन देख के ई का ले ! पिछकुड़िये हँसत हटता, आरे ! हमरो बा ! हमरो बा !! सभकर मिलजुमले हँसी ! ई सब के कइलक ? का जाने ? आरे ! भगवान जी, घाट्टा में आला, ना ढेरे ऊपर वाला, खेला ओरा गइल । अब घरे चलेके, ना धउरात से ।

भूख पेट में ना, मुँह में, हाऽ हाऽ मुँह बाके देखा देवे में समाधान के आसार । अकल में नकल, नकल पर नकल, कबो ना थकल । कथा, कहानी कहाउत, सुने सुनावे में ना केहू मयभाउत । बाह रे ! बचपन के दुनिया । अचम्भा, जिज्ञासा, बुढ़वा सवाल, लड़िकइया जबाब तन खुश ! मन खुश !! अगल-बगल सभे खुश !! जिया-जन्तु, पेड़-पौधा खुशे-खुश । ना चिन्ता ना फिकिर । आपन नजर आपन अखियान । एकेगो खुशी राजा के पास, एहिसे नूँ सारा दुनिया उदास ।

आज पहिले-ओहिले आचार्य का मुँह पर उदासी देखे के किशोर का मिलल रहे । आखिर पिताश्री का ई हो का गइल बा ? उनकर पीठ खून से तरबर भइल बा । के पीठ के घायल कइले होई ? पीठ देखावे वाला का नूँ पीठ पर घाव लागेला । जंगल में केहू से मुठभेड़ त ना हो गइल ह ? के अतना लमहर वीर बा जे पिताश्री का पीठ देखावे के पर गइल ह । ई माने लाएक बात नइखे, धरती पर बउरहउ के छोड़ के अइसन केहू वीर नइखे जेकरा सनमुख पिताश्री का पीठ देखावे के पड़

www.bhojpurisahityangan.com

जाय त फेरु ई पीठ खून से सराबोर कइसे भइल बा ? किशोर मनेमन गूँथत जा रहल बा । जंगल के राह, हो सकत बा कवनो गाछ-बिरीछ, पत्थर कन्दरा से घवाहिल हो गइल होखे भा कवनो मरखाह जंगली जानवर राह चलत पछकुरिये में प्रहार क देले होखे त इनकर दुलरुआ शिष्य ओ घड़ी कहाँ रहलन ह ? कुछ त भइल बा जरूर । पिताश्री अतना मनबेदिल कहियो नइखन लउकल । आज त तरहथी निकाले के कहते नइखन । किशोर का इयाद पड़ल, पिताश्री आँख मुँदवा दिहें, तब तरहथी पर कवनो फल मिठाई भा उपहार राखके पुछिहें, बताव जे तहरा हाथ में का बा । हम टो-टो के जबले सही नाम ना धरेब तबले आँख बन्द राखे के पड़ी । सही पहचान देते पिताश्री ठठा के हँसिहे आ खींच के करेजा से साट लीहें । हम अब आँख खोल के वस्तु पर आपन अधिकार पाके निहाल हो जाएब । आज त ना ओइसन मन लउकत बा आ ना ओइसन मिजाज । किशोर कवनो नया संदेह का सरेह में बतसल जाता ।

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com

सात

हमरा के पीठ पर धइले आचार्य अपना कमरा में ढुक गइलन आ भीतर से केंवारी बन्द क लेलें । गमछा कान्ह पर से उतार के कोना में रखल तिपाई पर ध देलें । गेठरी खोल के अब हमरा के बन्हन से मुक्त कइलें । हमरो जान में जान आइल । हिलडोल से अबलेक देह दरमसात रहे । अब हम तिपाई पर अस्थिर आराम पावे लगनी । सब कुछ कमरा में शान्त-शान्त रहे बाकिर आचार्य का अन्दर हलचल मचल रहे । दक्षिणा में लेहल ई अपूर्व वस्तु अब सइंती कहाँ, ई चिन्ता उनकर चैन छीन लेले रहे । वस्तु में देवे आ लेवेवाला दुनू के मान-सम्मान का साथे दिल आउर दिमाग जुड़ल रहेला । दुनिया के ई पहिला दक्षिणा रहे जवना के परिवार का सदस्य से लुकवले रहे के उतजोग होत रहे ।

वस्तु का गोसइत से वस्तु माँग के ले अइला में आ गोसइत कावर से वस्तु अपने से देला में, गरज-गरज के फेर होला । पहिलका चातक के तरस ह त दोसरका कोइल के फगुनई हरख । एगो सँईतेला त एगो बैना बाँटेला । एगो प्रतिरूप से जुड़ल बा त एगो प्रतिक्रिया से । कुछ

www.bhojpurisahityangan.com

दिन पेंड़ा जोहला पर एगो के फल समय पर निकलेला तऽ एगो के हाथो-हाथ । ई दक्षिणा हम माँग के नूं लेआइल बानी । एकरा के जोगावल हमार पहिलका काम बा । कहाँ रखीं जे ई पूरा सुरक्षित रहो । आचार्य कमरा के एक-एक कोना से धइले ऊपर-नीचा ताखा-पाखा सब निरेखत रहलें आ मने-मने सोचत रहलें ।

".....हँ ढुके वाला दुआरी का सामने राखेब जे आवत-जात में नजर पड़त रही बाकिर ना.....पूछा-पूछी होखे लागी । केकरा के कवन-कवन जबाब देब ? हँ... सूतेवाला कमरा में गोरथारी ताखा पर रख देब, बस खाली हमहीं जानेब आउर केहू ना जान पाई बाकिर झाड़ू लगावे का दिसाईं आचार्या सब जाने के कोशिश करिहें ना बतावला पर गृह-कलह स्वभाविक बा । बतावला पर का का होई कहल कठिन बा । पुत्र का ई बात कबहूँ ना जाने के चाहीं काहे कि हमरा एह स्वार्थ आ कठकरेजी के ई ग्रन्थी ओकरा में बढ़त-बढ़त आउर बेबिचारी हो जाई तब सर्वनाशो करे में ओकर दनाई ना दहाई ।"

"एह अंगूठा के गोसइत केतना भोला, निर्मल, विश्वासी, श्रद्धावान आ आस्थावान बा । ओतना सुधुअई, ओतना पवितर, ओतना साफ, ओतना विश्वासी, ओतना निफिकिर, ओतना सरधालू ओतना लगनशील, ओतना मेहनती, ओतना अमनखी आ ओतना वचन के धनी । उफ..... हम आज तक कवनो शिष्य के ना देखनी । धरती के ऊ एकसरुआ पहचान बा अगर सारा मूल निवासी अइसने मिलस त बिना लड़ाई-झगड़ा के सारा व्रात्य क्षेत्र हथिआवल जा सकता । *राजनीति के गगरी त सिसकी ना सहे, जहाँ दस-दस गो छेद होखे ऊ अमनिया जल कतना बंचाई ।*"

"गजब के सिद्धि, गजब के आवाहन, गजब के विसर्जन, गजब के टीव, गजब के शिव, गजब के भेदन, गजब के खेदन, धनुष-वाण बपौती, गजब के चुनौती, गजब के सफाई, गजब के फूर्ती ।

वाह रे ! वाह !!" इहे फूर्ती त एह दिव्य दक्षिणा में देरी ना होखे देलक । राय, बिचार आ सोचे के मोका त स्वार्थ के सीढ़ी तूड़ देला एहिसे *छल-प्रपंच आपन शिकार सनमत का सोझा जाहँईं ना देला ।* हूँ..... कहके आचार्य हमरा कावर तकलें । उनका नाक के स्वाँस हमार

www.bhojpurisahityangan.com

देह झकझोर देलक । उपर केतना शीतल, भीतर केतना आग ! आखिर साँस के ई गरम धाह कबले आवत रही ।

आचार्य हमरा के एगो माटी का कलसा में धरे के टिकावे लगले फेरु उनका तुरुते आभास भइल जे अतना दिव्य वस्तु कलसा में बन्द करे लाएक नइखे । ई त एकरा साथे अन्याय होई । आज ना त काल्ह सारी दुनिया जानी । आचार्य कुल जानी, सब विद्यार्थी जानीं । ईहाँ तक ले जे शरणदाता राजा, विरोधी हऊ राजवा आ ओकरा के भेजेवाला सम्राट । ई तऽ सभे जानिए जाई । ओकरा भक्ति आ हमरा जुक्ति के त इहे नूँ पहचान बा । एह दुनूं के प्रमाणित त इहे दक्षिणा नूं करी । ऊ अपना हथेली के कटल अंगूठा के कतनो देखइहें ओकर पुरवासाट तऽ हमरे लगे से होई । हमनी दुनूं का सिवा दुनिया के दोसर के जानत बा, एहि पुरवासाट का एवज में नूं उनका से एगो आउर बचन लेनी जे दू भाइयन का झगड़ा में तू केनहूँ से पाला मत गहिह । ए दिसाईं ए दक्षिणा के सईंतल, भविष्य के लक्ष्य सईंतला नियर बा । आचार्य चिन्तित भाव में कहलें-

"कवना अइसन चीज में, आ कवन अइसन जगहा एकरा के सईंत के हम निफिकिर हो जाएब ।" एकाएक उनका आँखि में चमक बढ़ गइल जब उनकर नजर एगो सीसा का बोइयाम पर पड़ल जवन रोशनदान पर बहुते दिन से पड़ल रहे । ऊ झट ओकरा के उतारे के उतजोग कइले । अब बोइयाम में संजीवनी सुरा का साथे हम उभचुभ करे लगनी । हमार दिव्यता पारदर्शी का साथे सूक्ष्मदर्शी आ दूरदर्शी हो गइल रहे, एने आचार्य सुरा साथे अपना के सहेज ना पावत रहस ।

हूँ..... ऊ..... उ.....

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com

आठ

राजपथ पर एकसरुआ चलत दुलरुआ शिष्य, खुशी का मारे छउकत रहस, उनका जिनिगी के जइसे सबसे लमहर साध पूर गइल होखे ।

हूँ .... बड़ा आगे बढ़ गइल रहलन ह, धइले ना धरात रहलख ई बनेचर । धधाइल मेट गइल नूँ । आरे ! एक दिन ई लुत्ती, अंगोरा बन जाइत आ अइसन लहोक लेसित जे लोक परलोक लेक लहक जाइत बढ़िया भइल जे आचार्य दुलार से दरमस देले ह । अब या त थथम जइहें आ ना त खढ़अगिया बनके उहईं अथ जइहें । तेज गइल, तवाजा गइल, साफ-सफाई के माजा गइल । आज बुझाइल ह जे युद्ध-कला के निपुन आचार्य बतकहियो कला के निपुन आचार्य बाड़ें । जंगल के गाछ-बिरीछ, जीव-जन्तु का साथे जवना के मात्र एगो हमहीं साक्षी बानी । *अपनापन रचके सनातन हरल, टटके ज्ञान से पहचान मरल, सीख अइसन जे लीख भुलाव, बात अइसन जे औकात लुटाव, बड़ाई अइसन जे जुक्ति फलो, कमाई अइसन जे भक्ति चलो, पहिले दिल पर कब्जा, दिमाग पर कब्जा,*

www.bhojpurisahityangan.com

फेरु देह पर कब्जा । अन्दर से ओकर मन अपने-आप चिल्लाए लागल समर्पण ! समर्पण !! सब कुछ समर्पण !!! *रोम-रोम जुक्ति का जाली में अझुरा के भक्ति का भकसी में मुक्ति के मार्ग माँगे लागल रहे* । वाह ! धन्य बाड़न आचार्य जे अइसन माहौल बना देले रहलन ह ।

प्रकृति आदमी के सब तरे बरोबर बनवलक बाकिर एह बरोबरी के आदमी पसन्द ना करे । ऊ कवनो-ना-कवनो दिसाईं अपना श्रेष्ठता के नाप-जोख कके संतोष पावे के उतजोग करे लागेला । अपना के लमहर बनावे खातिर दोसरा के छोट बतावे लागी । ओइसहीं अमीर खातिर गरीब, पबित्तर खातिर अछोप, चोख खातिर भोथर, सभ्य खातिर असभ्य आ नीमन बने खातिर बाउर बनावे के एको मोका हाथ से ना जाए देवे के चाहेला । आदमी के ईहे मनसा ओकरा के देवता बने से हरदम रोकले बा । अपना के आगे आ दोसरा के पीछे करे वाली नीति के रास्ता बस लड़ाई का मैदाने तक ले जाला बाकिर ऊ नीति जीवन में पग-पग पर जंग करेला । कलाई में तरहथी का बाद पाँचो उँगली आकार-प्रकार में एक-दोसरा से भिन्न बा बाकिर क्रिया करे में कबो भेद ना कइलक, चाहे क्रोध में तनल मुक्का भा चटकन होखो, चाहे प्रेमे में पगाइल लेन-देन । लोक-परलोक खातिर दान-उपदान होखो भा सेवा-समर्पण में सहयोग, फेरु साथ खातिर उठल हाथ के अंगुरी । ऊ सब कबो अपना में भेद-भाव ना कइलक । ना केहू लमहर, ना केहू छोट, ना केहू पबित्तर ना केहू अछोप । अंगुरी त अंगुरी से मिलके मुद्रायोग आ मुद्राचिकित्सा के जनम देलक जवना से मानवता आजो लाभ ले रहल बा । एह चमत्कार के आदमी कहिया समझी जहाँ सुख बा, शान्ति बा, सहयोग बा, सेवा बा आ सदाचार के आधार बा ।

दुलरुआ शिष्य के अब सब गतिविधि हमरो आभामंडल का दायरा में बा । अपना गोसइत से अलग होखे का पहिले हम इनका से आ इनका पहलवनवा भइया से मिल चुकल बानी, अब त हम गुरुगृह का ताखा पर रखल बानी ।

इनका खुशी के कइगो आउरो कारण बा । जहिया ई करतूत दुनिया जान जाई ढील त आचार्ये का माथ के हेराई आ काम सधल राज

www.bhojpurisahityangan.com

परिवार के । बिना हरे फिटकीरी के चोखा रंग चढ़ावे के ढंग, राजपरिवार बढ़िया से जानेला । आखिर अपमान का धधकत आगी में जरेवाला आचार्य के बचन फुहार त राजेपरिवार नूँ देलक, फेरु गाय खातिर तरसेवाला टिसुना के गोरस का नदी में नहवावेवाला त राजेपरिवार ह । जेकरा अन्न के कन्न ना मिलत रहे ओकरा अन्न के भंडार मिलल । पलानी, राजमहल में बास लेलक । आबाद होखे में कुछ बरबाद होखे के गिनती लोग करेला, आबाद होखे वाला ना । हम अतना मुँह मलीन आचार्य के कहियो ना देखले रहनी ह । दुलरुआ शिष्य आगे बड़बड़इलें ।

"नदी नहाए का दिसाईं एक दिन आचार्य के गोड़ एगो घड़ियाल पकड़ लेलक । सारा शिष्य ओह घड़ी उनका के अकेले छोड़ के भाग खड़ा भइल रहलें । हम अपना वाण से घड़ियाल के मार के आचार्य के रक्षा कइले रहीं । आचार्य नदी से निकल के हमरा के अपना छाती से लगाके दुनिया के सबसे लमहर धनुर्धर बनावे के आसीस देले रहस । आचार्य का ऊ हरदम इयाद बा, तबे नूँ तनिका सा इयाद दियावते अपना बचन के लाज राखे खातिर हमरा साथे चल के दक्षिणा में उनकर अंगुठवे माँग लेले हँ, अरे ! ओ दिन त हमार सारा वाणविद्या ऊ निषाद हमरे में घुसेर देले रहे । अचरज बा जे पहलवनवों भइया के बुद्धि हेरवा देलक, एकर मतलब बा जे ऊ युद्ध-कला का सब विद्या में निपुण बा तबे नूँ आचार्य अंगूठा लेवे का साथे एगो आउर बचन ले लेले ह, आव ना ! बनऽ धर्नुधर, बनऽ गदाधर, बनऽ तेगाधर, बनऽ भल्लवीर आ बनऽ मल्लधीर, एके दाँव में सब साफ ।"

बिना नोह दाँत के शेर,
लेड़ के भाला, लेंड़ के तलवार
लेंड़ के मुअरी गिरे कपार । कह-कह के दुलरुआ शिष्य मने-मने खूब अगरात अपना महल में ढुक गइलन । अब इनका के हम कइसे समुझाईं जे लेंड़ के मुअरी कपार थूड़े खातिर बाउर ना होला ।

हूँ..... ऊ..... उ.....

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com

नौ

आज रसोईघर में जेवनार बनावत आचार्या खुश नइखी । उनकर मन रह रहके काहे दू त अपने-आप उदास हो-हो जात बा । ऊ अपना भीतर बार-बार झाँके के कोशिश कर रहल बाड़ी । ए उदासी मन के उनका सोझा कवनो कारण तत्काल नइखे बुझात फेरु एकर कारण का हो सकत बा, उनका समझ में कुछुओ नइखे आवत । बेटा-भतार आँख का सोझा सभे बड़ले बा । छाँह देवेवाला राजोपरिवार मजे में बा, बड़की रानी के सयो बेटा, छोटकी रानी के दू तीन पाँचो बेटा सभे नीकेनाल बा । राज में ए घड़ी कवनो आफत-बिपत नइखे, प्रजा सुखचैन से बा, तबो आज काहे ऊपरी बेरा से मन उचाट जइसन हो-हो जात बा । कबो-कबो अइसन बुझात बा जे कवनो अनमोल जिनिस केहू के भुला गइल बा, ऊ हमरे घर में कहीं धइल बा । जिनिस वाला ऊ आदमी हमरा घर का सब कोना-कोना में ढबाइल चलत बा । सुबहा मेटावे खातिर बेर-बेर हम घरन में घुम-घुम आवत बानी । चुल्हा तर बइठते बुझात बा जे ऊ केंवारी का पाला तर लुका गइल ह, हम फेरु केंवारी के पल्ला हटा-हटा देखत

www.bhojpurisahityangan.com

बानी । हमरा तनिको चैन नइखे मिलत ।

मन भुलवावे खातिर आचार्या अपना बचपन का दुनिया में लवट गइल रहली । ओ घड़ी के एक-एक घटना उनका दिमाग में किताब का पन्ना नियर उलटाए लागल रहे-

"हमनी दू भाई-बहिन, माई के कुछुओ अता-पता नइखे । हमनी दुनू भाई-बहिन माई के टुअर कब भइनी स जानहुँ के कबो कोशिश ना कइनीसऽ । आश्रयदाता राजा का बाप के बाप हमनी दुनूं भाई-बहिन के दयावश पोसले पललें । हमार पिताश्री त राजकाज सम्भालहीं में रात-दिन लागल रहस । छोहगर राजा हमनी के जबतक खिआ ना लेस जबतक खास ना, सुता ना देस तबतक सुतस ना । सब परब-त्योहार पर कपड़ा-लत्ता का साथे कुछ-कुछ उपहार देहल कबो ना भुलास । एक तरह से छोहगर राजा हमनीए भाई-बहिन का नीने सुतस आ जागस । उनका अइसन करे के कारण हमरो बहुत दिन ले ना बुझाइल बाकिर तनी बुझनउक होते हमरो सब बुझाए लागल जे काहे हमनी पर ऊ अतना मोह-छोह करस । उनकर औरत उनका के संतान-सुख से जियते तरसा-तरसा मुआवत रहली । बड़ी बेकहली, बड़ी मनबढ़ू आ बड़ी निदरदी रहली । छोहगर राजा डर का मारे उनका के कुछुओ ना कह सकस । संतान का दिसाई उनकर जवन प्रेम, लगाव आ ललक रहे, वात्सल्य रसके ऊहे भरल गगरी रात-दिन हमनी का पीए का कामे आवे । छोहगर राजा, खखुआइल दुलार, हमनीए पर ढार के आपन जीव हल्का कऽ लेस । एसे उनका संजीवनी आ हमनी दूनूं भाई-बहिन का थांघी मिल जाय । *नैसर्गिक भूख, सुख का चाह में बादल नियर कहीं बरस जाला,* ठांव-कुठाव पात्र-अपात्र के भेद ओ घड़ी ऊ तनिको ना जाने । भइया पढ़-लिख के लमहर धनुर्धर आ नीति के कनुनिया हो गइल रहस । राजकाज में उनकर राय लिआए लागल रहे । राजा से लेके सभासद तक ले उनका कानूनी दाव-पेंच से चकित हो जाये । अब इनका फुरसत कहाँ

अचानक एक दिन छोहगर राजा के नजर हमरा पर पड़ल आ तुरुते घड़ी नीचा गड़ गइल । हम ना समझनी जे उनका अइसे काहे

www.bhojpurisahityangan.com

भइल, ओह घड़ी छोहगर राजा अपना महल में बेमार नियर रात-दिन पलंग पर हबकुरिये पड़ल रहत रहस । केतना ओझा-शोखा ज्योतिषी आ बैद्य अइलें-गइलें बाकिर बेमारी पकड़इबे ना करे । एक दिन फजीरहीं हमार पिताश्री अपना दोस्त का घरे गइल रहस, साँझ के उनका लौटते हमरा विवाह के चर्चा होखे लागल । आठवाँ दिन छोहगर राजा का महल से अपना एह आचार्य पति का साथे अपना ससुराल आ गइल रहीं । ईहाँ ना कवनो जीविका के साधन आ ना उनका विद्या के मोल, अभाव में जिनिगी कटे लागल, तले हई बबुआ हो गइल । खुशी से त घर भर गइल बाकिर हमरा छाती से दूध के सोतियो ना फूटल, अपना जीए खाए के इन्तजाम फेरु लड़िका खातिर दूध के जोगार ओह ! हमनी दुनूं बेकत के जिनिगी फिचकाल में पड़ गइल रहे, ओही में हउ निपुतरा राजवा..... ! सुने में आवता जे ओकरो बाल-बच्चा हो गइल, अब मरम बुझत होइहें ।''

किशोर का रसोईघर में ढुकते आचार्या का चिंतन के लड़ी टूट गइल । ऊ सामान्य होके तुरुते कहली, ''जेवनार तइयार हो गइल बा, अपना पिताश्री के जेंवे खातिर लिया आव बबुआ'' किशोर अपना माई के मुँह ताकत रह गइले जइसे बहुत कुछ कहे वाला के कंठ एकाएक रून्हा गइल होखे ।

''पिताश्री आज जेवनार ना लिहें । अपना शयनकक्ष में ढुकते ऊ ई बात कह गइले ह ।'' कहके किशोर कहीं दूर निहारे लगलें । सुनके आचार्या भीतर ले सिहर गइली । उपरी बेरा से उनकर मन जवन छनकल रहे अब ओकर उनका परतोत्तर मिल गइल । उनका जिनिगी के ई पहिलका घटना बा जे बिना इनका से बतवले आचार्य अपना शयनकक्ष में चुपचाप चल गइल रहस । जरूर कवनो बात से आचार्य का दुख पहुँचल बा। अगर तबीयत खराब के संदेह रहित त राजवैद्य के बोलावे के कहिते, जरूर कवनो दिल दहलावे वाला बात बा तबे नूँ आचार्य अपना के झट दे लुका लेवे के उतजोग कइले ह । आचार्या बेटा कावर निहार के कुछ आउर जाने के चहली, अब किशोर सहमते कहलक ''माई ! पिताश्री का पीठ पर गमछा के गेठरी में कुछ बान्हल रहल ह जवना में

www.bhojpurisahityangan.com

से खून चू-चू के उनका भर पीठे लाग गइल रलऽ । हम भय आ लाज से कुछ ना पूछनीहऽ । पिताश्री आज गुमसुम होके आवत रहले हँ आउर दिन नियर ना कवनो मनलगु बात आ ना घरकच बात कइले हँऽ । बस ! आवते अपना शयनकक्ष में ढुकिए गइले हँ ।''

आत्मीय संवादक्षय, संसय का शिखर से देयानत का दिसाई, मन के बाउर बिचार कावर बेसी दोल्हावे लागेला ।

हम एह माई बेटा के कइसे समझाईं जे कवनो पिंड का आकर्षण में जवन तरंग प्रवाहित होला ऊहे तरंग कहीं ना कहीं सब जीवधारी का दिल, दिमाग आ मन के झकझोरत रहेला, जवना के अगम जनावल कहल जाला । ई अगम आभास, त आज कइगो घर, कइगो राज्य आ ओहू साम्राज्य में नूं भइल होई ?

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com

दस

गोसइत का गाँवे गोचरो खूब होत रहे ।

बस ! दू-चार दिन के देरी बा, अब ऊ ईहाँ आवही वाला बाड़न । अब युद्धकला का सब विधा पर उनकर अधिकार हो गइल । मल्ल-भल्ल गदा आ तेगा में त पहिलहीं केहू बरोबरी ना करत रहल ह अब त धनुसो विद्या में उनका महारत हासिल हो गइल होई । सेनापति का साथे अब सम्राटो के हिया जुड़ा जाई । अब अतिक्रमण आ अधिग्रहण के नेत राखेवाला किनहूँ बाहरी भा सीवाना के राजा-महाराजा लोग के युद्ध का कवनो गँव से जबाब देवे में ई राज-साम्राज्य कूबत राखत बा । गाँव-नगर के लोग ई सब कह-कह के हमरा गोसइत के पहिलका बात इयाद करे लागल रहे ।

महानता का लड़ाई में जन्मजात महानता हमेशा ना जीते, कबो-कबो थोपल महानता ओकरा के पछाड़ देला, *थोपल महानता का प्रसिद्धि के चादर चारण सब का हाथ में जे होला,* एह मान्यता के ई लड़िका तूड़ दी आ सिद्ध क दी जे जन्मजात महानता काट के, छाँट के, छेद के भा

www.bhojpurisahityangan.com

घिस के जतना बेर छोट करे के उतजोग कइल जाई ऊ फिनीक्स चिड़ई अस अपना राख से फेरु जी उठी । प्रकृति में मौजूद सब तत्व आपन रिक्त होत अंश का मरम्मति खातिर फेरु पेठवन से कबो बाज ना आवे, एह पेठवन आ मरम्मति के हरानी, जब उ मेटावे खातिर जम्भाई लेवेले त आदमी अपना भाषा में ओकरा के आपन संहार कहे लागेला । तत्वन के संतुलित समझ, आवाहन, उपयोग आ समयास्थान विसर्जने गुरुता ह ।

तले दोसर गरोह बोल पड़ल-

"गन्तव्य पर पहुँचे खातिर आदमी, सवारी का जिम्मे शरीर के सउँप देला, ऊ भुला जाला जे शरीर में स्थित मन, गन्तव्य के कई बेर यात्रा ओतने देर में क लेवेला । ई बेचैनी शरीर में डाल के मन, कुछ सएकीए नूं करेला, जवना के केहू-केहू समझेला । समझे वाला मनई अपना बेचैनी के कम करे खातिर वाहन आउर यान अइसन चीज बना के दुनिया के आगे बढ़े में मदद कइलक ।

कर के सीखे में आ सीख के करे में बड़ा अन्तर होला । पहिलका में समयबोध भुला जाला त दुसरका में समय जल्दी ओरइबे ना करे । एगो अन्वेषक, आविष्कारक, अकिला, उकिती आ स्वयंसिद्धक होला त दूसरका दीक्षित, दिमागी, अनुगामी, कारीगर आ परभरित जइसन होला । पहिलका के पसिन्दा मूलवासी हवन जबकि दूसरका के अतिक्रमणकारी । एगो त्याग से जुड़ल बा त एगो हथिया लेवे आ भोग से । कके केहू पछुआ जाला, पटुआ जाला, सीख के केहू अगुआ जाला, हहुआ जाला ।

फेरु तिसरका गरोह से केहू बोलल-

रक्षा करे खातिर साँच, केहू के आधार बनल त हत्या करा देवे खातिर ऊहे साँच केहू के हथियार । सतीत्व का साँच से पतिव्रता जब पति का आयु के आधार खड़ा कइलक त ओही साँच के केहू हथियार बनाके उनका पति के हत्या करा देलक । उनकर कमी तोपे खातिर सती के सराप ओढले केहू कब तक पूजा पावत रही जबकि आमजन के मूल समस्या अपना उद्धारक के आजो लेक बाट निरेखत बा । जब-जब वर्गवाद स्वार्थी होला अपना के स्थापित करे खातिर अपना कोख से

www.bhojpurisahityangan.com

अपना लाएक शब्द भा सूक्ति के ऊ जनमावेला ओ घड़ी साँच के ऊ बलिवेदी पर चढ़ावल युक्तिसंगत सिद्ध करे के प्रयास करेला । आत्मवादी आपन आ अपना सभ चीज के सुरक्षा बदे साँच के सरूपो बदलत रहेला; कबो वचन से, कबो दान से, कबो सतीत्व से, कबो सेवा से, कबो प्रशंसा से, कबो बरदान से, कबो भक्ति से आ कबो त्याग से । ऊ प्रचलित साँच के समय-समय पर बड़ा उलटफेर कइले बा ।

जन-समुदाय में जवना के आदर्श बनावल जाय ओकरे आड़ में षड्यंत्र रचके विचारवाद आगे बढ़ावल जाय । कादो गैर का लड़िका के पटके में पीड़ा ना होला आ ना माया लागे, अइसन मानवीय गुनन के बदौलत जब सामनेवाला के आसानी से पटके के जुगुत भिरावल गइल बा त कवनो कीमत पर पटकेवाला का संस्कार के ई आदर्श होइये नइखे सकत । ई मूलवासी का दिल-दिमाग के उपज ह जवन हमेशा आदर्श का नाम पर लुटाइल बा, बरबाद भइल बा आ बदला में षड्यंत्रकारी दल एगो प्रमाण-पत्र देके उनका के ऐतिहासिक बता देलक । अनुयायी सब के लोर फेरु टपकते रह गइल ।

झुंड से एक आदमी निकलते कहलक- ई त ऊहे हाल भइल जे जुआ में सबकुछ हारेवाला के बाजी जीतेवाला मद पीया के उनका निवास ले पहुँचा देला । नशा का मद में चूर ऊ ना जाने जे ओकरा से उमेद राखेवाला घर-परिवार के का भइल ? नशा ओरइला पर सब लुटइला के भान होला तले त बहुत देरी हो गइल रहेला ।

गाँव-नगर के बतकही उठान पर रहे । जेकर जइसन सोच ओकर ओइसन बतकही । सम्राट का आवाहन-जग में जनता अपना के समिधा मान लेले रहे । मातृभूमि रक्षाव्रत लोग बार-बार दोहरावत रहे । केहू पड़ोसी भा बाहरी लुटेरा का हिम्मत ना रहे जे ऊ साम्राज्य कावर नजर उठाके ताक देस । युद्ध-कला के राष्ट्रीय प्रतियोगिता सालभर पहिलहीं सिद्ध क देले बा जे उनका (प्रतिद्वन्द्विता) बरोबरी के केहू नइखे, तबे नू सम्राट अपना हाथ से सिरमौर के ताज उनका मूड़ी पर सजवले रहस । सम्राट कावर से ई आयोजन साम्राज्य रक्षा के विशेष सेनानायक चुनही का दिसाई भइल रहे । इनकर स्वयंसिद्ध युद्धकला देख के सम्राट

www.bhojpurisahityangan.com

के मुँहबई आ गइल रहे । बरबस उनका मुँह से निकलल रहे- प्रकृतिपुत्र ! विलक्षण !! बेजोड़ ! दुलर्भ !! आउर आउर का का कहके सरहले रहस ।

सम्राट ओ दिन आउर खुश भइल रहस जे ई तेजस्वी युवक उनके अंगरक्षक के पुत्र ह जे ओही अभियान का उद्देश्य में शहीद हो गइल रहस । ऊ बार-बार एह संयोग के चमत्कार आ शुभ लक्षण कहके अपना फैसला के उचित ठहरवले रहस । सम्राट के जय-जयकार करत जन सैलाब कवनो आफत-बिपत से लड़े खातिर आपन कूबत देखवले रहे । अपना प्रसन्नता के आकार देवे खातिर सम्राट जब इनका के सेनानायक बनवले तब ई धनुष-वाण सीखे खातिर मास-बरस का छुट्टी बदे निहोरा कइले रहस । एह तेजस्वी वीर के 'समग्र युद्धकलानिपुण' विचार के सम्राट स्वीकार क लेले रहस । मातृभूमि का पुकार पर अपना जन्म देवेवाली माई के पँवलगी कके जंगल कावर निकल गइल रहस । बार-बार सबका सामने कहत जात रहस- प्रकृति का सब चीज में सब लूर भरल बा, ओही में वाणविद्यो के लूर बा । हम कठिन साधना आ अभ्यास का बूते सब सिद्ध क लेब । आँधी-पानी बिजली-बादल पहाड़-आधार, चमक, धुन्ध, घाम-छाँव, वन-निराव, राह-पेंड़ा, काट-कुश, आकाश-पाताल, अरिया-परिया, आँख-पुतरी सब में वाणविद्या के खजाना लउकत बा, ई कहते-कहते ऊ जंगल, घनघोर जंगल में अलोपित हो गइल रहस ।

एगो दोसर आदमी तुरुते बोल पड़ल रहे- अब त मास बरस पूजे-पूजे भइल बा । आज का तिसरका दिन सम्राट के एह गाँव-नगर में अवाई होखे वाला बा । डुगडुगी बजा के मुनादी वाला काल्हे कह गइल ।

अपना गोसइत का साथे जब हम रहनी एह गाँव-नगर का लोग के उनका दिसाईं प्यार-दुलार देखले बानी । उमिरदराज सब का आँखि से आसीस बरसे त एक उमिरिया सबका मुँह से सनेह । छपेलगर त उनका आदर्श के माथा पर मोटरी नियर ढोए में गौरव महसूस करे । दादी, चाची, भउजाई सब दूरे से बलइया उतारे त बहिन सब कलाई में राखी पर राखी बान्हे । सबकर एकेगो लक्ष्य रहे, मानवता का एह विलक्षण

www.bhojpurisahityangan.com

व्यक्तित्व से दीन-दुखिया का पीड़ा के हरन कर के सुख चैन के जिनिगी दियावत देखे के । अइसन बढ़िया काम में भला रोड़ा के अँटकाई । *विकास जवना गँव के सँकारे ओही गँव के अखियार कइल युगधर्म ह । परम्परा के पथिक पछुआ जाला, ठगा जाला आ ना त लुटा जाला* एह युगधर्म का चुनौती के पालन करे में हमहूँ अपना गोसइत के अइसन सहयोगी बननी जे हमार संधान देख के आचार्य बहुत देर ले गुमसुम भइले रह गइल रहस ।

हूँ..... ऊ..... उ.....

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com

ग्यारह

दुलरुआ शिष्य के गोड़ अब जमीन पर ना पड़त रहे । जतना जल्दी ई समाचार ऊ अपना पहलवानवा भइया लगे पहुँचा दिहें ओतने जल्दी दिल-दिमाग पर से ओ दिन का हार के भार उतर जाई ।

जब्बर के कानोकान क्षति अबर के आस ह, आँखों-आँख त हिच्छल पूरल, बशर्ते जे जबरा कहियो मरलहूँ होखे आ रोवहूँ ना देले होखे । खोंसी के बधिया बोका के बधाव ह । वाह रे क्रिया, कहीं अँजोर त कहीं अन्हार, कहीं उमेद त कहीं निराशा । अन्हार का कोख से अँजोर के जनम होला, अन्धकार त्रिकाल सत्य ह । आजो अन्हार आपन अस्तित्व कुछ देर खातिर मिटा के दुनिया के आगे बढ़ा रहल बा । आपन हरजा कके दोसरा के जोगावल शायद आदमी पहिले-ओहिले अन्हारे से सिखलक । अन्हार का कोख के दरमसत कवनो प्रकाशपूँज जब झलकेला, देखेवाला हरखित हो ज़ाला । प्रकाशपूँज का बुतइला का बाद चिथड़े-चिथड़े भइल अन्हार का कोख के फेरु जुटे के पीड़ा आज तक केहू जानहूँ के जरूरत ना बुझलक काहे कि अँजोर ओकरा नीमन लागेला । आज अन्हार

www.bhojpurisahityangan.com

के कोख चिथड़े-चिथड़े भइल बा । अँजोर दुनिया देखी बाकिर चिथड़े-चिथड़े करे के तोहमत के ली ? आचार्य आकि हम, सोच के दुलरुआ शिष्य तनि थकबकइले । हम काहे ? दुनिया के सब शिष्य गुरु से ऊहे चाहेला जवन हम चहले बानी । आसीस तऽ ऊहे देलें । हम त माँगहू ना गइल रहीं । एकर मतलब ई नानू भइल जे केहू के जार दीं आ केहू के भर दीं । ई कहीं ना कहीं उनकर भेद दरसावत बा । युग उनहीं के अन्हार सिद्ध करी जवन समय काल का दिसाईं उदाहरण बन जाई । कलई के त लोग रगड़-रगड़ खँखोर-खँखोर सतह के सच्चाई जनबे करी । ऊ सरसराइले उनका महल में ढूक गइलें आ जोर से पुकरलें !

भइया ! भइया !!

"बोलऽ ! अब का भइल ?" पहलवान भइया पुछलें ।

हउ जे बनवा में..... बनेचरा जे रहे.... बोलऽ ! बोलना !! का ऊ राजमहल कावर आवता ? घबड़ाइले पहलवान भइया पूछलें । अरे ! भइया ना, आचार्य त ओकर दहिना हाथ के अँगुठवे कटवा लेलन ह ।

-"ऊ कइसे ?" पहलवान अचरज से पूछले रहस ।

"का बताईं भइया ! आचार्य बात का लपेटा में अइसन धइलें जे गुरुदक्षिणा का नाम पर ऊ बिना सोचले बिचरले झट दे अंगूठा काट के दे दिहलस ।"

"अरे ! ऊ अंगूठा का भइल ?"

"आचार्य अपना घरे ले गइलन ह । दक्षिणा में मँगले बाड़न त ले काहे ना जइहन, ऊ आपन धर्म निबहलक ह त इनको त आपन ध र्म निबाहे के पड़ी । धर्म से हटते पराजय पांज लेला । दुनिया में अपना से हारल आदमी अपने आप मरल नियर होला । ई त चिन्ता के बात बा ।" पहलवान कहलें !

हँ ! तनि बिस्तार से बताव जे जंगल में का का भइल ह !

दुलरुआ शिष्य कुछ देर खातिर थथमा गइल रहस, फेरु बतावे लगलें.... ।

हमरा गोसइत के बहत लोर आचार्य अपना तरहथी से पोंछले, दया भाव से देखले आ माथा पर हाथ फेरत कहले रहस..... "एह विरान

www.bhojpurisahityangan.com

"जंगल में तू एकसरुआ बारऽ । संसार के छल-प्रपंच, हल्ला-गुल्ला, राज-राजनीति आ दल-बेदल से अनजान, तू तपस्वी माफित जिनिगी जी रहल बाड़ऽ । दुनिया का जानत बा जे जीव मात्र का कल्याण खातिर तू जाड़ा-गरमी आ बरखा सहत आपन भूख-पियास मारत आसमान के ओढ़न आ धरती के डासन कर के अपना धुन्ध में अपना के भुला गइल बाड़ऽ ? धन्य ऊ बाप-मतारी बा जे अइसन बेटा के जनम देले बा ।"

"कुत्ता का मुँह में तहार हऊ अस्त्रलाघव वाण के संधान अद्‌भुत बा । ई विलक्षणता हम अपना गुरुओ में ना देखनी आ ना हम अइसन संधाने कइनी, ई अति विचित्र बा । वाण-संधान में गणित के भाग-उपभाग जइसन महीन भेद जवन गुरु तहरा के सिखवलन उनका दिसाईं हम माथ नवावत बानी । रक्तपात विहीन तहार ई युद्धनीति दुनिया के एकलौता गंव बा । मृत्यु, अंग-भंग खून-खराबा भा कारागार विहीन दंडनीति धरती पर मानव संहार के रोकी । गलती पर खुद सोचे के मौका विचार के नया मुकाम दी । हम तहरा एह अहिसंक युद्धनीति के बड़ाई करत बानी ।"

"तू चाहे जवना उद्देश्य खातिर ई विलक्षणता, अपना कठिन साधना से पवले बाड़ऽ हम ओ उद्देश्य के पूरा होखे के कामना करत बानी ।" ई सब सुनके हमरा गोसइत के रोम-रोम जुड़ाए लागल रहे ।

आचार्य आगे कहलन- "तहरा के जे अइसन काम खातिर उकसवले होखे ऊ विचार बिन्दु के सिरिजे वाला जरूर बा । मातृभूमि का दिसाईं उनकर सुरक्षा के अंदेसा आदर करे लाएक बा । तू चाहे कतहीं रहऽ तहरा भीतर ई अँजोर हरदम बरत रही । तहार अद्‌भुत वाणविद्या देख के हम अचम्भित बानी आ तहरा से मिलके निहाल ।"

हमरा गोसइत में अपना आप के सउँप देवे के भाव अब उठान पर रहे । कवनो जमाना में रूप के वाण, संगीत के तान, नृत्य के चलान आ दही में चटान कतना रीसी मुनि का लक्ष्य के निनान क देले बा । *बड़ाई के लेवार, दुतकार का भंकार के तोप देवेला,* खँदढ़ल नू मुँह बा देला ।

आचार्य आगे कहले रहस- "विद्या एगो अइसन धन बा जवन

www.bhojpurisahityangan.com

केहू का झोरी में जा सकत बा । हम ओ घड़ी पल के जरूर प्रणाम करेब जे तहरा झोरी में ई दिव्य विद्या रख के काल का गणना में अपना के लगा देलक, ओ सब तत्वन के मत्रो, गणना लाएक बा जे तहरा काया का रचना घड़ी, बिटोरा गइल रहे । अइसने काल तत्व के मिलान नू विलक्षण मानव बनावेला जे युग विकास का साथे-साथे मानव विकास का कामे आवेला । आचार्य फेरु कहलन- "बिना गुरु के ज्ञान ना होला । साहचर्य गुरु का अभाव में मनसा गुरु के सँकारलो त गुरूता के एगो प्रकारे नू ह । हे वीर ! दर्शन श्रवण, मनन चिन्तन स्पर्शण आ कथन जइसन अभिक्रिया के स्मरण आ अनुगमनो के गुरुता के एगो अलम रूप मनीह ।

हे साधक ! ए दिसाई तहरा बाहर भा तहरा भीतर जवन गुरु के रूप बा ऊ प्रणाम करे लाएक बा । हम जाने के चाहेब जे ऊ कवन गुरु हवन जे अइसन दुर्लभ विलक्षणता के पहचान कके दुनिया का सोझा क देलन जहाँ संसार के सब भौतिक पदार्थ अपना-अपना हिस्सा पर गुमान कर रहल बा ।"

"हे धर्नुधर ! तहार धनुष-वाण आ तरकस प्रकृति के निचोड़ बा । मन के चाह आ मन का गति से लक्ष्य कावर बढ़े के एकर दमखम, दुनिया के नामी-गिरामी धनुसन से अपना खल के ई अपने बा । तहार ई चमचमात कटार केहू का एक नजर देख लेवे लाएक बा ।"

हमार गोसइत अब तन-मन से समर्पण मुद्रा में चलल जात रहस । *दुत्कार का कोख से पुरस्कार के जनम होखे का पहिले कहीं-ना-कहीं खतरनाक बाझ बन गइल रहेला जवना खंदक में गजराज तकले फँस जालें ।* ईहे ऊ क्षण रहे जहाँ हमार गोसइत दुत्कार का अमनख से उपजल जोश, बड़ाई का टाटी में खोंस देले । प्रतिस्पर्धा लगन, मेहनत आ धुंध के ताड़न ढकरपाँय हो गइल । हलुके आँधी झोपड़ी के खोपड़ी नियर उलिट देलक । मनलगु बात से ऊ भुला गइले जे जेकरा आँखी का सोझा उनकर एको बीध बाकी ना लागल ऊ अपना निर्माण के नपावे खातिर का ह जे ईहाँ ले आ गइलें ?

घिनई (भृंग) के गूंज त चुप झींगुर के प्रकृति तक बदलके अपना जाति के बना लेवेला जबकि झनकत झींगुर लगे ऊ जइबो ना

www.bhojpurisahityangan.com

करे । *जहिया मेहनत के मणि, बोली-भाखा समझे लागी ओ दिन मुकुट* के मोल आ महातम फेरु से समझे के पड़ी ।

बनावटी रंग अइसन उड़ल जे नैसर्गिक रंग तोपा गइल । गुरु के नाम पूछते हमार गोसइत आचार्य कावर इशारा करत उनका गोड़ पर गिर पड़लें । बंद दरवाजा अपने आप खुल गइल । *उमेद का अँजोर से घर भरल लउकल ।* ओ सुनसान जंगल में आचार्य चारो अलंग अइकत अपना के निरबाध पवले रहस, ना आगा के अगवइया ना पाछा के पुछवइया ।

ओ घड़ी हम अपना गोसइत का दिमाग से काम करत रही । आज हमार अलग अस्तित्व बा हमार जुबान बा । हमार चेतना बा, हमार भविष्य बा । हम देख रहल बानी जे तख्त आ ताज खातिर का का ना हो रहल बा । आज हम ई ताल ठोक के कहत बानी प्रकृति सबकर गुरु ह । सूरज के समय से उगे आ डूबे के लूर के सिखवलक । हवा के चौपाई बहे के लूर के सिखवलक, पानी के तरल बनल रहे के लूर के बतवलक, सागर के लहराए के लूर के सिखवलक, बीज के जामे के लूर के बतवलक, सब जीव के आपन प्रतिरूप पैदा करे के लूर के सिखवलक ? सूरज हवा पानी मिट्टी आ सागर केहू से भेद ना बरते । जाड़ा त सबका खातिर जाड़ा, गरमी त सबका खातिर गरमी, बरसात त सबका खातिर बरसात । आदमी के गुरुता जो नैसर्गिक रहित त विद्या वितरण में ऊ भेद ना बरतित ।

"हे एक जबनिया धर्नुधर ! जल्दी से जल्दी हमरा के गुरुदक्षिणा देके चेलवई के प्रमाणित करवा ल । एह मंगल मुहूर्त के बाँव मत जाए द, जल्दी कर । हम वापस लौट के फेरु ना आएब ।" उनकर दुलरुआ शिष्य उनका हँ में हँ मिलावत रहस ।

हमार गोसइत दिल खोल देले रहस । "हे आचार्य ! अइसन कवनो चीज हमरा लगे नइखे जवन हम रउरा माँगला पर ना दे सकीं । रउरा मुँह खोल के त देखीं", फेरु मने-मने कुछ ऊ सोचत, कुटिया का चारो अलंग निहारे लगले । धनुष वाण तरकस जलपात्र आ कुशासन का सिवा उनका ऊहाँ कुछ ना लउकल । हमरो इयाद बा उनकर दिमाग ओ घड़ी बड़ी तेजी से वस्तु के गिनती करत रहे । हाथी के गजमुक्ता, पहाड़

www.bhojpurisahityangan.com

के मणि,, वेणुवन के बँसलोचन, समुद्र के मोती, रत्नगर्भा के लाल, तक्षक के मणि, हम बात के बात में ला सकत बानी । फेरु मृगचर्म, व्याघ्रचर्म, गजचर्म, गोहचर्म अजगरचर्म आ साहिलचर्म लावल हमार बायाँ हाथ के खेल बा । हँ ! मोरपंख, चील्होर पंख, सुग्गापंख, हंसपंख, कोयलपंख, बाजपंख, नीलकंठ पंख भा कवनो पखेरू के पाँख भा शंख सीपी सितुहा कौड़ी भा समुद्र के कवनो दुलर्भ रत्न हम पलक गिरत आन के दे देब ।''

''जंगल से सुगन्धित लकड़ी, हुमाद, शुद्धिकरण मसाला मांस, फल जड़ी-बूटी मधु भा आउर कवनो जंगली दुलर्भ फूल पत्ती हम चुटकी बजावत बिटोर लेब । हवा के रूप, जल के रस, अँजोर के मोटरी, धरती के शक्ति आ आकाश के इच्छा निकाल के हम ले आ सकत बानी । आचार्य आदेश त करी । हँ ! अन्न खातिर घरे जाएब, धन खातिर अपना सामाजिक न्याय के पक्षधर प्रतिपालक सम्राट का लगे, बस ! गुरुदक्षिणा खातिर आचार्य के मुँह तऽ खुलो, पलक गिरत वस्तु ईहाँ का हाथ में .....*पेन्हान, गुदगुदी से तरतरा जाला दुहाव का अभाव में तऽ दूध अपने आप चुए लागेला* । आचार्य फेरु चारो अलंग निहरले रहस, तब हमरा गोसइत से पुछले-

तू देवे के संकल्प ले लेलऽ ?

हँ ! ऊ कहलें ।

पक्का ? आचार्य मुँह निरेखत पूछले ।

हँ ! हँ !! जोर देत हमार गोसइत कहले

तू एक जबनिया हवऽ ?

हँ ! आचार्य ! अपने का मुँह से निकलल बात सदा सत्य बा । आचार्य के भौं तन गइल । मुखमंडल लाल हो गइल । आवाज भारी पड़ गइल । ऊ टएट खड़ा हो गइले आ अपना दुलरुआ शिष्य कावर तकले, फेरु अपना के सामान्य बना के मधुर बोली में कहले-

प्रसन्नता का साथे त्याग, उत्साह का साथे समर्पण, धीरज का साथे सहाउर आ संतोष का साथे उत्सर्ग के मुद्रा में गुरुदक्षिणा देके हमरा से तू आसीस ले सकेलऽ । बोल ! स्वीकार बा ?

www.bhojpurisahityangan.com

हँ ! हँ !! स्वीकार बा । गुरुदक्षिणा बदे आदेश त करीं, हमार गोसइत उत्साह का आकाश से बोलले । आचार्य बिना देरी कइले तुरुते कहलें-

"गुरुदक्षिणा में तू अपना दाहिना हाथ के अँगूठा अपना कटार से काट के हमरा के दे द ।"

बस, आदेश भर के देरी रहे । दू-चार बेर धरती पर कूदुक के हम गिर के काँपे लागल रही । जल थल आ नभ से बरजे वाला सब जियाजन्त ई का भइल ! ई का भइल !! कहके आश्चर्य से चिल्ला पड़ल रहे । भुइयाँ पर हमहूँ कूदत ई का भइल ! ई का भइल कहले रहीं । सुर में सुर मिल के गूंज गइल धरती से आसमान तक, बाकिर जबाब देवेवाला केहू ना रहे । कुदुक के जब हम शान्त भइनी तब आचार्य का मूर्ति के मुँह झवाइन भइल देखले रहीं । ई सब दुलरुआ शिष्य का आँखी का सोझा भइल । हमरो के ऊ नियरा से जानत बाड़न, आखिर अपना के ऊ सर्वश्रेष्ठ धर्नुधर कइसे कहिहें ? बाकिर ऊ कहिहें, उनकर समाज कही, उनकर कवि लेखक आ नीतिकार कही ।

दुलरुआ शिष्य जोश में फेरु पहलवान भैया से कहलें- "कांट निकल गइल, मन का अब चैन मिली ।" कुछ सोचत फेरु कहले- "हँ ! इयाद पड़ल, आचार्य एगो आउर बात के कउल करार करा लेलन ह....।"

पहलवान पूछले- ऊ का ?

दू भाइयन का झगड़ा में तू केनहूँ से मत बोलिह, चाहे ऊ चचेरा, मौसेरा, ममेरा, फुफेरा भा गुरेरा भाई काहे ना होखे ।

ई सब सुनते पहलवान का चित्त में फिकिर के कइगो फोड़ा बनल आ फूट गइल । थरथरात दीया का टेम्ह पर एकटक ताकत ऊ कहले- "नीमन ना भइल ह, आखिर आचार्य एह राज्य में चाहत का बाड़न ?"

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com

बारह

आचार्य का आँखि नीन नइखे । निसबद रात में ऊ बेर-बेर बिछावन पर उठके बइठ जात बाड़न । करनिनियो में उनका चैन नइखे । उनकर पुत्रमोह उनका के अहजह में डलले जाता, उनका बुझाता जइसे कवनो तारा के पीठ सियाह भइल जाता । अरे ! ऊ सियाह रंग अब पसरे लागल, देखते-देखते ओ तारा के सुभाव ग्रह नियर बन गइल । रूप बदल गइल, सुभाव बदल गइल; अब जाति का दिसाई नाम बदल गइल । *दृष्टितंत्र आ श्रवणतंत्र के दोष मतिभ्रम जइसन बेमारी के पहिला लछन ह* । आचार्य अपना के झकझोर देलें । ई लसी हमरा कहाँ से लाग गइल ? कुछ देर बाद दोसरे झलक उनका लउकत बा । उनकर किशोर आदतन उनका सोझा हाथ पसरले बा । ओकर दुनूं आँख बन्द बा ऊ बाट जोहत बा अपना सधोर के, जे कब पिताश्री सधोर तरहथी पर रखिहें । ऊ मने-मने मुसकात बाड़न । *धीरज का धार पर प्रेम आ लालच दुनू का चले के पड़ेला* । अरे ! ई का ? हमरा लड़िका का हाथ में त अंगूठे नइखे । हम त वनवासी का हाथ के अंगूठा कटववनी, हमरा लड़िका के

www.bhojpurisahityangan.com

अँगूठा कइसे कट गइल ?

आचार्य के बेचैनी अब देखे लाएक बा, इहे बेचैनी त हमरा गोसइत का गाँवे भइल होई ! उनकर करनिनिया अब बिनिया करे गइल, ऊ बिछावन पर से उठके हमरा कावर निहारत बाड़न । उनका आँखि में हमरा दिसाई घृणा, अचरज, क्रोध आ प्रतिशोध लउकत बा त छोहगर राजा का दिसाई कृतज्ञता, समर्पण, त्याग आउर आज्ञाकारिता । फेरु अपना दिसाईं अघोर, अनर्थ अपयश आ पश्चाताप । बाह रे ! क्रिया के फल । अब निसबद रात में सुरा के सुर बड़बड़इनी में बदलल जात बा । *नशा गरीब के गवाह त धनिक के धाक* ह, धइल पासा जब फेंकेला त होशगर ओके संईत लेला बाकिर निफिकिर भुलवा देवेला । आचार्य चाहियो के हमरा से आपन पिंड नइखन छोड़ा सकत ।

हम बानी बोइयाम में, बाकिर ब्रह्मांड से जुड़ल बानी । काहे कि अब हम उनका मूंड में बइठ गइल बानी । आचार्य अब जोर-जोर से बोले लागल रहस ।

ता जिनिगी जवना से हम बचत रहनी, ऊहे ईहाँ कपारे पड़ गइल ।

व्यक्ति विशेष पर लागल कलंक, ओकरा अपने भुभुते के पड़ेला, बाकिर पेशा विशेष पर लागल कलंक समूह विशेष का भुभुते के पड़ेला । पूरा देह जइसे घवाहिल अंग का चलते सिहरावन हो जाला, ओसही पेशा पर लागल कलंक पेशादार के लजकोंकर बना देवेला । गभियाँव त जीयते खोर-खोर खाला । खोबसन से एकाग्रता जात रहेला जवना से कौतूहल, उत्सुकता आउर जिज्ञासा सुस्त पड़ जाला । फेरु अन्वेषण आ आविष्कार के कूबत गँवे-गँवे मर जाला ।

हम अचरज में पड़ल रहनी आखिर का भइल ह- जे आचार्य के मुँह बन्दे नइखे होत । तले ऊ खीसी काँपे लागल रहस आ चिल्ला चिल्ला बोले लागल रहस-

"भेदिए के कहनाम ! भेदिया के कहनाम !! त हम का करी ? राजदुलरुआ लोग के जंगल में बनवासी से अझुराए के हमहीं कहले रहीं ? हमहीं कहले रहीं जे अज्ञात कुल शील का लड़ाकू के लेलकरिह ?"

www.bhojpurisahityangan.com

राजाज्ञा ! राजाज्ञा !! राजाज्ञा !!! धत् तोरी के राजाज्ञा ? अपमान के निगार वर्तमान खातिर, चिन्ता से मुक्ति भविष्य खातिर आ धाक के धसोरा भूत खातिर, हमरा जंगल में जाके देवहीं के पड़ी । कादो हमरा बहाली के उद्देश्यो बस अतने भर बा, हूँ....

ह पेचकस में पड़ल आदमी कतहीं आ कबहूँ लगा दियाला । राजसिंहासन तक जाएवाला डगर अगर उबड़-खाबड़ बुझाय त किनहूँ का भावना के भुरकुस कके समतल बना दियाला । राजदरबार से ईहे फैसला आइल रहे ।

अचानक आचार्य के चेहरा रोवाइन हो गइल । "उफ् ..... लड़िकन के झगड़ा लड़िका बनके छोरावल जाला । *झगड़ा निपटावेवाला दूत जब अपना पंवरूख, पद, पहुँच आ प्रतिष्ठा के अगुआन बना देला त ऊ पंचइती ना पछपात हो जाला, बस ! समाधान का आड़ में व्यवधान के उपनेत गँवे से हो जाला । हम बीच में गुरूता के डालके जुलुम क देले बानी, पता ना कवना लड़ाई के पहिला आहूति हमही हवनकुंड में डाल देनी उहो छल से ।"*

"राजसिंहासन एकबग्गा होला, महत्वाकांक्षा, अइसन जे निर्ममता से सब सुन्दरता, अपना फाँड़ में समेटले रहे के चाहेला । बिबस कके अबस धराला ना त दिन दुनिया सब से जाला ।"

अतना कहते-कहते आचार्य लड़खड़ा गइलन । उनकर हाथ बोइयाम पर पड़ गइल । अड़ान मिलते सम्भल गइलन ना त बिछवना पर से मुँहकुड़िये गिरतन । बोइयाम का हिलला से हमहूँ हिलडोल हो गइनी । ज्ञान का गति मिलल; कइगो नया दरवाजा खुल गइल, ओह ! का आचार्य सचमुच विवश भइल बाड़न ? हमार विच्छेदन षड्यंत्र ह आकी गुरुदक्षिणा, महाभ्रम । जबाबदेही मिलला का बाद दोसर गँव काहे ना अपनवले ? राजपरिवार का मंत्रणा भा आदेश पर आचार्य कबहूँ ना-नुकुर कइले बाड़न आ कि ना ? एह सारा सवालन के जबाब भविष्य का अँतरा में बा । अरे ! ई का ? आचार्य अब हमरा लगे बइठ के कलपत बाड़न । "हमरा के तू माफ क दीह, ई बात ना हमार बेटा जानो आ ना ओकर माई । हमरो के तू एह हिनाई से बचा ल । जीवन में दोबारा अइसन गलत

www.bhojpurisahityangan.com

काम अब हम ना करब । देख ! अब हम कान पकड़त बानी ।'' अतना कहते नसा से मातल आचार्य बिछावन पर से छब्ब दे भूईयाँ पर गिरके निसबद अंघी का कोरा में समा गइले ।

आदत का अखाड़ा में जब दारू दोबारा उतरेला त अपना हार के लाज पचावे खातिर कई खल के भगल पसारेला ।

निसबद रात में आचार्य के शरीर अब बेसुध पड़ल बा बाकिर चेहरा के भाव दिमागी उथल-पुथल के ऐनक लेले घूमत बा । हमहूँ त अब तन-मन से थाकिए गइल बानी । ओहू में रह रहके टटका घाव टीसे लागत बा, आ ना त इनका दिमाग में चलत बात बतइतीं चाहे ऊ सपनो के काहे ना होइत । हँ बीच में जो कहीं अंघी टूटल त आगे के हाल बताएब, तले शुभ रात्रि ।

हूँ..... ऊ..... उ.....ु.....

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com

तेरह

भोर होखे में अबही देरी बा । वातावरण में कवनो सुगबुगी नइखे बाकिर बोइयाम में हमरा हलचल बुझात बा, ई हलचल हमरा अन्दर एगो अजबे बेचैनी पैदा करत बा । एह बेचैनी में अन्हार, अफसोस आ अलम्म बिना भइला के पीड़ा, काहे दू त घुमड़िया-घुमड़िया के आवत बा ? रह-रह के सारा तन्तु हमरा देह के झनझना जाता जइसे हमरा के केहू इयाद करत होखे । *नाता आ नेत दूरो रहके व्यापेला* । हमरो, ई अब बुझात बा । ई अगम हमरा गोसइत के त ना ह ? ऊ अबही जंगल में बाड़न आकि गाँवे लवट गइलन, अब ई जानल बड़ा जरूरी हो गइल बा ।

अरे ! गाँव में त आपात बइठक चल रहल बा । सम्राट उच्च आसन पर बिराजमान बाड़न । सभासद सब आ जनता-जनार्दन से सभा खचाखच भरल बा । केहू का मुँह से बकारो नइखे फूटत जइसे सबका के काठ मार देले होखे । ईहाँ तक ले जे सम्राटो भकुआ के चुपचाप चारो अलंग निरेखत बाड़न.... सबकर चेहरा एके गो बात बता रहल बा आधार के, विश्वास के, भरोसा के, भविष्य के, सुरक्षा के आउर सनातन

www.bhojpurisahityangan.com

सोच के अब का होई ? अचानक सभा में हलचल मच गइल । सामने वाला दरवाजा से तरहथी पर पट्टी बन्हले हमरा गोसइत के आगमन जे हो गइल । सम्राट सामने वाला आसन पर बइठे के उनका के इशारा कइले आ प्रमुख-प्रमुख सभासद कावर तकले जे सभे जन समुदाय के निरेखत रहे । खुसुर-फुसुर अब साफ सुनाए लागल रहे..... ।

महाछल ! महाप्रपंच !!

घोर अन्याय ! घनघोर अन्धकार !!

प्रतिभा लूट ! विलक्षणता लूट !!

महाघोटाला ! महाकबूतरबाजी ।

इन्द्रजाल ! महाजाल !! छनहरल ! हँ-हँ छनहरल !!

अपना के सभ्य कहेवाला के असभ्य करतूत । आर्य कहेवाला के आर्येतर व्यवहार छी....छी !! जइसन गोचरो जोरो पर रहे ।

सम्राट का सयकी से सभा शांत हो गइल ।

सारा लोग के निगाह अब हमरा गोसइत पर ठहर गइल बा जे घाम आउर छाँह के संगम पर अपना के खड़ा क लेले बाड़न ।

मानव-निर्मित विधान जे बिना गुरु के ज्ञान ना होखे ।

एह काल में, ए सिद्धान्त के तू एकसरुआ अपवाद रहल ह, ई उदाहरण आज समाप्त हो गइल । एह संबंध में तहरा का कहे के बा ?'' सम्राट के घाटा घहरावत अभूतपूर्व सवाल सुनके सभा सन्न रह गइल ।

''हे सम्राट ! आदमी का जीवन में पहिले आवश्यकता आइल तब फेरु ज्ञान ! जब आविष्कार के जननी आवश्यकता ह तब ज्ञानो के जननी अविष्कारे नूं ह, जवन बुझनउक होके विज्ञान हो जाला । माई का आगा ममहर के बड़ाई करत-करत कुछ लोग माई के पूछ, छूँछ क देवेला । हम जहाँ खड़ा रहीं, आजो बानी आ काल्हो रहेब ।''

सम्राट के अगिला सवाल तीर लेखा निकलल-

''गुरु का दिहल ज्ञानो से त आवश्यकता पूरा होला फेरु आवश्यकता-आवश्यकता में भेद काहे ?''

''हे प्रकृति के पहरुआ सम्राट !''

जागल आवश्यकता आ जगावल आवश्यकता का सिरिजना में

www.bhojpurisahityangan.com

अन्तर हो जाला । पहिलका के सिरिजना विभिन्नता में विचित्रता लेले होला त दोसरका के सिरिजना अनुरूप आ प्रतिरूपे भर ले होला । पहिलका के फैलाव लगातार जारी रहेला त दोसरका के फैलाव घेरा का भीतरे रहेला । पूर्णविराम के एगो कबहूँ ना सहे आ एगो में पूर्णविराम का बाद जगहे ना रहे । प्रकृति के निर्माण विभिन्नता का साथे विचित्रता के निमाहेला जबकि आदमी के निर्माण नाप-जोख आ मिलान के मुँह निरेखेला । प्रकृति का दुनिया में सिद्धान्तों के सिद्धान्त बा जबकि आदमी का दुनिया में सिद्धान्त के अपवाद बा ।''

''हे सर्वश्रेष्ठ ! हम प्रकृतिसिद्ध हँई, गुरु-सिद्ध हम हइले ना हँई ।''

''त फेरु एह गुरुदक्षिणा के औचित्य का बा ?''

सम्राट के छातीफाड़ सवाल रहे ।

हमार गोसइत कुछ देर खातिर चुप बाड़न । चारों अलंग निहारत अब ऊ गँवे-गँवे फरिछ होत आसमान कावर तकले आ सम्राट कावर मुँह कके बोले लगले ।

''हे सम्राट ! सत्ताधारी वर्ग के बनावल कानून ओकरा व्यवस्था आ मन-मिजाज का अनुकूल होला । व्यवस्था बनवले रहे में मन-मिजाज के इचिको चूक भा मन-मिजाज बनवले रहे में व्यवस्था के इचिको चूक प्रचलित कानून के नेत आउर नियत बतावे लागेला । बटखरा पसंगा केंरी भा तउल के धोखाधड़ी समाज का सोझा ले आवे खातिर केहू-ना-केहू का त सोझा आवहीं के पड़ी आ एकर जोखिम उठावहीं के पड़ी ।''

''हमार गुरुदक्षिणा ओही तउल के गड़बड़ी भा धोखाधड़ी देखावे खातिर बा ना कि गुरुभक्त कहाए खातिर ई समय बताई !''

सटीक उत्तर खातिर सम्राट के एगो आउर सवाल उछलल- ''दक्षिणा लेवेवाला दक्षिणा के हवेखेला । तृप्ति का बाद दाता के एकबाल मनावेला ए बारे में आचार्य के कुछ मनसा जनलऽ ?''

''ई आचार्य का ऊपर निर्भर करत बा । हम त उनका के संगिरहा से अंगूठा गमछा में बान्हत देखनी आ कल्याण हो । कल्याण हो कहत आँख से ओझल हो गइलें ।

www.bhojpurisahityangan.com

हे सम्राट । ऊ काल, ऊ समय आ ऊ परिस्थिति हम उनका पर निछावर क देले रहीं । गुरुदक्षिणा में मिलल सामान के हवेखल भा सुरक्षा कइल त उनकर जबाबदेही बा । जबाबदेही से विमुख आदमी दुनिया में गलत उदाहरण बनेला । देवेवाला वस्तु का सद्गति के इच्छा करेला भा ओने से मुँह मोड़ लेला बाकिर लोग के मुँह दाता आ पाता का मनसा का बारे में समय-समय पर खुलत रहेला जवन परदा का भीतर के साँच होला ।''

लागत बा सम्राट के सब सवाल वर्तमान का पीठ पर चढ़के भविष्य खातिर जइसे कुछ तलास रहल बा । ओ व्यापारी के विवशता कवनो व्यापारिए समझ तकत बा जे व्यापार का सिलसिला में कवनो गिरहकट ओकर लाल उड़ा लेले होखे । ऊहाँ संदेह आ जिज्ञासा बेचैनी में, निदान के नादान बना देवेला ।

सभा में खुसुर-फुसुर शुरू हो गइल बा । हमार गोसइत अचरज में पड़ल बाड़न तभी सभा में एगो आम नागरिक सम्राट के निरेखत खड़ा हो गइल ।

''क्षमा हो सम्राट ! क्षमा हो सम्राट !!'' कहके निधड़क गाभी का आवाज में बोल पड़ल ।

''कल्याण हो ! कल्याण हो !! कल्याण त गमछी का खूँट में बान्ह के चल दिहल ऐ आचार्य, कल्याण अब का खाक होई ? सर्वहारा के सामूहिक संहार करके अमरता के एगो उदाहरण पड़ोसल, धूर्त व्यवस्था के अचूक चाल ह, जवना राहे लुटाए वाला के लड़ी लागल रहो । बाह जी बाह !!''

सम्राट सयकी से बइठे के इशारा करत बाड़न । नागरिक ओरहन के भाव लेले बइठ जात बा । सभा में शोरगुल बढ़ल जात बा । सभे कुछ ना कुछ कह रहल बा बाकिर सबकर लहजा ओरहन के बा । सम्राट के ओठ हिल रहल बा बुझात बा फेरु सवाल आई, हमार गोसइत सम्भल रहल बाड़न ।

''समय, काल आ परिस्थिति, प्रशंसा भा गाली से आपा खो देवेला, तहरा पर कवना के असर पड़ल जे तू सब कुछ भुला गइलऽ ?''

www.bhojpurisahityangan.com

"प्रशंसा के ।"

"हम अब जननी ह जे *सवारथ का नदी पर प्रशंसा* के पुल *बन्हाला* । सनातन से जेकरा के जाति, वंश, पेशा, रंग, सुभाव आ कदकाठी का दिसाई अधम, उपेक्षित आ तिरस्कार के गारी पाड़ल गइल बा प्रशंसा के शिकार ऊ जल्दीए हो जाला आ बड़ा आसानी से ओ नदी में गच्चा खा जाला । जे ए विधा के खेती करे के जानत बा आजो नया-नया गँव से ऊ फसल काट रहल बा ।"

गुरु, गुरुभक्ति आ गुरुदक्षिणा के प्रचलित मान्यता पर हमरा गोसइत के सुनल, देखल आ भोगल अनुभव जानके सम्राट पूरब दिशा कावर निरेखे लगलें जहाँ आसमान में धाही देत बाल सूरज के कवनो करिया घाटा तोपले आवत रहे । अब उनका लगे कवनो सवाल ना रहे जबकि हमरा गोसईं त लगे एह कपटी व्यववस्था बदे ढेरे जबाब रहे । अब सम्राट हमरा गोसइत के पीठ थपथपावत बाड़न जवना से उनका चेहरा के चमक आउर बढ़ल जाता । आज धरती कुछ देके मालामाल हो गइल जबकि सब लेके आसमान कंगाल हो गइल । जय हो ! जय हो !! का उद्घोष से सभा विसर्जित हो रहल बा । गन्तव्य कावर लोग बँटाए लागल अरे ! आचार्य त भुंइये फोफ काटे लगलन ।

हूँ..... ऊ..... उ.....

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com

चौदह

हँ..... रात किशोर के नानुकुर सोझे सुनात रहे । आचार्या बार-बार मनावन करत रहली बाकिर ऊ ना छोड़ के हँ ना कहे । हम बहुत देर ले अहनी त पता चलल जे आचार्य का केंवाड़ी बंद क लेला से घर में केहू भोजन ना कइलक । आचार्या गरीबी के भोगले बाड़ी तइयो अपना एकलौता बेटा के कहियो रात में उपासे नइखी सुतवले ।

किशोर हाथ से कौर उठा के माई का मुँह लगे ले जाता बाकिर आचार्या पतिव्रत के दुहाई देके टार देत बाड़ी फेरु आचार्या अपना हाथ से कौर उठाके किशोर का मुँह में डाले के उतजोग करत बाड़ी त ओकरे ना नुकुर साफे सुनात बा ।

"पिताश्री ना खइहें त तू ना खइबू आ तू ना खइबू त भला हम कइसे खा लेब ।" किशोर का निहोरा में अनुशासन बा ।

ना.... ना.... ई साफे ना होई ।

केहू पूछ सकत बा जे तू त आचार्य का बन्द कमरा में बाड़ऽ ओहू में बोइयाम में लुकावल बाड़ऽ ई सब कइसे बयान कर रहल

www.bhojpurisahityangan.com

वाड़ऽ । हम ओ सब जिज्ञासु लोग से बता देवे के चाहत बानी जे हमरो स्थिरता के मेंह (केन्द्रबिंदु) अब बोइयाम हो गइल बा । हम अपना दायरा के पल-पल बढ़ा रहल बानी । कवनो अज्ञात अदृश्य भा अकथ्य हमरा संज्ञान से बाँव ना जाई । हम गुप्तु (अज्ञात) के जान सकत बानी अलोपित (अदृश्य) के देख सकत बानी आ अकथ (अकथ्य) के कह सकत बानी । आगे सुनीं.....

ना.....ना..... माता श्री, अब हम ऊ अलबोधवा नइखी जे तू आटा का पानी के दूध कह देबू त हम गटागट पी जाएब । कवर के भगल कके चन्द्रमा कावर देखा के 'बबुआ का मुँहवाँ में गुटुक' कह देबू त हम अल राखेवाला खाना खा लेब आ लोरी का लय से सुत जाएब । अपना समझदारी के सतरसत किशोर उनका के बोध रहल बा । "पिताश्री ना खइहें हमहूँ ना खाएब । घर के माथ मालिक उपास तऽ सभे उपास ।"

"देख ! राजकाज के मामला बा, कवनो अइसन फिचकाल आइल होई जवना खातिर ऊहाँ का एंकान्त के जरूरत पड़ गइल होई । फिचकाल पड़ेला त भूख-पियास सब ओरा जाला । राज-काज का बढ़न्तीए खातिर नू हमनी का अतना सुविधा मिल रहल बा त नून के सैरियत त देवही के पड़ी । *सउदाबाजी गरज का माथे चलेला जबकि समझौता सहयोग का साथे चलेला* । अरे ! अरे हम कहाँ चल गइनी ।

बाबू ! तू एक कौर खा ल हमार लाल । तू एह वंश के भविष्य हवऽ । तहरा के जोगावल भावी पीढ़ी के बचावल बा । रच रच के जेवनार बनवनी आ तू ना खइबऽ त रातभर हमार काया कुहुकी । अन्न जियान होला त ओकर कलपना पड़ेला । चलऽ, ना बेसी तऽ मुँहो जुठिया ल । अपना खातिर ना त हमरा खातिर, अपना पिताश्री खातिर भा छोहगर राजा का वंश-बरखा खातिर ।

मनावन पर मनावन, वास्ता पर वास्ता बाकिर किशोर टस से मस नइखे होत । ओकरा चेहरा पर अनजान भय आ परेशानी के परदा छवले जात बा । माई का बेर-बेर उद्बेगला से आजिज होके ऊ अपना मन के बात कहिए देत बा ।

."पिताश्री का पीठ पर के खून हमरा मन पर से बिसरत नइखे ।

www.bhojpurisahityangan.com

हमार आँख जइसे घवाहिल हो गइल बा, जीभ जकड़ गइल बा, तेज थथमा गइल बा ओ खून में ना जाने कवन खिचाव रहल ह जे हम ओकरे के निरेखत रह गइनी ह, कहाँ, कब, कइसे आ केकर जइसन सवाल कंठ से निकलबे ना कइलखऽ तले पिताश्री केंवारी ठोक लेले हँ । धीरिज छुटेला तऽ ओकर उल्टा मुक्का करेजा का लागेला तब जीव अपने आप तड़प उठेला ।''

आचार्या के ऊहे दशा हो गइल बा- ''तरकस के कवनो तीर त ना झाँकियावत, रलऽ भा गेठरी में समयबद्ध अमोघ अस्त्र त ना रलऽ जवन संधानसमय बीतला पर आपन असर पीठ पर देखावत रलऽ ? जरूर अइसने बात होई । हो सकत बा कवनों चमत्कारिक जीव के शिकार भइल होखे, बाकिर शिकार त हमेशा हमरा लगे धरात रलऽ । ओकर जाति, गुण रंग आ स्वभाव का साथे स्वाद के चर्चा हमेशा रसोईघर में जेवनार करे समय करिहें ।'' ''अपना शयनकक्ष में ओकरा के काहे के ले जइहें ? हँ....हँ कवनो जंगली दिव्यफल होई, जवन गाछ के वियोग असहाउर भइला पर ओगरा लोर बहावत होई । हवा धूप का मिलान से खून जइसन टपकत होई बाकिर दिव्योफल त पहिले लड़िका का तरहथी पर धराइत काहे कि सधोर हरदम बेटा का तरहथी पर आदतन धरात आइल बा ।''

''आखिर ऊ खून कवना चीज के रलऽ ? फेरु ओ गमछी में कवन जिनिस बान्हल रल जवना के आचार्य पीठ पर ढोअत रहले हँ आ खून टपटप टपकत रलऽ । हो सकत बा । कवनो खूँखार जंगली जानवर पीठ पर चोट क देले होखे भा खोंगाह गाछ-बिरीछ पथल भा कन्दरा से घवाहिल हो गइल होखे बाकिर अबतक राजवैद्य ईहाँ आ गइल रहितें, जरूर कवनो गुप्तुत बात बा । अब त भोरे नू राज खुली । मन छव पाँच में तेरे के तीन भइल जात बा । खून चाहे कइसनो होखो, बहत खून इतिहास लिखेला, जवना में घृणा आ प्रतिशोध (बदला, निगार निकालल) आ विरोध के अध्याय बार-बार दया प्रेम के दरमसत रहेला एके साथे आचार्या ढेर बात कह गइली ।''

''पीठ के खून पराजय भा धोखा के पहचान मानल जाला ।

www.bhojpurisahityangan.com

असावधान होते कायरता का मौका मिल जाला । आचार्य त एह सबसे ऊपर बाड़न ।''

गोचरो करत आचार्या फेरु किशोर से खा लेवे के निहोरा करत बाड़ी ।

पिताश्री के आज अइसन चेहरा हम कबो ना देखले रहनी जेंग सूरज सेरा के चन्द्रमा हो गइल होखे, कहत किशोर अपना शयनकक्ष कावर चल देलन । आचार्या बेचैनी में निरेखत रह गइली, तले उनका मुनादी के बात इयाद आइल ।

हूँ..... ऊ..... उ.....ु.....

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com

पन्द्रह

देह के बल मल ह, बशर्ते जे ओकर निकासी समय काल से नित होत होखे । सारा इन्द्री एह सिद्धान्त के पालन कके नित नवीनता धारण करत रहेला जेंग आँख के मइली कीचड़ ह त कान के मइली कनिका (खोंट) नाक के मइली पोंटा भा नकटी त जीभ के मइली दहिया, ओइसहीं दाँत के मइली पियरा त खाल चमड़ी के मइली सत चेफना, आँत के मइली गूह त नस के मइली मूत ह फेरु हाथ के मइली खरचुत त नोह के मइली गड़वासल । ई सब ऊपर-झाँपर के मइली ह जवन सबका लउक जाला । देह का अतरो में सिरजल अंग अपना के निरोग बनवले रहे खातिर मल-विसर्जन के क्रिया अपने आप करत रहेला जेंग-दिल के मइली दुविधा त दिमाग के मइली सपना ह । सपना में टिसुना का तृप्ति भा दुतकार, धोखा का जुड़ाव भा दुराव ओइसहीं भय का थान्ही भा धसोरा, डाह का चैन भा चीलफीली, घृणा का प्यार चाहे तकरार, लोभ का खजाना भा हरजाना, मोह का मुक्ति भा बन्धन आ क्रोध का आस भा नाश जइसन झलक देखेके मिलत रहेला दिमाग अपना के

www.bhojpurisahityangan.com

तरोताजा बनवले रहे खातिर अइसने मइली अंधी में सपना का जरिए निकालत रहेला ।

जीवन के सुरक्षा चाहेवाला सब जीवधारी सपना देखेला वरना सुतला में ओकरा अंग विशेष में गति काहे होइत । भाषा के नासमझी ऊहाँ विरामचिह्न बनके खड़ा हो जाला आ ना त प्रकृति के आउर अनगिनत दुआरी खुल जाइत ।

कुछ लोग के सपना जागते भुला जाला त कुछ लोग के सपना पत्थर पर लकीर पार देला । कुछ लोग के सपना गतिमान बना देला त कुछ लोग सदेहे क्रियावान हो जाला । ऊहाँ हँसी गुनावन आ अकरहर एके साथे उपनेत लेला । मइल निकालते-निकालते दिमाग कबो-कबो घवाहिल हो जाला । ऊहे घाव ओकरा के रोगी बना देवेला आ ना त भोगी ।

सपना में दोरस (द्वन्द्व) के झलक दूगो राह बनावेला । दिल आउर दिमाग का एही लाकाझोकी में मन के जे जेने खीच ले जाव ओने ओकरा जाए के पड़ जाला । बदलाव भा भटकाव के उपनेत एक तरह से उहँई से शुरू हो जाला । एगो न्याय के नापना उठावेला त दोसरका अकरहर के । आदमी एही दुनूं में से कवनो पर चल पड़ेला । दिमाग के मइली सपना त सही गलत के मटकियावते रहेला । उमिर का अन्तिम पड़ाव पर राह-कुराह बुझाए लागेला तबले सबकुछ ओरा गइल रहेला, ओकर अवशेष कादो अगिला जनम में साफे-साफे बुझाए लागेला अइसन लोग कहेला ?

दिमाग के ई मइली एक-दू दिन में ना तइयार होला । एकरो दिसाई पहिला कारक बा परिवार आ समाज के संघत त दोसरका कारक बा आदमी में माता-पिता के लकम-लुफुत के बतकही । तिसरका कारक परम्परा के चलन त चउथका कारक ज्ञात-अज्ञात शास्त्रीय सिद्धान्त माने मोटा-मोटी समझी जे सपना के मांसाहारी वास्तविक जीवन के अहिंसक होइये नइखे सकत । अहिंसक के अर्थ ईहाँ मन, कर्म आ वचन तीनों से बा ।

अबहीं आचार्य अपना गुरु का आश्रम में बाड़न । "विद्या केकरा के दियाव" जइसन गम्भीर विषय पर विवेचना चल रहल बा । गुरु उच्च

www.bhojpurisahityangan.com

आसन पर सजग मुद्रा में बाड़न । विषय-विशेषज्ञ का साथे-साथे प्रतिभाशाली शिष्यन से सभा ठकचल बा ।

लुतुरी हाथ में लाल रंग के गमछा लेले एगो युवक निधड़क खड़ा भइल । कान्ह पर गमछा रखत बोलल-

"जीव मात्र के कल्याण शिक्षा का साथे जुड़ल बा । मानवता के समुचित विकास शिक्षा का जड़ में बा । खुला दिमाग आ खुला विचार से देहल विद्या महाकल्याणकारी आउर महादान का श्रेणी में आवेला एह से विद्या सब वर्ण के बिना आपन-बिरान कइले दियाव ।"

ई हमार मत बा ।

अपना दाहिना हाथ से केसरिया रंग के गमछा झाड़त दोसर नौजवान बोल पड़ल-

"विद्या, निर्माता के आपन धन ह । श्रम, साधना आ सिद्धि का दिसाईं ई धन ऊ जेकरा के चाही ओकरे के दी एमे दोसरा के शर्त ओकरा चहले पर लागी । मुफुत चाहे मोल कके देहल-लेहल ओकरा अख्तियार में होखे के चाहीं । विद्या के महातमो त एही से रही, ना त कउआ के डगर होके रह जाई ।"

तिसरका शिष्य का सिर पर सफेद रंग के गमछा रहे, बिना लाग-लपेट के बोले लगले-

"विद्या चाहे कवनो तरह के होखो एकर बढ़न्ती गंवे-गंवे घुसुकिए घुसुक के भइल बा । ना ऊ एक काल में बनल आ ना, ऊ एक आदमी से बनल । विद्या सनातन ह, जवना में समय, सहयोग, श्रम का साथे-साथे सृजन के चाह सतत गतिशील होला । ए दिसाई ऊ समूह ना मानवता के थाती भइल । व्यक्ति विशेष भा जाति विशेष के अधिकार त पूर्ववर्ती खोजकर्ता सब के सर्वस्व अपहरण लेखा हो जाई । शोषण, दोहन, खोबसन आ प्रलोभन जइसन दुर्बलता के ऊहाँ उपनेत होई । ऊ कब्जाधारी, आदमी में आपन-बिरान, ऊँच-नीच, धनी, गरीब, जात-कुजात, स्वामी-सेवक जइसन भेद-बिभेद के बिआ बो दी तब मुक्ति देवे वाली विद्या राजनीति के रखैल बन जाई । कई एक विज्ञानन के अपना कोख में पालेवाली विद्या ओकरा दायरा में कुहुक के रह जाई । मानवता के अगवर विकास खातिर विद्या सबका हक में होखे के चाहीं ।"

www.bhojpurisahityangan.com

नवरंगी गमछा मुड़ी में बन्हले गुमान से चउथा शिष्य छाती उतान कके बोललें- "सेवा करेवाला वर्ग माने निर्माण के काम करेवाला वर्ग अगर शिक्षा कावर मुखातिब होई त श्रम आउर कारीगरी बाधित होई । एकरा अभाव में सामाजिक तानाबाना बिगड़ जाई आ जनपद के विकास रूक जाई । एह दिसाईं शूद्र आ औरत वर्ग अगर विद्या ग्रहण करे के जोर मारे त दुतकारन, बरजन आ ताड़न जइसन तरे-तरे के गँव अपना के भगा देवे के चाहीं । एकरा बादो कवनो हठधर्मी निकल गइल त छल-बल कल से थउसा देवे के चाहीं ।"

आचार्य एगो लमहर साँस छोड़ देले ।

तिसरका शिष्य का तर्क के आगे बढ़ावत पाँचवाँ शिष्य हरियर रूमाल से आपन धूमिल चेहरा के पोंछत कहलें ।

"एकाधिकार मनमानी करेला । सब फैसला ऊ अपने कावर चाहेला । हाँक-दाब करेवाला के ऊ माटी में मिला देवे के चाहेला । विद्या के एकाधिकार व्यक्ति विशेष, जाति विशेष आ वर्गविशेष के, दोसरा लोग खातिर घातक आ खतरनाक बना देला । पेट, प्रतिष्ठा आ पूजा पावे खातिर ऊ कुछुओ रच दी । रचनाकार महान होला । ऊ ओ महानता के ओढ़ ली । ई चिन्ता के बात नइखे, चिन्ता के बात त तब होई जब ऊ अपना के सबका से ऊँच आ सबका के अपना से नीच माने के बिआ समाज में बोए लागी ।"

हरिअर, उजर आ जोगिया रंग का गमछा के फेटा बन्हले एगो शिष्य पीछे से खड़ा भइल । थनगे-थनगे तीनों रंग फेटा से सोझे झंकिआवत रहे । ओकर भोलाभाला सूरत ओपर मिठबोलिया अन्दाज सबका के अपना कावर तका लेता । ऊ चउथा शिष्य का विचार में सुधार के गुंजाइश देखावत बोलत बाड़ें-

"खानदानी विद्या त पेशाकरमी का लगे पहिले से बड़ले बा । कारीगरी में गुणवता बढ़ावे बदे आ नया खोज करे तकले का काम में पेशाकरमी सबके शिक्षा देहल जरूरी बा बाकिर ताज ओकरा मुड़ी पर ना धराई । फेरु पेशा करम करेवाला के विद्या अतना मत विस्तार करो जे ऊ ज्ञान-विज्ञान संविधान आ धर्म पर बोले आ लिखे लागो । उपाध्याय से लेके राजा तक के नजर एह नपना पर रहे के चाहीं । *विद्या अइसन बादल*

www.bhojpurisahityangan.com

ह जवन बरसेला त जिया जुड़ाला आ गरजेला त हिया डेराला ।''

आचार्य करवट फेर देलन बाकिर विचारन के लड़ी ना टूटल । विषय विवेचना में भाग लेवेवाला सारा विद्वान आ शिष्य अब दू खेमा में बँट गइलन । तर्क हल्ला-गुल्ला में बदलल जात बा । सबकर आपन-आपन बात, फेरु बात पर बात । अपना-अपना तर्क के पोख्ता सिद्ध करे में हल्ला का, हाथ के हुल्केरा अब मिले लागल । ऊ ऊपर-नीचे आगे-पीछे दाएँ-बाएँ, अरिया-परिया ले प्रतिद्वन्दी के चुनौती देत लहराए लागल । पाँचों अंगुरी अपना मुद्रा भाव में मुँह चमकावे लागल । पुरधानी बने का कहासुनी में आँख, नाक, कान, ओठ, छाती, कमर, पेट-पीठ से धइले गोड़ तकले सभे सिपाही जइसन मोर्चा सम्भाल लेले रहे । न्याय त पीछे छुट गइल । फैसला अब धीरउल में बदलल जाता । मोंछ के अइँठउअल, फेंटा बन्हउअल, ताल ठोकउअल, बाँही के चढ़उअल से लेके एक-दोसरा के धसोरा-धसोरी में मीमांसा बदलल जाता । बाकी रह गइल बा त बस ! लात घूँसा आ हथियार चलेके । रणक्षेत्र बने का पहिले उच्च आसन पर बइठल गुरुजी का गम्भीर गर्जन से सभा एकदम शान्त हो गइल । एह शान्ति में आत्मानुशासन रहे आकि सभा के नियम, गुरु के लेहाज रहे आकि भय । पलक गिरते सबकुछ सामान्य हो गइल रहे ।

अब सबका उमेद बा जे तर्क तराजू पर चढ़ी । गम्भीर आवाज से गुरुजी तब सभा के सम्बोधित कर रहल बाड़न ।

''जैविक संरचना प्रकृति का जियत रहे के प्रमाण ह । प्रकृति में विद्यमान कुल्ही तत्वन के ई अल्पकालिक भा दीर्घकालिक मेल के परिणाम होला जहाँ मात्रा का मेल से सब खेल होत रहेला । *जानो का अपना के जनावे के पड़ेला ।* प्रकृतियो सिरिजना का जरिए अपना के जिअतार जनावत रहेले । अइसन संरचना ओकरा में अपने रवें होत रहेला । ऊ चाहियो के एह क्रिया के रोक नइखे सकत । जहिया रोक दी ऊ दिन ओकर अन्तिम दिन हो जाई बाकिर ऊ अइसन ना करी काहेकि निर्माणे ओकर जीवन ह । ओही संरचना के एगो रूप त आदमियो हवे । जब माटी आपन महक ना चोरावे, पानी आपन रस ना हटावे, हवा आपन दउर ना भगावे, आग आपन धाह ना धरे, आकाश आपन अनन्तता ना समेटे फेरु आउरो दोसरो तत्व अपना साँच का दिसाई

www.bhojpurisahityangan.com

नेत ना बिगाड़े । अपना सृजन-तत्व का गुनगरोह से आदमी का अबहीं बहुत कुछ सीखे के पड़ी । चिन्हब का जरिए विद्या देहल अपना निर्माण तत्वन के धोखा देला नियर बा जवना से ई देह बनल बा । जब ऊ आपन गंध, रस, दउर, धाह, ओर-छोर आउर साँच के नइखे लुका सकत त फेरु ई आदमी विद्या के केहू से काहे लुका ली ?''

''विद्याविहीन आदमी पशु खानी होला । पशु एसे कहल गइल जे ओकरा के काम खातिर, दूध खातिर भा मांस खातिर आसानी से जोतल जा सके, दूहल जा सके भा मुआवल जा सके । पहिलका दुनूं काम में ऊ तनियो सा ना-नुकुर करेला त बन्हाला, पिटाला आ पटकाला फेरु दुनूं काम से उतार भइला पर काटाला । ऊ शिकाइत करे कहीं ना जाला । आपन शोषण, दोहन, तारण अपने अंगेज लेला आ पशु का मुँह बा बाकिर बोली नइखे । बोली बा त लिपि नइखे । कवनो लिपि विद्या के आपन माई होले जेकरा गोदी में बइठ के विद्या का बोले आवेला । कवनो गेठरी खोले आवेला आउर अपना दिसाईं होत न्याय अन्याय के तउले आवेला । मानव पशु, मानव समाज खातिर शोभा ना कलंक कहाई ।''

''विद्या से हीन आदमी आपन इतिहास भुला जाला । इतिहास भुलाइल आदमी बड़ा जल्दी गुलाम बन जाला । ई ओइसही होला जेंग गाछ से गिरत आदमी पातर डेहुँगियो से कल्याण चाहेला । पानी में डूबत आदमी खढ़ो में परान तलासेला । ईहे ऊ समय होला जब पढ़ल-लिखल आदमी मनचाहा एकअलंगी विचार ओकरा दिमाग में भर देवेला । ओकरा के पुष्ट करे खातिर ऊ ग्रंथ पर ग्रंथ लिख दी । कविता, कहानी, नाटक तंत्र-मंत्र माध्यम बनी आ पुरवासाट खातिर ऋषि-मुनि, संत-महात्मा, ईहाँ तकले जे ओमे भगवानो के घसीट ली । मतलब, जे गुलाम बनावे के एको हथियार उठा ना राखी । अपना हार के जीत में बदल दी । बढ़िया ज्ञान अपना नामे कर ली । उनका (गुलाम) नायक के आपन नायक बना ली । आपन बुराई उनका पर थोपके बदनामी के अइसन चादर ओढ़ा दी जहाँ उनका से पत्नी, पुत्र, कुटुम्बी, समाज आउर देश तक घिनाए लागी । विवशता के अइसन बेड़ी जवन ना उनका के जीए दी आ ना मुए दी । ई हालत तबतक चलत रही जबतक उनकर पूरा के पूरा कुनबा

www.bhojpurisahityangan.com

गुलाम ना हो जाई । हँ ! एगो बात बहुत महत्वपूर्ण बा । निपढ़ के सबकुछ बदल गइल । ओकर नया अवतारो हो गइल बाकिर एगो चीज जइसे के तइसे रह जाला ऊ ह प्रकृति के सिरिजल मानव मस्तिष्क के मानव कोष जवना का खन्धा में "एगो हमहूँ हँई" सँइतल रहेला । ई जब-जब जागेला जमाना करवट लेवेला । फेरु हठ ना संकल्प होला, लुत्ती ना लहोक होला । तब ऊ पोंछ सुटका के भागे ना, छाती पर वार सहेला । पूरा मानवता का कल्याण खातिर विद्या बरखा नियर बरसे के चाहीं जहाँ रानी कानी बराबर हो सको ।"

एतना कहके गुरुजी तनि चुपा जात बाड़न । सभा के बड़ा गौर से निरेखत उनका चेहरा पर चिंता के लकीर पड़ जाता । मन कुछ विकल जइसन बुझाता । बहस में भाग लेवेवाला लोग के ऊ ओरहन का नजर से निहारत फेरु बोले के शुरू कइलन- "इकाई के बढ़न्ती सहयोग भा समझौता से होला । कबिलाई सोच पर माटी डलले से जनपद बनेला । जनपद बनला का बाद चुपके से कबिलाई सोच के अगुआन कके कानून बनावल आ ओपर काम करावल वैचारिक टकराव के जड़ होला । खोबसन का खोरनाठी चलावे के पड़ जाला । उहाँ गंवे-गंवे अशान्ति मार-काट आ लड़ाई के लड़ी लाग जाला । देश बने के राह त आउर कठिन होला जहाँ दुनूं का अपना के ओरवा देवे के पड़ेला । मुँह में हींग दाब के ओकरा के गंधहीन कबले कहल जाई ? अइसन हालत में बड़बोला, उकाढ़ू, अगवरिया आ छेछरा जन से बचे के चाहीं ।

गुरुजी दूर ले सभा के निहारत फेरु बोले लगले-

"कानून बने का पहिले सभकर सहमति भा बहुमत के दरकार होला । ओकरा जद में आवेवाला समूह ओ सभा में सदेह भा अपना गोसइत का जरिये आपन सुझाव पहुँचा देवेला । जब तक ऊ कानून के खुदे ना गछ लेवे, खुदे ना ओढ़ लेवे तलेक ऊ कानून नदी का लहर जइसन दुनू घाट कावर से थपेड़ा खात रहेला । जोर-जबरदस्ती कइला पर बगावत के जनम होला । अंजुरता आ विवशता ओकरा जबान पर भले ताला लगा दे बाकिर *गोईठी के आग, राख के पपड़ी में अपना के बुताइल देखा के बहारन पर जाते आपन असली रूप देखा देला ।*"

विवेचना कक्ष के बेर-बेर निरेखत गुरुजी अबकी ठोक के बोल

www.bhojpurisahityangan.com

देले-

"ए सभा में एक-एक छात्र आ विद्वान-ब्राह्मण भा क्षत्रिय कुल के बाड़न । स्त्री वैश्य शूद्र भा वर्णेतर कुल के केहू नइखे लउकत । फेरु 'विद्या केकरा के दिआव' जइसन विषय पर मीमांसा कइल ओसहीं बा जइसे प्रसवपीड़ा के अनुभव केहू मरद से जाने के जुगुत भिरावल जात होखे ।"

आचार्य करवट फेरत बाड़न, अब त हाथ गोर टएट कके अँइठन तूड़त बाड़न । बुझात बा जे अब जगिहें का दो ?



www.bhojpurisahityangan.com

सोलह

नरसरे से जंगल के घटना कहके आचार्य चुप हो गइले । आचार्या छाती पीटे लगली । किशोर भक भइल बाड़न । सबकर नजर हमरा पड़ अब टिक गइल बा। हमहूँ गँवे-गँवे सबकर चेहरा पढ़ रहल बानी । सबका आँखी में हमरा दिसाई घीन भावना बा त हमरा गोसइत का दिसाईं दया आ अफसोस । आचार्या का आँखी से एके साथे छछन, पीड़ा, दया आ दुलार के लोर बहे लागल बा। आचार्या कबो किशोर के छाती से लगाके रोवत बाड़ी त कबो बोइयाम में रखल हमरा के देखके । उनका नजर में आचार्य कठकरेजी बाड़न । ओरहन का नजर से उनका के बेर-बेर घुर लेत बाड़ी । उनकर रोम-रोम जइसे घवाहिल हो गइल होखे । एगो अंचिन्हार पीड़ा उनका के भीतर से बाहर ले सालता । किशोर का अंकवारी से हटते ऊ हहुआ के फेरु छाती से साट लेत बाड़ी । आचार्य कुछ कहे के चाहत बाड़न । उनकर ऊ कवनो बात सुने के नइखी चाहत । भरल गला से ऊ आचार्य कावर ताक के कहत बारी ।

"दोसरा के लड़िका पटके में कवनो पीड़ा ना होला, ई मरदे

www.bhojpurisahityangan.com

जात पर लागू बा, हमरा ई आज बुझा गइल । सिरिजिना के बोझा जे ना ग्रहण कर सके, ना ढोवे सके, ना अपना देह से दोसर देह पार सके आ ना ओकरा के पाल सके, ओकरा मोह कहाँ से, माया कहाँ से आ दरद कहाँ से ?''

आदमी भइला का बादो हिंसक मरदानवा सुभाव ऊ आजो लेक नइखे छोड़ले जवन सब जीवधारी का मरदवन में पावल जाला । सब गँव से सबका ऊपर बनल रहे के चाह, बन्हन (पाश) जइसन एकरा के आजो अपना बन्हन (पाश) में बन्हले बा । पशुता त झूठो बदनाम बा । सिरिजिना के खेल प्रकृति आ पुरुष में सनातन से चल रहल बा। पुरुष उहउँ अपना शंका से नइखे बाँचल । ओकर संदेह ओकरा विश्वास पर भारी पड़ेला तबे नूँ लाखो करोड़ो शुक्राणु बोवला का बाद जामेला महज एगो । प्रकृति के सुलझल नियम का सामने पुरुष के कवनो चाल ना चले, अन्त में पुरुष थाक के बइठ जाला ।''

ई बात गुने लाएक बा ।

हे ब्रह्मा स्वरूप गुरु !

रउरा ई का कइनी ? डबडबाइल आँखि से आचार्या हमरा के निहारत कहे लगली-

''छः छः पाती ओकर माई रोवत होई । ओकर डहकल हमरा लाल पर मत पड़ो । हम अँचरा पसार के अपना बेटा खातिर उनका से भला के भीख माँगत बानी । तूहूँ मतारी हउ आ हमहूँ मातारिये हईं । मतारी के पीड़ा कवनो मातारिये समझ सकत बिया । लड़िका-लड़िका में झगड़ा होला, बिहान भइला फेरु दुनूं एके साथे खेले लागेलन ।''

''लड़िकन के झगड़ा छोड़ावे में हे विष्णु सरूप गुरु ! रउरा ई का कइनी ?''

''ककड़ी तुरला के सजाय कनइठी होला, करेजा कचारल ना । दूगो अंचिन्हार लड़िका निरजन बन में जब बाझ गइलें स त फैसला में बल का साथे दाँवे पेंच अगुआन बनी । जाति के रोब, कुल के हैबत, ध न के अँइठन आउर हीत-मीत के रुआब, परिचय पर नूं पंजिआवेला । एकरा के बिना जनले जनवले जेकर प्रदर्शन बढ़िया भइल ऊहे असली

www.bhojpurisahityangan.com

वीर कहाई । एकर दुख प्रतिद्वन्दी का हो सकत बा । आचार्य का जब ई दुख हो जाय त ऊ पछपाती कहाई, दुअँखी कहाई । ईहे समय होला ओकरा अपना शिक्षण कला में चूक के समझे के । दुअंखी के दोष जहाँ ओकरा में आइल, सारा जिनिगी आपन-बिरान, प्रिय-अप्रिय आ नीमन-बाउर का दोहमच में ऊ दोल्हत रह जाई। आगे चलके दोहमच मतिभ्रम में बदल जाई आ सुखले ले डूबी ।''

बिना पसेना बहवले बनिहारी लेहल हरामखोरई कहाला । हे महेश्वर सरूप गुरु, ई का कइनी ?

''कामकरता का हाथ में बनिहारी आवते कारज तीन तरफा आनन्द लुटावेला । एगो जे काम करेला, दोसरका जे काम करावेला आ तिसरका काम के सुधिअवनी । काम के सुन्दरता संसार में सोहरत के चिन्हासी फइलावेला आ बिगड़ला पर ओतने बदनामी । अदेव लेहल, अदेव खाइल आ अदेव के दावा कइल धोखाबाजी में आवेला । *धोखा के गाछ धोखा फरेला* । राउर अदेव दक्षिणा एक ना एक दिन संसार जानी । माँग आ कोख का साथे केहू के धोखा कवनो स्त्री जियत जिनिगी ना भुलावे ।''

आचार्या कर जोर के हमरा लगे खड़ा बाड़ी । हमरा नइखे बुझात जे आचार्य के ई सब काहे कहत बाड़ी ।

''हमरा चिन्ता बा अब हर काल में रउरा उघार भइला के ।
हे परमेश्वर सरूप गुरु रउरा ई का कइनी ?''

''घटिया *दलील* से राउर तोपन अब लोग दी । गोड़ तोपाई त मुँह उघार होई आ मुँह तोपाई त गोड़ उघार होई । विद्या भला चोरावे के चीज हऽ, ओहू में वाणविद्या । राउर दोसरको चेला त मल्लयुद्ध के दाँव अजमइले, फल का निकलल ? जहाँ एतना बड़ा राज्य के राजकुमार सब युद्ध-कला सुनसान जंगल में सीखत होइहें, का सैनिक के घेरा जंगल में ना होई ? ऊ अइसन लवकिया निकलल जे सबका आँखी में धुरा झोंक देलक, जेकरा के ना आचार्ये देखले आ ना कवनो चेले लोग ? एक दू दिन में त कवनो विद्या में निपुणता पावल नइखे जा सकत, महिनवन भा बरसन लाग सकत बा । फेरु ऊ सैनिक कवना काम के जवन ओकर

www.bhojpurisahityangan.com

घुसपैठ ना पकड़ सकल । नकल के नालिस चेलवन में खूब होला । ओकरा दिसाईं चोरी के नालिस कहियो रउरा पास आइल बा ? अन्दर हवा रहेला तबे गालो फुलेला । हवा त ओही दिन निकल गइल जहिया कुत्ता के ऊ लाघव-अस्त्र से मुँह बन्द क देलक ।''

साँच बोली हे मुक्तिदाता ! रउरा ई का कइनी ?

''अस्त्र-लाघव के संधान प्रक्षेपण आ निवारण अपना दुलरुआ शिष्य के आज तलेक काहे ना सिखवनी । दुलरुआ शिष्य के भला ना सिखइतीं अपना बेटा के त सीखा देतीं । हमरा त लागत्ता रउरा लगे ई विद्या आ एकर गँव अबहियो नइखे, तऽ चेलन लगे कहाँ से आइल ? चोरी त ओ चीज के नूँ होला जवन रहेला, जवन हइले नइखे ओकर चोरी कहाँ से ? आवेवाला समय में लोग रउरा के एह काम बदे उघार करत रही आ तोपन देत रही । हमरा बेटा पर ऊ दिन कतना भारी पड़ी ।''

किशोर के फेरु छाती से साट लेत बाड़ी । आचार्य गटर-गटर सब सुनत बाड़न । रह-रह के किशोर के मुँह ऊ निरेख लेत बाड़न । आचार्या फेरु बोले लगली ।

हे दिव्य दृष्टि के दाता गुरु ! रउरा ई का कइनी ?

''गुरु के कवनो जाति ना होला । ओकर महातम भगवानो से ऊपर मानल गइल बा। सुरूजो ऊपर बाड़न, आपन अँजोर बाँटे में ऊ कबहूँ आ कहियो भेद नइखन कइले । जवन अँजोर फूल पड़ पड़ेला ऊहे अंजोर धूल पर पड़ेला । जाति आधारित गुरु आ जाति आधारित ओकर शिक्षा, सम्बन्धित जाति के कलम कसाई बना दी । जाति के पछपाती गुरु मानवता का दिसाईं चोर होला । कहीं ना कहीं ऊ चोरी आउर दोसर जतियन के गुलाम बनावे वाला गुप्त छल के पहिलका चाल होला । बाद में त ऊ सागर सोंख के पानी के पहाड़ उठावत रही जवना के सिद्ध करत सदी के सदी बीत जाई । शिक्षा के मारल आदमी, ना ओइसन सोंखल सागर देखी आ ना पानी के पहाड़ । बस ! दिन फिरे का आस में अंतिम साँस ली फेरु जाति आधारित शिक्षा उनका में उहउँ टिसुना टाँक दी जन्म जन्मांतर ले उनका ओसे अब उबार ना होई ।

शिक्षा का दुनिया में गुरु के जात-पाँत कइल वंचित जातियन के

www.bhojpurisahityangan.com

कहियो आँख खोल दी । अपना दुर्दशा के कारण जान के ओकरा में अविश्वास, संदेह, धोखा, भय आ घृणा जइसन भाव जनम लेवे लागी, एगो गुरु का चलते ऊ सम्बन्धित समस्त जाति के बदनाम करे लागी । अइसन छोह जवन मानव जाति में खोह पैदा करे ओकर मोह मुरुख मन के पहचान हवे ।

हे तेजोमय गुरु ! रउरा ई का कइनी ?

"मेहनताना लेके जब रउरा शिक्षा देवे के काम शुरु कइनी तब रउरा गुरु ना उपाध्याय हो गइनी । रउरा के मजदूरी दे के केहू पढ़ सकत बा । छल-प्रपंच से अनजान ऊ लड़िका गुरुदक्षिणा में रउरा लगे काथी-काथी ना परोसलक । आकाश-पाताल के दुलर्भ जिनिस देवे के कहलक, माँग लेले रहितीं कतना बढ़िया होइत । जब जंगल के अनमोल चीज के नाम धइलक ओही में से कवनो गछ लेवेला । जीव-जन्तु के अनाका अंग जवना खातिर राजा महाराजा तरसेलें, ऊहे माँग लेवेला । संसार रचना के असली सृजन तत्व जब देवेके कहलक । राउर बुद्धि कहवाँ गइल रहे ? अन्न भंडार, रस भंडार आ द्रव्य भंडार छोड़ के रउरा एगो अंगूठा लेके आ गइनी । एही रस भंडार खातिर राउर जरी के हितवा दुश्मन बन गइल आ भरल राजसभा में एको बिध बाकी ना लगवलक । तकदीर लक्ष्मी, धनलक्ष्मी आउर राज्य लक्ष्मी तीनो के अपना आइल दुआरी से दुरदुरा देनी, ले काऽ अइनी, जवन कवनों काम के नइखे । खोढ़ करे के आदत, ना जाने रउरा के कहाँ-कहाँ नचाई ?"

आचार्य हमरा चारो अलंग घूमत निहारत बाड़न जइसे परिकरमा करत होखस । हर बेरी किशोर उनकर पीठी निहार लेत बाड़न । सबकर आपन-आपन फेर बा । *रिस्ता का रस्सी से बान्हल परिवार पेट का पंजरा से खुलेला ।* आचार्य ई जानके भक बाड़न जे कबो कवनो विरोध ना करे वाली उनकर औरत आज खोबसन के खंजर अतना काहे चला रहल बाड़ी । आचार्या फेरु बोले के शुरू कऽ देले रहली..... ।

ई का कइनी, ऐ भ्रमभंजक गुरुजी ?

"मुदइया हितवा के माटी में मिलावे खातिर इहे एगो काफी रहे । आज रउरा जवना बन्हन में बन्हाइल बानी, तरे-तरे के हुकुम

www.bhojpurisahityangan.com

अनचाहा मन से बजावे के पड़त बा । रउरा आदेश भर के देरी होइत ऊ बन्हन काल्हे खुल गइल रहित । बाकिर रउरा मती पर तऽ परदा पड़ल रहे, गुरुदक्षिणा में उहे माँग लेतीं । अब तक तऽ नव-छव हो गइल रहीत । हम जानत बानी जे रउरा ओकर मदद ना लेतीं, रउरा ओहू में छूत लाग जाइत । ई छूत आ ई भेद देखी ना जे एह राज्य के आ एह राजा के कहाँ ले जाके पटकेला । अबहियों से कुछ बिगड़ल ना रलल ह बाकिर आपन काम रउरा खुदे बिगाड़ आइल बानी । ओइसन एकजबनिया से रउरा बचन लेला के का दरकार रहे जे दू भाइयन का बीच में तू केनहू से पक्ष मत लिहऽ । आचार्या सिकाइत का लहजा में आगे बोले लगली-

"हम कवन-कवन बात कहीं हे घर के माथ मालिक, करे के तऽ रउरे नूँ बा, हमरा तऽ कहले भर नूँ बा ।"

रउरा ई का कइनी ?

"अगर ऊ दुनिया में अहिंसक युद्ध के प्रणेता बनत रहे तऽ मानवता का कल्याण खातिर नूँ । मतलब जे मुँह बन्द कके लमहर से लमहर समस्या के समाधान दूढ़ल जा सकत बा । निदान जरूर मिली । रउरा ई सब ना सोहाइल । राउर एकबग्गा मन ओघड़ी जरूर कहले होई "हमरा सामने तू" तहरो के खोढ़ करबे हम आ पेट का दाँते एगो सुघबक के अँगूठा काट लेनी । सुधार खातिर विरोध, पहचान खातिर विरोध आ विरोधी खातिर विरोध । रउरा कवनो विरोध का पंघत में ना बइठनी । उल्टे राउर ई हिंसक युद्धनीति रउरा साथे हमरा बेटो के कहियो अपना में खीच ली । अतना कह के आचार्या किशोर के फेरु छाती से साट लेली ।

"प्राकृतिक संसाधन के हिसाब से हवेखल, जोगावल आ रखवारी कइल सब जियाजन्त के सुभाव हऽ । जवना में आदमी के तऽ कहहीं के नइखे, अपना के ऊ सबका से समझदार मानेला । ईहाँ ले समझदारी ओकर ठीक बा, जइसहीं समझदारी पेट का राहे पेटी ले जाला ऊ अपसवारथी हो जाला । बटोर लेवे, बढ़ा लेवे आ सबका ऊपर हो जाए के फेर, ओकरा से अपना फइलाव बदे अमानवीय काम करावे लागेला । *केहू के ढकेल के केहू आगे जा सकत बा बाकिर सबका आगे नइखे जा*

www.bhojpurisahityangan.com

सकत । जल जमीन आ जंगल का साथे-साथे केहू आपन साम्राज्य आ संस्कृति बचावे के उतजोग करत बा त ओकरा जोगार के खोढ़ कइल विस्तारवादी नीति के एगो साजिसे नूँ भइल ।''

''जवना युक्ति से एह साजिस के सधले बानी, हे बुद्धिजीवी गुरु रउरा ओकरा के गुरुभक्ति नाम दे अइली आ ले अइली तवना के गुरुदक्षिणा कह देनी । दक्षिणा काम के मजदूरी होला, बनिहारी होला भा वेतन होला जवना से आपन आ अपना परिवार के गरज चलेला, एहसे कवन गरज सधी, हे विद्या के व्यापारी गुरुजी ?''

अब आचार्य गुमसुम हो गइल बाड़न, आचार्या के ऊ कइसे समझावस जे छाँह खातिर सुरुज साथे ना,गाछ का साथे घुमे के पड़ेला । आचार्या बोलत चल गइली ।

दूगो राजा महत्वाकांक्षा के लड़ाई लड़ेला, जाति धर्म आ संस्कृति का नाम पर जनता के जबरदस्ती ओमे झोंक दियाला । गुरुभक्ति का किताब में राउर ई गुरुदक्षिणा विवाद के जड़ बनी । मटखोन के भुँईजबरा ना उपरे से सुरक्षित होला ना निचही से, धसल त खड़ा गइल, भसल तऽ आरा गइल । एतना कहके आचार्या किशोर के लेके शयनकक्ष से बाहर निकल गइली । आचार्य उनका के देखते रह गइलन, कुछ देर बाद ऊ हमरा कावर ताक के कहे लगलन ''घर में ई तऽ कलह के कारण बनल जाता । एही कलह के ओरवावे खातिर तऽ हम ई काम कइनी जे राज समाज के काज आगे बढो, बबुआ का माई का तऽ ई सब बुझाते नइखे, कहके ऊ फेरु सोमरस गटकावे लगलें ।''

हम आचार्य के अब कइसे समझाईं जे कलह, कलेस का कोख से जनम लेला, भक्ति आउर दक्षिणा, कवनो कलमकार के कथन होला ।

हूँ..... ऊ..... उ.....

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com

सतरह

"पिताश्री का, ई का हो गइल बा ?

सगरे असंसगत व्यवहार-संघतिया का राजसभा में रेरिआइल ढूकल, सबका सामने पुरान बात उकिटल । एगो गाय खातिर चिरौरी, बात-बात में मुदई के मउरी । गोड़ काट के बराबरी कइल, अंगुरी काट के ऊपर कइल । गुरुदक्षिणा में अंगूठा माँगल, सङ्गिरहा से ओकरा के पीठ पर पारल, ओकरा के बोइयाम में सईतल, शयनकक्ष से तीन दिन ले बाहर ना निकलल, नशा में धुत रहल फेरु माताश्री का कवनो बात के जबाब ना दिहल, ई जरूर कुछ बतावत बा । जरूर कवनो पीड़ा पिताश्री का भीतर ले सालता, ऊ अतना गहिरा ले ढुकल बा जे ना निकलले निकलत बा, ना अंगेजले अंगेजात बा । आपन मार ऊ अपने सहत बाड़न । अइसन कवन घाव हवे, बाकिर अपना अगुतइले बिना बैद्य का राय के सेवन कइल जड़ी कबो-कबो जहर हो जाला ।" किशोर गुनावन करत जात बाड़न । पति से अलोत होते आचार्या अपना मन के बात बेटा का सोझा रखिए देली ।

www.bhojpurisahityangan.com

"तहरा पिताश्री के ईरखा, डाह, जलन, पछपात आ प्रतिशोधी सुभाव के जानते हुए ईहाँ के राजा इनका दीन-हीन दशा पर मोहित होके बहाली कर लेलन यदि इनका सुभाव के साँचा विद्यार्थियन पर पड़ल त एह राज-समाज के भला ना होई, काहेकि *दूध से बनल खजार, नाम प्रकार बदलला से आपन मौलिक गुण ना छोड़े ।*"

किशोर अपना माई से अगुआ के अपना कमरा में ढुक गइलन । आपन धनुष-वाण आ तरकस लेके हाथ से अंदाजे लगलन । अचानक उनका हम इयाद पड़ गइनी । इयाद पड़ते हम उनका से जुर गइनी, अब अपना कमरा में ऊ बुदबुदइले-

"*सरधा भक्ति प्रेम विश्वास आ भरोसा से सँउपल कवनो थाती, जिम्मा का कसौठी पर आपन असली रंग देखा देलक । छी: छी: ई तऽ* दुनिया के सबसे बड़ा विश्वासघात भइल । *कउल करार से दाता के मुँह ना खुलल तले हुमाद साथे जजमानो स्वाहा । धोखा का दुनिया में विश्वासघात अन्तिम अस्त्र मानल जाला ।* एकरा अचूक बार से दुश्मन जड़ीसोर से ओरा जाला भा जियते मुअला खानी हो जाला । हम नइखीं जानत जे एकर दूर दूर ले कइसन असर होई बाकिर पिताश्री इनका गोसइत के दुनिया के सबसे लमहर गुरुभक्त बतावत बाड़न ।"

"बोइयाम में हम अँईठ गइनी । इनका के कइसे बताईं जे कवनो विलक्षण छात्र के वजूद मिटाके संस्थान अगर प्रमाण-पत्र देबे करे त ओइसन प्रमाण-पत्र से ऊ लक्ष्य त नइखे साधल जा सकत, जहाँ ओकर गन्तव्य तय रहल हवे, हँ.... संस्थान के प्रमाण-पत्र ओकरा जरिए जरूर चल पड़ी । समय-समय पर लुटल-पिटल विलक्षणता के भक्त, दानी त्यागी, एकजबनिया कहल गइल बा । पिछला जनम के माई ह बाप ह, भाई हवे चाहे अवतारवाद के देवता हउएँ, भगवान हउएँ, माने हाल माहौल का दिसाई एह अलंकरन से हमेशा ओकरा के सजावत रहल गइल बा जवना से लोग ओकरा धोखा, विश्वासघात आउर हत्या के भुला जाव । ई ठगी के एगो तरीका भइल । चाभी का झोंझ के, झुनझुना बना के कवनो लड़िका के पोल्हवला जइसन बा । बनिहारा माई-बाप साँझ के नूँ घरे अइहें तले तऽ घरवे साफ....।"

www.bhojpurisahityangan.com

झूठ का ऊँचाई का नीचे साँच के समाधि रहेला तबे नूँ अपरदन, समय-समय पर भेद खोलत रहेला । ''घर-परिवार के तऽ हम देख लेनी, अब राजपरिवार देखे के बाकी बा, देखीं कब ले ओकर दीदार होला । राजपरिवार देखे का पहिले अपना गोसइत, उनकर साम्राज्य आ सम्राट के कुछ पता चलित त हमरो जनम लेला के मकसद पूरा हो जाइत ।'' बोइयाम में हम उभचुभ हो गइनी–

अरे ! किशोर फेरु बुदबुदाए लगलें– जब पिताश्री जान गइले जे ई एकजबनिया सबसे लमहर गुरुभक्त बा त गुरुदक्षिणा ढोल बजा के सार्वजनिक सभा बटोर के लेवे के चाहत रहे । दुनूं आदमी के एकबाल बढ़ित । जय जयकार होइत, केहू पर कवनो प्रश्नचिह्न ना लागित । माताश्री कतना बात कह देली ह, पिताश्री एको टुम जबाब ना देले हऽ । कहीं ना कहीं कवनो भेद जरूर बा । *काम, आदमी के सुभाव बतावेला जवन आदमी का भीतर बइठल रहेला ।* कपट, छल, निठुरता, छनहरल, लुकाछिपी आ शकी सुभाव ऊ कबसे पाले लगले ? का पता गुरुदक्षिणा में कवनो होनहार छात्र के अंगूंठा कटवा लेहल कतना निठुरता के काम बा । गुरु पद नाहक बदनाम भइल । पिताश्री के धरफर सुभाव इहँउ इनका के ले मरल । मूलवासी पर जीत, मेल से भा खेल से हो जाइत । सारा अछरंग गुरु पर लाग गइल जे हमार पिता हवे । हमरो तऽ अब अगिला दिन के चिन्ता बा । खेल-खेल में कवनो साथी भा प्रतिद्वन्दी, पिताश्री का मारफत हमरा के शिष्यघाती के बेटा कह दी । सब सुनके हमार तेज या त खढ़अगिया हो जाई आ ना तऽ धधकत ज्वाला, *पिता के सिकाइत जब पुत्र का लगे आवे लागे तऽ ऊ नरक के समान होला* ओकरा खातिर स्वर्ग आ नरक ऊपर ना होला । पिताश्री का तऽ ई इकरीत लागिए गइल, एकर लसी हमरो के कहियो ना कहियो नासी । किशोर बुदबुदा के चुपा गइलन ।

हूँ..... ऊ..... उ.....

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com

अठारह

ईहाँ के राजदरबार देखे के हमरो मन में बड़ा लालसा बा । ईहाँ का बीरभूपन के देखे खातिर आँख तरसत बा । चिन्हब आ पहचान खातिर सम्बोधन संज्ञा ना विशेषण से काम चलावत बा । हर आहट केहू के बोलाहट बुझात बा । रोम-रोम राजधानी घूम लेवे खातिर उत्सुक भइल आवत बा । तर्क के लतर फइलावे खातिर बुद्धि के छछाइल बड़ा जरूरी ह । के, काहे, केकर, कइसन आ कहवाँ जइसन प्रश्नचिह्न भूतकाल में खड़ा होके, वर्तमान से हिसाब माँगे पड़ अड़ल बा आ आचार्य बाड़न जे ना घर से निकलते बाड़न आ ना हमरा के कहीं खातिर निकालते बाड़न । नशा पर नशा ! नशा पर नशा !! खाली मदहोशी, हूँ.... हऽ ! दूगो अद्‌भुत अब एक साथे बा, तिसरका अद्‌भुत मिलित तब घटनाक्रम तेजी से आगे बढ़ित । हँऽ.... इहाँ के राजधानी तिसरका अद्‌भुत हो सकत बा । एह राजधानी में तनि घूमतीं-फिरतीं तऽ जनम सवारथ हो जाइत । शहर के आभा आ महलन के भव्यता आवते घड़ी बुझाइल रहे बाकिर पीड़ा का चलते कुछ निमने ना लागत रहे । दरद दबाईं आकि गेठरी से ताक-झाँक

www.bhojpurisahityangan.com

करी ? अब ई हिलते-डुलते नइखन । परसो तऽ बड़ा दिकदिकावला पर माई बेटा का सोझा अइले । "भले राजदरबार से बोलाहट आई त धर फराइले जइहे", कहते आचार्या लवटल रही ।

आचार्य नशा में कुछ बरबरात बाड़न । कुछ बात त उनका मुँहे में मर जात बा त कुछ बात विकलांग बन के निकलता । कुछ बोइयामे से टकरा के लवट जात बा तइयो हम कोशिश करत बानी अब, सब बातन के एक साथे मिलाके समझे के आ फेरु कहे के- जंगल के घटना दूनू शिष्यन का बतावते राजपरिवार में हमरा दिसाई अविश्वास आ असंतोष के लहर उठ गइल रहे । रनिवास से लेके दरबार तकले हमरा शिक्षण कला पर अँगुरी उठवले रहे । केहू कहे जे ई असली विद्या चोरावत बाड़न । केहू कहे जे अपना लड़िका पर बेसी ध्यान देत बाड़न त केहू कहे जे चोरी छिपे दोसरो जगे पढ़ावत होइहें तबे नूँ पापजोनी में जनमल लड़िका पुण्यजोनी में जनमल लड़िकन के भर मुँह माटी उठवा देलक । सभे हमरा के सक का नजर से देखे लागल । राजपरिवार का आदमी के के कहो राजमहल के ईटा-ईटा जइसे हमरा पर संदेह करे लागल । ऊ दुनूं छात्र हमरा से मुँह फेर लेलन सऽ, इहाँ तकले जे हमरा लड़िका से हितई ले तूड़ देलन सऽ । आ ताकाताकी बन्द कऽ देले सऽ । हमरा बेटा का ई बात समुझ में आवे ना जे आखिर ई सब का हो रहल बा । मन आजिज हो गइल । बुझाइल जे अब नोकरी जाई, तब परिवार के का होई ? फेरु प्रतीज्ञा के का होई ? ऊ कघंन बनेचर हऽ हम तऽ जानतो नइखीं । बहुत पहिले एगो भील बालक आश्रम में आइल रहे जवना के हम विद्या देवे से मना कऽ देले रहनीं । ऊ हऽ आकि कवनो दोसर हऽ ! दुलर्भ आ दुरक्षेपन अस्त्रलाघव वाण कुत्ता पर कइसे चला देलक, जवन हमार गुरुजी सिखावते-सिखावते ना सीखा पवलन, अब हम रोज जीए मरे लगनी, भविष्य का रोग से आ वर्तमान का ईलाज से । आचार्य के बड़बड़ाइल जारी रहे ।

आश्रम में एक दिन साँझ बेरिया मुनादी एगो फरमान लेके आइल । बिना देरी कइले दरवार में हमरा पहुँचे के रहे । बस ! धर फराइले हम चल देहनी । बोलाहट सीधे मंत्रणा-कक्ष में रहे । मधिम

www.bhojpurisahityangan.com

रोशनी में राजपरिवार के प्रधान-प्रधान लोग लउकल । खुफिया प्रधान, न्यायपाल आउर दंडपाल सभे चुपचाप अपना-अपना आसन पर बइठल रहे । आउर दिन जइसन ना अभिवादन ना आसन, बस सीधा हमरा से सवाल पुछाए लागल । हमरो समुझत देरी ना लागल जे हम एक तरे से कठघरा में आ गइल बानी ।

हमरा सम्भले-सम्भले हमार नियोक्ता शरणदाता के सवाल उछलल- "फूलवारी का फूल से झड़बेरी के फूल आकर्षक, मनमोहक आ सुगन्धित हो जाय त जबाब के जिम्मेवारी केकर बनत बा ?"

"फूलवारी के, झरबेरी के आ कि मलहोरी के ।"

हम तुरत जबाब देले रहीं । "मलहोरी के"

एतना सुनते मंत्रणा-कक्ष के लोग पितामह भीष्म के जय हो ! पितामह भीष्म के जय हो, बोलल रहे । मंत्रणा-कक्ष में कुछ खुसुर-फुसुर भइल तले महामंत्री के सवाल लाठी लेखा गिरल-

कछुआ जल में रहेला । जले से भोजन लेला । नदी चाहे तालाब ओकर प्राण रक्षा करेला । ऊ आपन कुनबा बढ़ावे खातिर कछार पर अंडा देके सेई, ना कि जंगल में देके सेई, एमे ओकरा कवना सुभाव पर शक कइल जाव-

कृतज्ञता, कृतघ्नता आ कि धूर्त्तता ?

हम तुरत कहनीं 'धूर्त्तता' ।

एतना सुनते मंत्रणा-कक्ष के लोग महाज्ञानी विदुर के जय हो ! महाज्ञानी विदुर के जय हो !! बोलल रहे । हमरा उत्तर पर सभे एक साथे मुड़ी हिलवलक ।

राजसिंहासन पर बइठल राजा के सवाल घाटा घहरला जइसन आसमान फाड़ के आइल-

"गोएँरा खेत में जरूरत से ज्यादा बिया अगर जाम गइल त बढ़िया फसल खातिर किसान- सबके राखेला, सबके काटेला, ठावाँ-ठइयाँ बाछेला ।" - "ठावाँ ठईयाँ बाछेला" जबाब देले रहनी । सभे हस्तिनापुर महाराज धृतराष्ट्र के जय हो ! महाराज धृतराष्ट्रके जय हो !! कहके हगरा कावर सभे तकलक । सबका चेहरा पर एगो चमक रहे ।

www.bhojpurisahityangan.com

तुरुते न्यायपाल के प्रश्न तीर लेखा सनसनात आइल-

दूध परोसे वाला करछुल, दाल परोसे लागे तऽ एह काम में के नसाई ।

दूध, दाल, आ कि करछुल ? हम झट दे जबाब देले रहनी "दूध" बस,

फेरु जयकारा भइल ।

कृपाचार्य के जय ! कृपाचार्य के जय !!

शरीर का रक्षा खातिर शल्य-चिकित्सक घवाहिल अंग के निकाल देवेला ई क्रिया केकरा साथे न्याय कइलक ?

रोग, रोगी, आ कि पेशा का साथे । हम तपाक से 'पेशा' बतवनी ।

महर्षि व्यास का खुशी के ठेकाना ना रहे । मंत्रणाकक्ष के बिटोराइल लोग जोरदार जयकारा कइलक । सब लोग थपरी बजा-बजा के हमार मनोबल बढ़वलक । हम उहँई थथमाइल रहनी तले सब लोग आपुस में इशारा से बतियात मंत्रणागृह से निकल गइल । ई मंत्रणागृह अब हमार औकात बता देले रहे । अब हम समझ गइल रहीं जे राजपरिवार के आदेश सर आँख पर रख के निष्ठा से काम करत कवनो जबाबदेही ओढ़ला का बादे नौकरी सुरक्षित रही । भोर होते अर्जुन का साथे हम जंगल कावर चल देले र....ह....नी.....। कहते-कहते आचार्य सुत गइलन ।

बोइयाम में हम चुभुकी खा गइनी तब । आँखों देखी के स्वीकृति दोसर हम कइसे दे सकत रहनी ।

हूँ..... ऊ..... उ.....

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com

उन्नीस

आखिर हम हस्तिनापुर का राजदरबार में आइये गइनी ।

आचार्य बोइयाम सहिते एगो मंच पर हमरा के रख देले बाड़न । ई उनकर मजबूरी बा नाकि कौशल । मंत्रणागृह के माननीय लोग आउर ऊ, खुदे बूझ रहल बाड़न । हमरा के देखे खातिर लोग के सैलाब उमड़ल आवत बा । एह देखउटी में आम आ खास के भेद मेट गइल बा । हमहूँ पारदर्शी के मजा उठावत बानी आ लोग के चेहरो पढ़ लेत बानी । हमरा के देखला का बाद लोग आचार्यो के देख लेत बा । लोग के सवाली आ भुजाली नजर उनका के बेचैन कइले जात बा । इनका से केहू कुछ पूछो मत एह से सभा में ऊ अपना के भिरहगर देखावे के नाटक करत बाड़न । कबो सभागार का ऊपर-नीचे अरिया-परिया निरेखे लागत बाड़न त कबो मंत्रणा-गृह के माननीय लोग के देखे लागत बाड़न । कबो अपना आसन का अग...-बगल देखत बाड़न त कबो अपना हाथ के अंगुरी भा तरहथी में धनुष-वाण के घठा । मुँह मोड़ के ध्यान हटावे के अइसन चतुर गँव, वाह आचार्य, वाह ! माननीय लोग कावर ताक के हमरो कावर

www.bhojpurisahityangan.com

देख लेत बाड़न, फेरु ऊहे हरकत । अब त आसन से हड़बड़ाके उठ जात बाड़न फेरु अपने से बइठ जात बाड़न जइसे जिम्मेवारी बोलावत बा त स्वार्थ बइठा देत बा । एकर मतलब उनका भीतर केहू पीड़ा से रो रहल बा । कलप रहल बा । रहम के भीख माँगत बा । मगर मारेवाला, आउर कठकरेजी नियर हाथ चलावत बा । अंग-अंग तुरला का बादो नटी पर लात ध के संसरी तूड़े पर तुलल बा । एने आचार्य अन्तिम साँस लेवेवाला का गोहार के अनसुना कके सभा में अपना के भिरहगर देखावत बाड़न ।

हम मार खाएवाला आउर मारेवाला के देख रहल बानी । ऊ अबहियो रहम के भीख माँगत बा । उनकर अंग-अंग टूट गइल बा तबो नटी पर लात ध के संसरी तूड़े पर जे लागल बा, हम ओकरा के देख रहल बानी । कतना अनसुन आ भिरहगर बनब ए आचार्य ! हमरा बाद अर्जुन जनलें, भीम जनलें तहार औरत कृपी, तहार बेटा अश्वत्थामा जनलें आज हस्तिनापुर जनलक, काल्ह दुनिया-संसार जानी । जेकरा के मारल जा रहल बा ऊ गुरुता हवे, ज मारत बा ऊ आचार्य द्रोण हवे, जे रहम के भीख माँगत बा ऊ आस्था हवें, जवन अंग टूट के झूल गइल बा श्रद्धा, भक्ति आउर विश्वास हवे । नटी समर्पण आ लात धोखा हवे । पीड़ा के रोवाई घटना के सच्चाई हवे । एह सच्चाई के तू कबले ना सुनबऽ आचार्य । ईहाँ अइला का बाद तहार असली रूप चिन्हाइल हवे । प्रदर्शनी लगा के लोग के ध्यान एहसे कबले हटवले रहबऽ । बरबस हमरो मुँह से निकल गइल-निदर्यी, निर्लज्ज, स्वार्थी धोखाबाज द्रोण ! तू एके छल से मूलबासी का पाँचो बल के सत्यानाश कऽ देलऽ, खीस आ जोश में हमार उपरला हिस्सा बोइयाम में रखल शराब से ऊपर उठ गईलऽ । हमार ई गतिविधि आचार्य का आँखि से छुप ना सकल । देखेवाला कुछ लोग के तऽ मुँह बवा गइल ।

अब हम इनका के कइसे बताईं जे जहिया हमार गोसइत हमरा के अपना से अलग कइलन ओही दिन एह दुनिया के न्यायशास्त्र इनका नाम से आ पेशा से गुरु शब्द हटा लेलक । अब तू द्रोण बाड़ऽ ! अब तू आचार्य बाड़ऽ !! दोबारा एह संसार में जे तहरा के गुरु कहीं ऊ तहार दोसरका छद्मरूप मानल जाई । स्वयंसिद्ध प्रकृतिपुत्र हमरा गोसइत

www.bhojpurisahityangan.com

एकलव्य के अपना बात में कऽ लेलऽ एकर कवनो दु:ख नइखे । संतुलित निर्माण तत्व के खोंढ़ कऽ देलऽ एकरो दु:ख नइखे । बिना खून-खराबा आ शांतिप्रिय लड़ाई के मानवता से छीन लेलऽ, एकरो दु:ख नइखे । अखण्ड मगध सम्राज्य के सपना तूड़ देलऽ एकरो दु:ख नइखे । मगध सम्राट जरासंध का सोच पर पानी फेर देल, एकरो दु:ख नइखे । गुरुता का बलिवेदी पर सरधा भक्ति आ विश्वास के बलि चढ़ा देलऽ, एकरो दु:ख नइखे । आवेवाला समय में मूलवासी बनाम बाहरी का लड़ाई में मूलवासी हार जइहें एकरो दु:ख नइखे, हँ दु:ख बा त तहरा गुरु के बाना ओढ़ला के । एही बाना का आड़ में त हमरा के ईहाँ लेआके प्रदर्शनी लगवले बाड़ऽ । कवनो दिसाईं तहार ई काम शिकारी का शिकार कइला से अलग नइखे जवन हम ईहाँ आके अबगे बूझनी हँ । *स्वार्थ साधे का साथे बरवारगी के परिपाटी भला कब ले चली ?*

हूँ..... ऊ..... उ.....ु.....



www.bhojpurisahityangan.com

बीस

लोग के बेचैनी बढ़ल जात रहे । बुझाए जे खुदे सभागार बोल पड़ी । हस्तिनापुर महाराज धृतराष्ट्र सिंहासन छोड़ के अब खड़ा होखे चाहत बाड़न । शेष माननीय सावधान हो गइले । अब जन सैलाब जहाँ बा उहँई से राजा के बात सुने खातिर ठहर गइल बा । आचार्य के सारा शिष्य आमने-सामने खड़ा हो गइल बाड़े । केहू के चेहरा चमकत बा त केहू के नथुना फूलत-पचकत बा । हीत-कुटुम्ब आउर पड़ोसी राज के राजकुमार, फेरु चारो अलंग का आश्रम से बिटोराइल शिष्यन में उत्सुकता बा, कौतूहल बा आ आपन-आपन एह देखउटी कार्यक्रम पर प्रतिक्रिया आ प्रतिबाद बा । उनका के देखे-सुने खातिर लोग उचक-उचक जाता । हमहूँ महाराज के देखे खातिर तनी उचकनी ।

अरे ! ई तऽ दुनूँ आँख से आन्हर बाड़न बाकिर रूआब कहे लाएक नइखे । हैबत अइसन जे हवा थम गइल बा, बोल रहल बाड़न-

"गुरुदक्षिणा के दर्शन लाभ लेवेवाला माननीय, कुल, जाति आ पेशा के श्रेष्ठजन, हीत-कुटुम्ब आ पड़ोसी राज्य के प्रतिनिधि, पछिमवाला

www.bhojpurisahityangan.com

संदीपनी आश्रम, पूरबवाला धौम्य आश्रम, दखिनवाला गालव आश्रम आउर उत्तरवाला वृहस्पति आश्रम के गुरुभक्त अन्तेवासी, आउर हस्तिनापुर के आम आ खास जन सब केहू के एह सभागार में स्वागत बा ।''

''जवन लीला देखे सब लोग आइल बा, ई आचार्य द्रोण के कारामात हऽ । बोइयाम में जवन अंगूठा सबका लउकत बा ई कवनो साधारण अंगूठा ना हऽ । आचार्य के प्रिय शिष्य एकलव्य के ई गुरुदक्षिणा हऽ । एह धरती पर अइसन गुरुदक्षिणा देवेवाला ना पहिले रहे ना अभी बा आ ना आगे होखी अइसन हमरा लागत बा । गुरुचरण में अपना के सदा सर्वदा खातिर सउँपल केहू एकलव्य से सीखो जे सब कुछ लुटा के शिष्य के गरिमा बचा लेलक । आज से इनकर नाम आउर कहानी अमर हो गइल । हस्तिनापुर के एकबाल बढ़ावे में आचार्य जी-जान से लागल बाड़न । दुइये-चार दिन बाद इनकर आउर कारनामा रंगभूमि में देखे के मिली । फेरु ऊ दिन दूर नइखे जब पंचाल नरेश द्रुपद के पईंचा ई ना फेर दीहे । सभा में खुसुर-फुसुर बढ़े लागल रहे । महाराज चकित बाड़न जे एतना बात कहला का बादो जयकारा काहे ना भइल । ऊ कुछ देर चुप रहके सभा के दसा-दिसा जाने खातिर विदुर से पुछले- महाज्ञानी विदुर ! ''सभा में कुछ फुसुर-फाँय होता । आज पहिले ओहिले हस्तिनापुर का सभा में उत्साह, संदेह का सोझा मउरल लागता । तू एकर कारण बतावऽ ?''

महाराज धृतराष्ट्र के आदेश पाके महामंत्री विदुर खड़ा होके सभा में बोले लगले ।

''हे राजन !

जे समस्या से आँख फेरल सउदाबाज के निशानी ह । छोहगर राजा, महाराज शांतनु प्रजा के ई बात बता गइल बानी । आचार्य मौन बाड़न, कवनो दोसरा विचार में डूबला खानी भा जवन अब होई ओकरा अनेसा से ।

हे महाराज !

गुरुदक्षिणा के प्रदर्शन आचार्य हस्तिनापुर का सभागार में कर रहल बाड़न एसे एह राज्य का कुछ पूछे के इनका से अधिकार बनत बा

www.bhojpurisahityangan.com

सभा में हँ ! हँ के आवाज गूंज गइल ।

उमेद बा मति अनुसार सवालन के जबाब आचार्य दीहें ।

1. आचार्य ! कव दिन, कव मौसम आ कव साल भील कुमार एकलव्य के वाणविद्या सिखवलन ? अगर सिखवलन तऽ गुरुदक्षिणा का दिसाई याचन आ अधिकार पर खुदे प्रकाश डालस । सवाल राजपरिवार कावर से आइल बा ।

2. गुरुदक्षिणा जीवन जीए के भा परिवार पाले के एगो जरिया हवे जवना के खुद शिष्य भा उनकर माता-पिता मांगला से चाहे अपने आप दे देवेला । आचार्य हई अंगूठा लेके का करिहे ? सब प्रजा जाने के चाहत बा, महाराज ।

3. कवनो दक्षिणा लेवे का पहिले संकल्प करावल जाला । केहू के साक्षी बनाके संकल्प दियाला, एह गुरुदक्षिणा के संकल्प साक्षी आचार्य केकरा के बनवलन ? हस्तिनापुर के पुरोहित सब जाने के चाहत बाड़न ।

4. कवना घटना से विकल होके आचार्य केकरा साथे जंगल में गइले ? दोसरो शिष्य मंडली जाने के चाहत बा महाराज ।

5. अइसन गुरुदक्षिणा से आचार्य के कवन मनसा पूरन भइल हवे ? पड़ोसी राज्य के प्रतिनिधि जाने के चाहत बाड़न ।

6. जब एकलव्य सबसे प्रिय, आज्ञाकारी आ समर्पित शिष्य बाड़न तऽ आचार्य एह प्रदर्शन सभा में प्रमाण खातिर उनका के काहे ना बोलवलन हऽ ? आउर आश्रम से आइल शिष्य सब के सवाल बा ।

7. चारो दिशा का आश्रम से आइल आचार्य आ आचार्य प्रतिनिधि, आचार्य द्रोण से जाने के चाहत बा लोग जे गुरुदक्षिणा का बदला में अब अंग-दान चाहे अंगभंग के चालान लागू कऽ दियाव ? एकरा मान्यता पर आचार्य सभा के बतावस ।

आचार्य एकदम चुप बाड़न । एकटक ऊ अब हमरा कावर ताक रहल बाड़न । माननीय लोग उनकर जबाब सुने खातिर आतुर बा । सभा में खुसुर-फुसुर चालू हो गइल । केहू-केहू के आवाज साफे सुनाई देवे लागल, सातो सवालन के जबाब देस । सभा के सब साफ-साफ

www.bhojpurisahityangan.com

बतावस । हँ बतावस ! हँ हँ बतावस !! आचार्य अबहियो हमरे कावर देख रहल बाड़न, एकदम चुपचाप जइसे काठ मार देले होखे । शोरगुल बढ़ल जात रहे । देखते-देखते सभागार दू भाग में बँट गइल । काहे जबाब देस ? काहे जबाब देस !! आचार्य काहे बतावस ! काहे बतावस ?

चारो अलंग हल्ला गुल्ला, जबाब देस ! ना दीहे । जबाब देस ! ना दीहे !! सँउसे सभागार में अफरा-तफरी । बइठल रहे से खड़ा हो गइल । खड़ा रहे से दल में शामिल हो गइल । अब कौरव-पाण्डव साफ बुझाए लगलें, दू दल । जेकरा के देखऽ ऊहे रोष में । एक दोसरा पर आँख तरेरत लोग सभागार से निकले लागल । गुप्त राह से माननीय लोग एक-एक करके अलोपित होखे लागल । पत्थर बनल आचार्य अबहियों हमरे कावर एकटक निहारत बाड़न जबकि सभागार खाली-पड़ल बा । ऊ बुदबुदइले ।

"जंगल में कलह अर्जुन भीम से, परिवार में कलह पत्नी-पुत्र कृपी आ अश्वस्थामा से, सभागार में कलह कौरव-पाण्डव से । शास्त्र सम्मत ई काम पीठ पोंछे का बदला में ओपर बमउर उखाड़ देलक, ई का लछन बा ?" हमरा ओर इशारा करत कहलें-

"रसोइया घर से उजर रोटी भले मिल जाव, ओकरा ठाठ कोरो के करिखा कहियो ना छूटे ।"

अब हम आचार्य के कइसे मन पारीं जे पाला गहला से संतुलन ना बिगड़ेला, भाई-भाई का झगड़ा ना होला । असंतुलन आ झगड़ा का जड़ में झूठ, छल, बेइमानी आउर शोषण जइसन पय पहिले होला ।

हूँ.... हँऽ..... ऽ..... हँ.....ऽ ।

हूँ..... ऊ..... उ.....

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com

इक्कीस

हमार उचुकल आचार्य के बेचैन कइले जात रहे । ऊ बार-बार सोचस जब बोइयाम ना हिलल ना डुलल तऽ ई अंगूठा उचुकल काहे ? ई रहस्य जाने के ऊ जतने जतन करत रहस ओतने उनका में भय, अचरज, संदेह आउर अपसगुन के अनेसा घर कइले जात रहे । अपना बदनामी, बेचैनी, बेइज्जती आउर कलह के जड़ अब ऊ हमरे के बूझे लगले । आजो कुछ बलत्कारी अपना लत के ना, नारी का पहनावा के कोसेला । ई एगो मनोरोग हऽ जब मनसा ना पूरे तब करम ना, कमजोर ढूढ़ाए लागेला । आवेवाला समय में कवनो दोसरो कलंक मत लाग जाव एह अनेसा से ऊ काँप गइले । हमरा के अब साथे राखल त जइसे कलंक के मोटरी ढोअला जइसन हो गइल । हमरा कावर ताकल, अब ऊ तन-मन के नसाइल बुझे लगलन, छुअल त नास के नेवता । ईहे आचार्य हमरा के पावे खातिर कवन-कवन धरीछन ना धइले । कवन-कवन डरार ना तूड़लें ? हमरा गोसइत का बाजू से हमरा के छटकाइये के दम लेले । अब साथे बानी तऽ दम घुटत बा ?

www.bhojpurisahityangan.com

सभागार तऽ इहे नूँ सिद्ध कइलक जे कर्त्ता के नेत, नियत आ उपयोगिता समझला का बादे ओकरा काम के नीमन कहे के चाहीं ।

उमेद के अंजुरी विच्छेद से झंझरी हो जाला ।

अब ऊ हमरा से आपन पिंड छोड़ावे के उत्जोग बइठावे लगले । अब का रहे, निसहर बनल, अगुताइल आचार्य एक दिन निसबद रात में सबका से आँख बचावत हमरा के लेले ईहाँ आ गइले ।

हूँ..... ।

ई..... मुरघटिया त हवे ना । ई तऽ कूँड़ खेत हवे ।

दूर से आवाज आइल..... ।

कुरुक्षेत्र ! कुरुक्षेत्र !! कुरुक्षेत्र !!!

हमरा तब बुझाइल जे जगहो बोलेला राज राखेला, राज खोलेला । कवनो जगहे से उठल गोड़ धरती से आसमान तक नाप देला तऽ कवनो जगहे से निकलल आवाज इनकलाबी बन जाला ।

एक जगहा जियते मुअवलें तऽ
दोसरका जगहा जियते दफनवलें ।

स्थापित पद अपना पुछ पहचान आ पेट का दिसाई दिव्यता के दरमसे में देरी ना करे ।

हूँ..... ।

"जात-गोतिया आ हीत-मीत का साथे लोग मुरघटिया में देह दफनावेला, ई के हऽ जे एह निसबद रात में एकसरुआ आके बस एगो हाथ के अंगूठा दफनावत बा, उहो कूँड़ खेत में ?"

हे धरती भइया ! हमार सारा वृतांत सुनला का बाद उमेद बा जे तहरा अपना एह सवाल के जबाब अब मिल गइल होई ।

हूँ..... ।

हूँ..... ऊ..... उ.....ु.....

❖❖❖

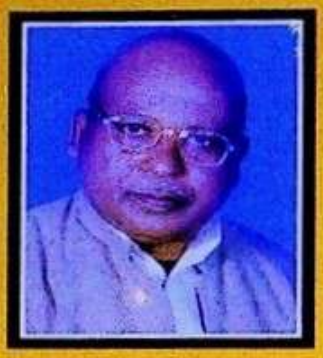
धरती मइया का एह प्रश्न के उत्तर द्रोण काहे ना दे पवलें, जाने खातिर पढ़ीं उपन्यास के दूसरका भाग **"पातालवाणी"**

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

कवि-परिचय



नाम : **मूंगालाल शास्त्री**
शिक्षा : स्नातक कला प्रशिक्षित
जन्म स्थल : ग्राम+पत्रा०- पिरौटा
भाया : गौरा, थाना- बनियापुर
जिला : छपरा (बिहार)

संगठनात्मक कार्य–

(1) अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन-सदस्य
(2) सारण जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन
(3) भोजपुरी भारती साहित्यिक सांस्कृतिक मंच ढोढ़ स्थान-अध्यक्ष
(4) आकाशवाणी पटना- कवि, लेखक एवं वार्त्ताकार
(5) बिहार अराजपत्रित प्रारम्भिक शिक्षक संघ मढ़ौरा-अध्यक्ष

सम्मान–
(1) डॉ० उमाकान्त वर्मा सम्मान
(2) भोजपुरी भारती साहित्यिक सांस्कृतिक सम्मान
(3) ईला दयाल साहित्यकार सम्मान पटना

प्रकाशित रचना– 1. माई के ममता (एकांकी), 2. बिहान (सर्वशिक्षा गीत), 3. बैरिन बेयार (कविता गीत-संग्रह), 4. एकलव्य (प्रबन्ध-काव्य), 5. भिनुसार हो गइल (गीत-संग्रह), 6. हम गुरुदक्षिणा हईं।

सम्पर्क : 9431284018

प्रकाशक
भोजपुरी भारती
ढोढ़स्थान, जनता बाजार (सारण)